ISBN-978-93-341-3263-2
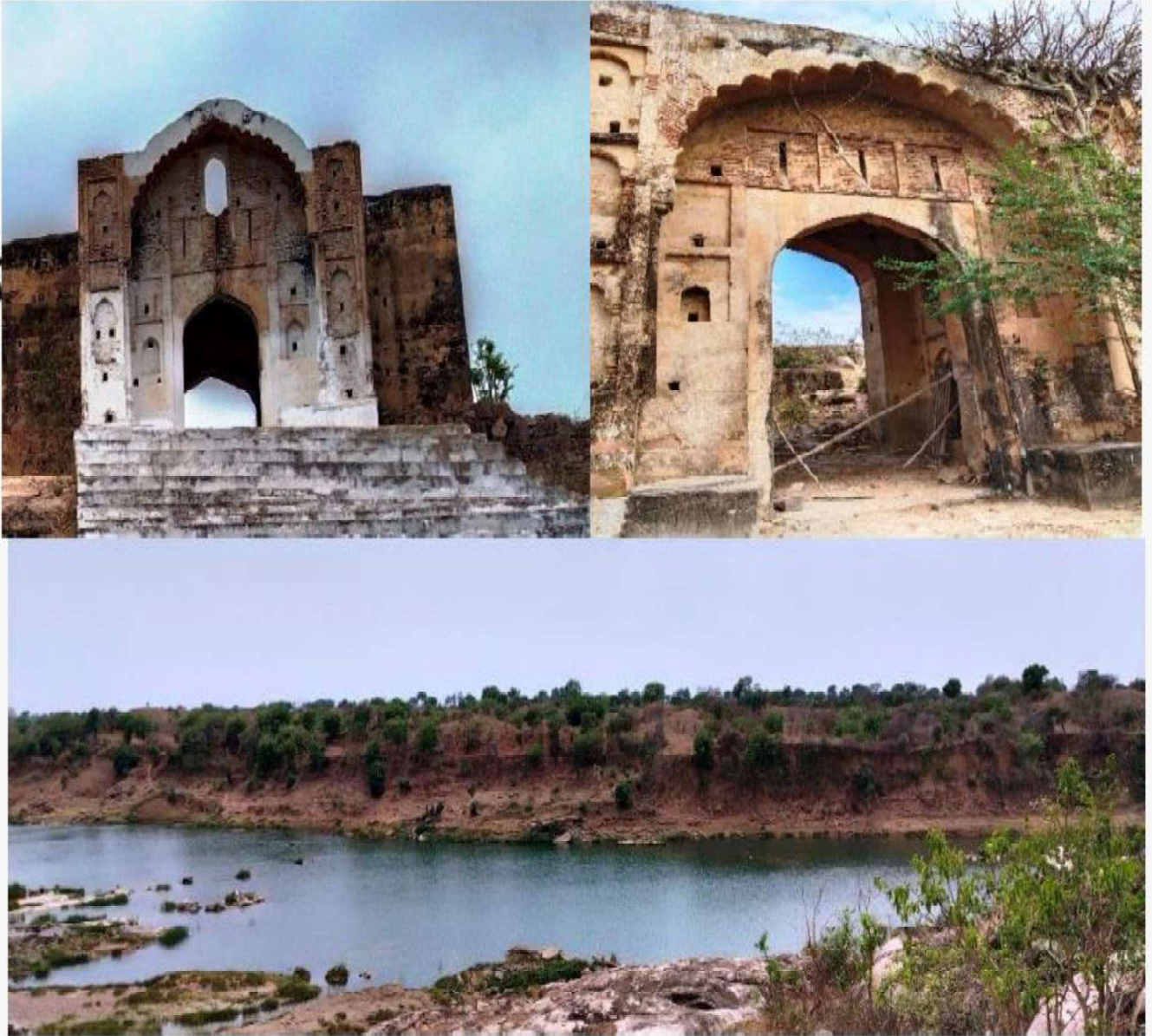
रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों मैं जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल
तेज प्रताप
कोमल सिंह

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र का इतिहास, उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा। वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उसे काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं। यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधरा तो हम अपनी ऐतिहासिक विरासतों को खो देंगे। अतः आवश्यकता है कि हम सभी अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है की समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुंच चुकी ऐतिहासिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाये तथा भविष्य के लिए इन्हें संरक्षित किया जाए। यह तभी संभव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

एम..एड. की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत मैंने अतर्रा पी. जी. कॉलेज, अतर्रा में प्रवेश लिया। यहां पर एम.एड. प्रथम वर्ष में डॉक्टर राजीव अग्रवाल जी के द्वारा पढ़ाई जाने वाले विषय शैक्षिक अनुसंधान के प्रैक्टिकल में मुझे रनगढ़ दुर्ग भ्रमण का प्रोजेक्ट कार्य मिला। बचपन से ही मुझे पुरातात्विक स्थलों, ऐतिहासिक तथा पौराणिक महत्व वाली विरासतों को घूमने का शौक रहा है। अतः जब मैं आश्रम का भ्रमण किया, तब मुझे एक अलौकिक आनंद की प्राप्ति हुई। सर जी के साथ कक्षा में चर्चा के दौरान मुझे रनगढ़ दुर्ग के विषय में जानकारी मिली, जिसे मैं अभी तक अनभिज्ञ था तब मुझे इस बात का एहसास हुआ कि यदि मैं अपने इतने वर्षों के जीवन में अपने शहर की महत्वपूर्ण धरोहर को ही नहीं जाना तो फिर मेरा शिक्षण कार्य अधूरा ही है। अतः मैं अपने मन में थाना कि मुझे इस विषय में शोधकर कर इन विरासतों को प्रकाश में लाना होगा जिससे मेरे जैसे अन्य व्यक्ति जिसे अपने क्षेत्र की ऐतिहासिक विरासतों के विषय में जानकारी नहीं है, जागरूक हो सके। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने शोध कार्य के रूप में इस विषय को चुना।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का शीर्षक "रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन" है। इस लघु शोध प्रबंध को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है–

प्रथम अध्याय में उच्च शिक्षा की समस्याएं, अध्ययन के उद्देश्य, चर, परिकल्पनाएं, शोध परिसीमांकन एवं अध्ययन के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में जागरूकता एवं ऐतिहासिक विरासतों से संबंधित कतिपय शोध कार्य की समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

तृतीय अध्याय में रनगढ़ दुर्ग के ऐतिहासिक कथानक, अवस्थिति, जलीय दुर्ग, प्रवेश द्वार, गुप्त द्वार, रनगढ़ दुर्ग के भग्नावशेष, भगवान शिव की भव्य मूर्ति , **अष्टधातु की तोप** सुरक्षा चौकी, बारदरी अथवा राजा की बैठक, रंग महल, गौरइयादाई मंदिर तथा झिन्ना बाबा का सचित्र वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि, शोध अभिकल्प, लक्षण प्रतिदर्श , जनपद एवं संस्थाओं का चयन, शोध उपकरण, परीक्षण का प्रशासन, फालाकन एवं सांख्यिकी प्रवृत्तियों का सा विस्तार वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय मैं प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वाचन प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन की सीमाएं एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबंध पर आधारित है। शोधकार्य के प्रशासन से वैज्ञानिक ज्ञान भंडार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसंधानों को प्रेरणा मिलती है किसी भी शोधकार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक की जन सामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है या पुस्तक विद्यालय से संबंधित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है।हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियां होना स्वाभाविक है अतः यदि अनुभवी विद्तगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यंत आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

राजीव अग्रवाल

तेज प्रताप

कोमल सिंह

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

- ❖शिक्षा विकास की प्रक्रिया
- ❖ भारत में शिक्षा के स्तर
- ❖ भारत में उच्च शिक्षा का विकास
- ❖उच्च शिक्षा की समस्याएँ
- ❖समस्या का प्रदुर्भाव
- ❖समस्या कथन
- ❖अध्ययन समस्या का औचित्य
- ❖समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या
- ❖अध्ययन के उद्देश्य
- ❖अध्ययन के चर
- ❖अध्ययन की परिकल्पनाएँ
- ❖अध्ययन का परिसीमांकन
- ❖अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

अध्याय प्रथम
अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

इक्कीसवीं शताब्दी के आधुनिक भूमण्डलीय युग में किसी भी राष्ट्र के लिए उसके भौतिक एवं मानव संसाधनों का अत्यन्त महत्व है। वस्तुत: किसी राष्ट्र के भौतिक एवं मानव संसाधन ही उसे अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा करने के लिए सक्षम बनाते हैं। भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित एवं प्रकृतिजन्य होने के कारण आज के युग में मानव संसाधनों के विकास पर अधिक जोर दिया जाने लगा है। निःसन्देह किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने में समर्थ हों। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लांघा है वरन् अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती हैं तथा इन शक्तियों के प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है। यदि इन शक्तियों को प्रस्फुटित होने के पर्याप्त अवसर नहीं प्राप्त होते हैं, तो मानव का विकास अधूरा रह जाता है तथा वह अपनी अन्तर्निहित परन्तु अप्रस्फुटित योग्यताओं का लाभ उठाने से वञ्चित रह जाता है। निःसन्देह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावी विधा है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान, बोध व कौशल में वृद्धि की जाती है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा की यह प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्युपर्यन्त किसी न किसी रूप में एक सतत प्रक्रिया के रूप में सदैव चलती रहती है। प्रारम्भ में बालक अपने माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्यों तथा पड़ोसियों आदि से अनौपचारिक ढंग से शिक्षा प्राप्त करता है। 5-6 वर्ष की आयु होने पर बालक की शिक्षा व्यवस्था औपचारिक शिक्षण संस्थाओं में सुनियोजित ढंग से प्रारम्भ हो जाती है। विद्यालय में दी जाने वाली औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ बालक परिवार, समाज, धर्म, जनसंचार, खेलकूद आदि अनेक औपचारिकेत्तर माध्यमों से भी कुछ न कुछ सीखता रहता है। औपचारिक शिक्षा की समाप्ति के उपरान्त भी सीखने-सिखाने का क्रम किसी न किसी रूप में अनवरत चलता रहता है।

1.2 भारत में शिक्षा के स्तर

भारत में सबसे ज्यादा औपचारिक शिक्षा प्रचलित है एवं अधिकांश शिक्षार्थी इसी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। वर्तमान में भारत में औपचारिक शिक्षा के तीन स्तर हैं—

1.2.1 प्राथमिक शिक्षा

1.2.2 माध्यमिक शिक्षा

1.2.3 उच्च शिक्षा

1.2.1 प्राथमिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है। प्राथमिक शब्द का सामान्य अर्थ है 'प्रारम्भिक' इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य मुख्य तथा आधारभूत शिक्षा से है। प्रारम्भिक स्तर पर सम्पन्न होने के कारण

प्राथमिक शिक्षा, सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। इसे मुख्य शिक्षा इसलिए कहते हैं क्योंकि यह आगे की शिक्षा की नींव होती है। यदि नींव मजबूत होती है तो बच्चों की आगे की शिक्षा सुचारु रूप से चलती है।

प्राथमिक शिक्षा साधारणतया: 10-14 वर्ष तक की आयु पूरी होने तक चलती है। प्राथमिक शिक्षा को तीन भागों में विभाजित किया गया है—

(i) पूर्व प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 1 से पूर्व यथा (नर्सरी एवं प्ले ग्रुप)

(ii) प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 1 से 5

(iii) उच्च प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 6 से 8

1.2.2 माध्यमिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के दूसरे स्तर को माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है। माध्यमिक शब्द का अर्थ है— मध्य की। माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। यह प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। यह ऐसी शिक्षा है, जो किशोर बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए दिशा प्रदान करती है। माध्यमिक शिक्षा ही उच्च शिक्षा का आधार है।

भारत में कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा कहते हैं जो प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त 16-18 वर्ष की आयु तक चलती है।

1.2.3 उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा का अर्थ है— सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष, विषद तथा सूक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है, जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों, लिबरल आर्ट कॉलेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है, जो प्राय: ऐच्छिक (non-compulsory) होता है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परास्नातक (Postgraduate education) एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं।

भारत में उच्च शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 12 के उपरान्त दी जाने वाली शिक्षा से है। यह शिक्षा महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर दी जाती है।

1.3 भारत में उच्च शिक्षा का विकास

उच्च शिक्षा के विकास से तात्पर्य समय-समय पर इसमें होने वाली मात्रात्मक प्रगति एवं गुणात्मक उन्नयन से है। भारतीय शिक्षा के इतिहास का अध्ययन तीन कालों के अन्तर्गत किया जाता है— प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल। अध्ययन की दृष्टि से आधुनिक काल को भी प्रायः 2 उपकालों में विभाजित किया जाता है— ब्रिटिश शासन काल और स्वातन्त्र्योत्तर काल।

1.3.1 प्राचीन काल में उच्च शिक्षा का विकास

वैदिक काल में उच्च शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल में होती थी। 8 से 12 वर्ष की आयु पर बच्चों का गुरुकुल में प्रवेश होता था। गुरुकुल में प्रवेश के समय बच्चों का उपनयन संस्कार होता था, जिसके बाद उनकी शिक्षा प्रारम्भ होती थी। वैदिक कालीन उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है— सामान्य और विशिष्ट। इस काल में उच्च स्तर पर संस्कृत भाषा, व्याकरण, धर्म एवं नीति शास्त्र की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती थी। इसके अतिरिक्त उन्हें नित्य व्यायाम, गुरुकुल की व्यवस्था और गुरु सेवा करनी होती थी। इसे सामान्य शिक्षा की संज्ञा दी जाती थी। प्रारम्भिक वैदिक काल में वैदिक साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों, कर्मकाण्ड, ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्विज्ञान, सैनिक शिक्षा, कृषि, पशुपालन, कला-कौशल, राजनीतिशास्त्र, भूगर्भशास्त्र

और प्राणीशास्त्र की शिक्षा ऐच्छिक थी। उत्तर वैदिक काल में उच्च शिक्षा की इस पाठ्यचर्या में अनेक अन्य विषय सम्मिलित किए गए जैसे— इतिहास, पुराण, नक्षत्र विद्या, न्यायशास्त्र, अर्थशास्त्र, देव विद्या, ब्रह्म विद्या और भूत विद्या। इसे विशेष शिक्षा की संज्ञा दी जा सकती है। इस काल में तीर्थ स्थान धर्म प्रचार के केन्द्र होने के साथ-साथ उच्च शिक्षा के केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। बड़े-बड़े नगरों में तक्षशिला, पाटलिपुत्र, मिथिला, कन्नौज, कल्याणी, प्रयाग, काशी, अयोध्या, उज्जैन, नासिक, कर्नाटक और कांची उस समय के मुख्य उच्च शिक्षा के केन्द्र थे।

बौद्ध काल में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा होती थी और योग्य छात्रों को उच्च शिक्षा में प्रवेश दिया जाता था। यह शिक्षा सामान्यतः12 वर्ष की आयु पर शुरू होती थी और 20–25 वर्ष की आयु तक चलती थी। इस अवधि में छात्रों को सर्वप्रथम व्याकरण, धर्म, ज्योतिष, आयुर्विज्ञान और दर्शन का सामान्य ज्ञान कराया जाता था और उसके बाद विशिष्ट शिक्षा शुरू की जाती थी। विशिष्ट शिक्षा की पाठ्यचर्या में पाली, प्राकृत और संस्कृत भाषा एवं इन भाषाओं के व्याकरण व साहित्य, खगोलशास्त्र, नक्षत्रशास्त्र, न्यायशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, कला (चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत), कौशल (कताई, बुनाई रंगाई आदि), व्यवसाय (कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य आदि), भवन निर्माण विज्ञान, आयुर्विज्ञान, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, वैदिक धर्म, ईश्वर शास्त्र, तर्क, दर्शन और ज्योतिष इन सभी विषयों एवं क्रियाओं को स्थान दिया गया था। बौद्ध काल में तक्षशिला, नालन्दा, वल्लभी और विक्रमशिला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के विश्वविख्यात केन्द्र थे।

1.3.2 मध्यकाल में उच्च शिक्षा का विकास

मध्यकाल में मुसलमान शासकों के शासनकाल में एक नई शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ जिसे मुस्लिम शिक्षा प्रणाली कहते हैं। मध्यकाल में उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी। इस शिक्षा प्रणाली में उच्च स्तर की शिक्षा का पाठ्यक्रम अधिक विस्तृत था। इस स्तर की पाठ्यचर्चा को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है— लौकिक और धार्मिक। लौकिक पाठ्यचर्या में अरबी तथा फारसी भाषाएँ एवं उनके साहित्य, अंकगणित ज्यामिति, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, नीति शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, इस्लामी कानून, यूनानी चिकित्सा और विभिन्न कला-कौशलों एवं व्यवसायों की शिक्षा को स्थान दिया गया था। धार्मिक पाठ्यचर्या में कुरान शरीफ, इस्लामी साहित्य, इस्लामी इतिहास, सूफी साहित्य और शरीयत को स्थान दिया गया था। मध्यकाल में दिल्ली, आगरा, फिरोजाबाद, बदायूँ, फतेहपुर सीकरी, जौनपुर, बीदर एवं मालवा आदि नगरों में उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्रों का विकास हुआ।

1.3.3 आधुनिक काल में उच्च शिक्षा का विकास

अध्ययन की दृष्टि से आधुनिक काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है—

(i) ब्रिटिश कालीन शासन में उच्च शिक्षा का विकास

(ii) स्वातन्त्र्योत्तर काल में उच्च शिक्षा का विकास

1.3.3.1 ब्रिटिश कालीन शासन में उच्च शिक्षा का विकास

ब्रिटिश काल में ईसाई मिशनरियों ने सर्वप्रथम शिक्षा के विकास का प्रयत्न किया परन्तु उनके द्वारा ईसाई धर्म की शिक्षा पर अधिक बल दिया गया। बाद में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अपने व्यापारिक और शासन दोनों क्षेत्रों में कनिष्ठ पदों पर कार्य करने के लिए अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयों की आवश्यकता हुई, जिस कारण उन्होंने अपनी शिक्षा नीति में परिवर्तन किया और उच्च शिक्षा की संस्थाएँ खोलना शुरू की। कम्पनी ने 1781 में कलकत्ता मदरसा, 1791 में बनारस संस्कृत कॉलेज, 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। 1854 में आए वुड के घोषणा पत्र में घोषणा की गई कि भारत में लन्दन विश्वविद्यालय के आदर्श पर कोलकाता और मुम्बई में विश्वविद्यालय स्थापित किए जाएंगे और इसके बाद आवश्यकतानुसार मद्रास और अन्य स्थानों पर भी विश्वविद्यालय स्थापित किए जाएंगे। इन विश्वविद्यालयों में सीनेट का गठन किया जाएगा और योग्य एवं अनुभवी

कुलपति एवं प्राध्यापक नियुक्त किए जाएंगे। इन विश्वविद्यालयों में प्राच्य एवं पाश्चात्य भाषा एवं साहित्य, विधि तथा इन्जीनियरिंग की उच्च शिक्षा की विशेष व्यवस्था की जाएगी। साथ ही महाविद्यालयों को इनसे सम्बद्ध किया जाएगा। ये विश्वविद्यालय अपने क्षेत्र के महाविद्यालयों को सम्बद्धता प्रदान करेंगे, उन पर नियन्त्रण रखेंगे, उनके छात्रों की परीक्षा लेंगे और उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रदान करेंगे।

1857 की क्रान्ति के बाद भारत का शासन सीधे ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ गया और शिक्षा सम्बन्धी सारे निर्णय ब्रिटिश सरकार द्वारा लिए जाने लगे। 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) का गठन हुआ। इस आयोग ने सरकार को उच्च शिक्षा का भार भारतीय जनता पर ही छोड़ने का सुझाव दिया। आयोग ने राजकीय महाविद्यालय केवल उन्हीं स्थानों पर खोले जाने का सुझाव दिया जहाँ जनता इन्हें खोलने में असमर्थ हो और जहाँ इनकी माँग हो। आयोग ने उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या को व्यापक बनाने का भी सुझाव दिया जिससे छात्र अपनी रूचि के विषयों का चुनाव कर सकें। 1904 में लॉर्ड कर्जन ने शिक्षा नीतिकी घोषणा की। उन्होंने उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में नए विश्वविद्यालयों को खोलने तथा उनके स्तर को ऊँचा उठाने का सुझाव दिया। इसी समय राष्ट्रीय नेताओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू किया एवं शिक्षा के क्षेत्र में कई संस्थाओं की स्थापना की जिसमें दयानन्द सरस्वती द्वारा 'दयानन्द वैदिक कॉलेज' एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा शान्तिनिकेतन में 'ब्रह्मचर्य आश्रम'(जिसे आज 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' के रूप में जाना जाता है) उल्लेखनीय है। 1944 में ब्रिटिश सरकार ने पहली बार एक दीर्घकालीन (40 वर्ष) शिक्षा योजना तैयार की। इसे सार्जेण्ट योजना,1944के नाम से जाना जाता है। इस आयोग ने उच्च शिक्षा में बड़ा परिवर्तन किया और इण्टरमीडिएट की कक्षाएं विश्वविद्यालयों से हटा करके माध्यमिक शिक्षा से जोड़ दी और स्नातक के पाठ्यक्रम को तीन वर्षीय कर दिया। निर्धन छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की गयी तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गयी।

1.3.3.2 स्वातन्त्र्योत्तर काल मेंउच्च शिक्षा का विकास

15 अगस्त, 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। हमने अपने राष्ट्र के पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में कुछ अपने ढंग से सोचना शुरू किया। हर क्षेत्र में परिवर्तन और सुधार की प्रक्रिया आरम्भ हुई, शिक्षा के क्षेत्र में भी। सबसे पहले हमारा ध्यान गया तत्कालीन उच्च शिक्षा पर। उस समय यह सैद्धान्तिक अधिक और व्यावहारिक कम थी। इसका स्तर भी अन्य देशों की तुलना में नीचा था। अतः भारत में उच्च शिक्षा के विकास हेतु भारत सरकार ने 4 नवम्बर, 1948 को डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की नियुक्ति की। यह स्वतन्त्र भारत का सबसे पहला शिक्षा आयोग था। इस आयोग ने उच्च शिक्षा के विकास हेतु विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किए। आयोग के सुझावों का स्वीकार करते हुए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य किए गए—

- सरकार ने 1973 में विश्वविद्यालय अनुदान समिति को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में बदल दिया और 1956 में एक कानून द्वारा इसे स्वतन्त्र संस्था का दर्जा प्रदान किया। यह आयोग देश की उच्च शिक्षा की व्यवस्था, उसके स्तर को बनाए रखने, उच्च शिक्षा में समन्वय स्थापित करने और सरकार को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभा रहा है।
- सरकार ने 1954 में केन्द्र में 'ग्रामीण उच्च शिक्षा समिति' की स्थापना की और इसे ग्रामीण शिक्षा का उत्तरदायित्व सौंपा।
- इस आयोग के सुझाव पर देश में क्षेत्र विशेष की आवश्यकतानुसार विश्वविद्यालयों की स्थापनामें तेजी आई।
- इस आयोग के सुझाव पर कृषि, वाणिज्य, चिकित्सा, विधि, शिक्षक-प्रशिक्षण और इन्जीनियरिंग के स्वतन्त्र महाविद्यालयों की स्थापना हुई।
- कुछ विश्वविद्यालयों में 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम शुरू किए गए, अब तो ये प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में लागू हो गए हैं।
- कुछ विषयों में उच्च शिक्षा की व्यवस्था प्रादेशिक भाषाओंमें शुरू की गयी। साथ ही पारिभाषिक शब्दकोशों का निर्माण कार्य तेजी से शुरू हुआ।

- विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में 1948 में राष्ट्रीय कैडेट कोर और 1969 में राष्ट्रीय सेवा योजना की शुरुआत की गई।
- छात्र कल्याण योजना चालू हुईं— विश्वविद्यालयों में छात्र कल्याण सलाहकार बोर्ड की स्थापना हुई, छात्र और शिक्षकों की नियुक्ति हुई, विद्यालयों और महाविद्यालयों में उचित मूल्यों पर मध्यान्ह भोजन एवं जलपान की व्यवस्था हुई और छात्रावासों का निर्माण किया गया।

इस आयोग के सुझावों के द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कुछ सुधार तो हुआ परन्तु वह सब हाथ नहीं लगा, जिसे हम प्राप्त करना चाहते थे। अतः शिक्षा के पुनर्गठन पर सोचने के लिए भारत सरकार ने 14 जुलाई, 1964 को डॉ० दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का गठन किया।

इस आयोग ने सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के क्षेत्र में सुझाव प्रस्तुत किए परन्तु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत सुझावों का प्रभाव यह हुआ कि उच्च शिक्षा में डिग्री कोर्स को 3वर्ष कर दिया गया। उच्च शिक्षा और व्यावसायिक, तकनीकी एवं प्रबन्ध शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ उनके उन्नयन के लिए ठोस कदम उठाए गए। साथ ही शिक्षक-शिक्षा में सुधार होने शुरू हुए और प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रमों को व्यापक बनाया गया। इस आयोग ने शैक्षिक अवसरों की समानता के लिए जो सुझाव दिए उनका अनुपालन भी शुरू हुआ। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने भारतीय शिक्षा के समस्त पहलुओं पर विस्तार से विचार किया और उनके सम्बन्ध में ठोस सुझाव दिए।

1.4 उच्च शिक्षा की समस्याएँ

भारत में उच्च शिक्षा की समस्याओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

- उच्च शिक्षा में व्यावहारिकता का अभाव उच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- वैसे तो हमारे देश में उच्च शिक्षा के बहुत संस्थान हैं किन्तु ऐसे संस्थानों की कमी है जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। अतः शिक्षा की गुणवत्ता में कमी होनाउच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- वर्तमान समय में हमारे देश में उच्च शिक्षा के संस्थान राजनीतिक केन्द्र बनते हुए दिखायी पड़ते हैं जो उच्च शिक्षा के लिए एक प्रमुख समस्या है।
- हमारे देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बहुत अधिक संख्या में लोग बेरोजगार घूम रहे हैं। अतः रोजगार देने में सफल न हो पाना उच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- देश के अधिकतर उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के पद लम्बे समय तक रिक्त रहते हैं। अतः शिक्षकों की कमी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी समस्या है।
- क्षेत्रीय ऐतिहासिक विरासतोंको पाठ्यक्रम में सम्मिलित न किया जाना भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली आजादी के 75 वर्षों के पश्चात भी मैकाले द्वारा निर्मित नीतियों से ग्रस्त है। मैकाले ने अपने विवरण पत्र से अंग्रेजी द्वारा पाश्चात्य सभ्यता को इस देश पर थोपने का प्रयास किया, जिससे हम अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को तिरस्कृत दृष्टि से देखें और हमारे अन्दर हीन भावना व्याप्त हो। मैकाले ने भारतीय संस्कृति और धर्म की महानता व सहिष्णुता का अपमान किया। आज की भारतीय शिक्षा की नींव मैकाले के विवरण पत्र (1835) के प्रभाव में पड़ी तथा भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल और महाविद्यालय खुलने शुरू हो गए। यह शिक्षा प्रणाली हमारे देश की मूल प्रणाली बन गयी। आज भी हमारी शिक्षा इसी माध्यम पर आधारित है। मैकाले की नीति का भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के विकास पर भी बहुत हीनकारात्मक प्रभाव पड़ा।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति को प्राथमिकता देने वाली नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में लागू हो गयी है परन्तु अभी भी इसका पूर्णरूपेण क्रियान्वयन होना शेष है। अभी भी शिक्षा के किसी भी स्तर में क्षेत्रीय भौगोलिक धरोहरों का समावेश किया जाना शेष है।

1.5 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसन्धान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है तथा उस बाधा को दूर किया जा सकता है। वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को अविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा माना जाएगा। वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतों और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं।

यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधारा तो हम अपनी भौगोलिक विरासतों को खो देंगे। अतःआवश्यकता है कि हम सभी अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक हों। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुँच चुकी भौगोलिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाए तथा भविष्य के लिए इन्हें संरक्षित किया जाए। यह तभी सम्भव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया। इस समस्या के अध्ययन से सिर्फ विद्यार्थियों को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को लाभ होगा।

1.6 समस्या कथन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का समस्या कथन इस प्रकार है—

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन।

1.7 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के विषय में विचार कर लेना चाहिए। शोध गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है, इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी विशेष समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण किया जाता है। शोध की निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण को क्रमबद्ध रूप से एवं सोद्देश्य सुनियोजित किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन किया जा रहा है। ये विरासतें हमारी धार्मिक एवं ऐतिहासिक धरोहर हैं। ये विरासतें हमारे अतीत के विषय में बहुत कुछ बताती हैं एवं आने वाली पीढ़ी को हमारे धर्म एवं इतिहास से परिचित करवाती हैं। इन स्थलों में प्राकृतिक सुन्दरता का समावेश है, जो इनको आकर्षण का केंद्र बनाती हैं। जब पर्यटक इन क्षेत्रों का भ्रमण करते हैं तो उन्हें महन्तों से मिलने का अवसर मिलता है, जिनसे वे अपार ज्ञान एवं धर्म की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण न मिल पाने एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। इनके आसपास सफाई न होने, यहाँ पहुँचने के मार्ग में कठिनाई होने तथा आसपास बनी घनी बस्तियों के कारण इन विरासतों का भौगोलिक एवं आध्यात्मिक क्षरण होता जा रहा है। जब तक लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक नहीं होंगे तब तक इन स्थलों को संरक्षित रख पाना मुश्किल होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

1.8 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिन्तन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बाहर निकाल कर स्पष्ट करना है। प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है—

1.8.1 बाँदा जनपद

बाँदा जनपद, भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में केन नदी (यमुना की सहायक नदी) के किनारे स्थित है। यह शहर बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित है। यह शहर महर्षि वामदेव की तपोभूमि है, उन्हीं के नाम पर इसे बाँदा नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश में 6 मई, 1997 को बाँदा जनपद से काट कर छत्रपति शाहू जी महाराज नगर के नाम से नए जिले का सृजन किया गया, जिसमें कर्वी तथा मऊ तहसीलें शामिल थीं। कुछ समय बाद 4 सितम्बर, 1998 को जिले का नाम बदलकर चित्रकूट कर दिया गया।
बाँदा एक ऐतिहासिक शहर है। बाँदा के चारो तरफ अनेक पर्यटन स्थल हैं। चित्रकूट यहाँ से करीब 70 किलोमीटर तथा कालिन्जर करीब 60 किलोमीटर है।

कार्यात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में बाँदा जनपद से तात्पर्य बाँदा जनपद द्वारा निर्धारित जनपद क्षेत्र की सीमा के अन्तर्गत अवस्थित क्षेत्र से है। (मानचित्र परिशिष्ट—I)

1.8.2 ऐतिहासिक विरासत

देश के अन्दर हमारे चारो तरफ मौजूद वे सभी वस्तुएँ जो हमें हमारे पूर्वजों के द्वारा प्राप्त हुई हैं, विरासत कहलाती हैं। ऐसे खास स्थल (स्मारक, भवन, मन्दिर, पूजा स्थल, आश्रम, तालाब इत्यादि) जिनका सम्बन्ध इतिहास से होता है, ऐतिहासिक विरासत कहलाते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में ऐतिहासिक विरासत से तात्पर्य रनगढ़ दुर्ग एवं झिन्ना बाबा से है।

1.8.3 महाविद्यालयीन विद्यार्थी

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से तात्पर्य कक्षा 12 उत्तीर्ण करने के बाद उच्च शिक्षा हेतु देश के विभिन्न महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों से है।
कार्यात्मक परिभाषा— प्रस्तुत लघु शोध में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से तात्पर्य बाँदा नगर में अवस्थित बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत संस्थागत विद्यार्थियों से है।

1.8.4 जागरूकता

विकिपीडिया के अनुसार— जागरूकता किसी चीज के प्रति सचेत होने की अवस्था है। अधिक विशेष रूप से, यह प्रत्यक्ष रूप से जानने, महसूस करने और घटनाओं का संज्ञान लेने की क्षमता है।

कार्यात्मक परिभाषा— प्रस्तुत लघु शोध में जागरूकता से तात्पर्य महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की रनगढ़ दुर्ग के प्रति जानकारी से है।

1.8.5 अध्ययन

किसी विषय को सीखने और समझने के लिए दिमाग लगाना (विशेषकर पढ़कर) अध्ययन कहलाता है।

1.9 अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- रनगढ़ दुर्गका अध्ययन करना।
- रनगढ़ दुर्ग के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।
- रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं प्रशिक्षण स्तरानुसार अध्ययन करना।
- रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना।
- रनगढ़ दुर्ग से सम्बन्धित ई-ब्रोशर (e-brochure) तैयार करना।
- रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता के संवर्धन के सम्बन्ध में व्यवहारिक कार्य करना।

1.10 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के सन्दर्भ में निम्नलिखित चरों को मुख्य रूप से लिया गया है—

1.10.1 मापदण्ड चर

- रनगढ़ दुर्ग के प्रति विद्यार्थियों कीजागरूकता।

1.10.2 वर्गीकरण चर

- **लिंग—** छात्र-छात्राएँ
- **विद्यार्थी स्तर—** प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित

1.11 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं—

I. रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
II. रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
III. रनगढ़ दुर्ग के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
IV. रनगढ़ दुर्ग के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
V. रनगढ़ दुर्ग के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
VI. रनगढ़ दुर्ग के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.12 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसन्धान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या-ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान पर गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरूप साधारणत: अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए उसका सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चहारदीवारी होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है—

- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जनपद की निम्नलिखित ऐतिहासिक विरासतों के अध्ययन तक सीमित है—
  (i) रनगढ़ दुर्ग

(ii) झिन्ना बाबा

- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जनपद के संस्थागत महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता के अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन चयनित विद्यार्थियों के लिंग एवं प्रशिक्षण स्तरानुसार तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्मार्टफोन प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

1.13 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

भारत सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से समृद्ध देश है। हमारी कला एवं संस्कृति की आधारशिला हमारे देश की ऐतिहासिक विरासत है। हमारी एक बहुत बड़ी समस्या अपनी ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित न रख पाना है। हमारे देश में ऐसे अनगिनत ऐतिहासिक स्थल हैं जिनकी देखभाल ठीक ढंग से नहीं हो रही है। इनमें से कुछ तो इतनी बुरी तरह उपेक्षित हैं कि अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो बहुत ही जल्द विलुप्त हो जाएंगे। सरकारी विभाग अपनी सीमाओं और साधनों की कमी के कारण केवल उन स्थलों पर ध्यान देते हैं जो उनकी सूची में शामिल है परन्तु इतना काफी नहीं है। देश की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं वरन् यह देश के सभी लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होंगे। अत: यह शोध कार्य इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

- ❖प्रस्तावना
- ❖अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन
- ❖समीक्षात्मक निष्कर्ष
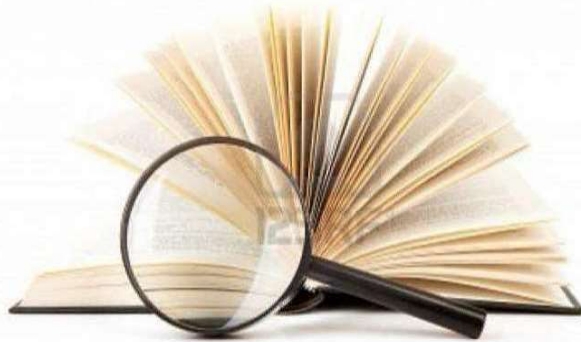
Literature Review

अध्याय द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं— ज्ञान को एकत्र करना, एक-दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों से भलीभांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं।

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो यह सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कथन है। सम्बन्धितसाहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रति-लेखों, विज्ञप्तियों, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध-प्रबन्धों आदि से है; जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती, दूसरा पूर्व मेंजिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार— "मान्यता प्राप्त अधिकारियों और पिछले शोध के लेखन का सारांश इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से ज्ञात, अज्ञात और अनुपयोगी से परिचित है।"

"A summary of the writings of recognized authorities and of previous research provides evidence that the researcher is familiar with what is already known and what is still unknown and untested."

— John W. Best.

2.1.1 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य

उपरोक्त परिभाषा से सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य प्राप्त होते हैं—

- साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता को विषय की गहराई तक पहुँचने में सफलता मिलती है।
- शोधकर्ता यह जान जाता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक कितना कार्य हो चुका है तथा कितना करना शेष है।
- शोधकर्ता जागरूक हो जाता है तथा समस्या के सभी पक्षों पर सोच-विचार करता है।
- शोध में प्रयुक्त की जाने वाली विधियाँ, न्यादर्श, परीक्षण तथा वर्गीकरण करने हेतु मार्गदर्शन मिलता है।
- यह परिणामों के विश्लेषण में सहायता करता है तथा उपयोग, निष्कर्षों एवं तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है अर्थात सम्बन्धितअध्ययनों से निकाले गए निष्कर्षों की तुलना की जा सकती है।
- समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएँ, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

इस प्रकार पूर्व शोधों का पुनरावलोकन वर्तमान में किए जाने वाले शोध हेतु प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधार्थी को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता है, जहाँ वह अपने क्षेत्र की नवीन समस्याओं से परिचित होता है। वास्तव में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना वह उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता। जब तक उसे यह ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य हुआ हैतथा उसके निष्कर्ष क्या रहे हैं? वह अपने शोध कार्य को आगे नहीं ले जा सकता। अतः सम्बन्धित साहित्य अनुसन्धान के सभी स्तर पर सहायता प्रदान करता है।

2.1.2 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

- प्रत्येक अनुसन्धानकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह दूसरों द्वारा किए गए शोधों के आधार पर अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली-भाँति अवगत हो। अतः इस दृष्टि से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक है।
- शोधकर्ता सम्बन्धित साहित्य से अपनी रूचि के अनुरूप शोधकार्य का क्षेत्र चुनता है तथा इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्ता को एक दिशा प्रदान करता है।
- अध्ययनकर्ता साहित्य से शोध की समस्या का चयन करता है तथा साहित्य के पुनर्निरीक्षण के आधार पर अपनी परिकल्पनाएँ बनाता है तथा अनुसन्धान के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद-विवाद किया जा सकता है।
- यह समस्या समाधान हेतु अनुसन्धान की समुचित विधि का सुझाव देता है।
- तुलनात्मक आँकड़ों को प्राप्त करने एवं विश्लेषण करने में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य समस्या के सीमांकन में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य का गम्भीर अध्ययन अनुसन्धानकर्ता के ज्ञानकोष की वृद्धि करता है।

2.1.3 सम्बन्धित साहित्य के स्रोत

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत से तात्पर्य अनुसन्धान विषय में किए गए पूर्व अध्ययनों से होता है तथा इसके लिए शोधकर्ता को अध्ययन सामग्री की आवश्यकता होती है। यह अध्ययन सामग्री शोधकर्ता को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होती है। स्रोत लिखित एवं संकलित हो सकते हैं, इससे शोधकर्ता को उस क्षेत्र में हुए कार्यों के बारे में जानकारी मिलती है, उसकी सूझ एवं अन्तर्दृष्टि का विकास होता है।

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत दो प्रकार के होते हैं—

1. प्रत्यक्ष स्रोत
2. अप्रत्यक्ष स्रोत

1) प्रत्यक्ष स्रोत:शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा साहित्य के रूप में सूचना के प्रत्यक्ष स्रोत इस प्रकार के प्राप्त होते हैं—

- **पत्रिकाओं में उपलब्ध सामयिक साहित्य**— शोध से सम्बन्धित जो कार्य हुए हैं उनकी साहित्य पत्रिकाएँ आदि हो सकती हैं, इनका साहित्य नवीन घटनाओं से सम्बन्धित होता है।
- **शोध प्रबन्ध—**विषय से सम्बन्धित शोध मिल सकते हैं। शोध वे ही नहीं होते लेकिन उनकी रूपरेखा मिल जाती है।
- **एक ही विषय पर निबन्ध पुस्तिकाएँ, वार्षिक पुस्तकें तथा बुलेटिन—**शोध चाहे दार्शनिक हो या सर्वे का दोनों में ही सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़े बिना शोध कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

2) अप्रत्यक्ष स्रोत: सूचना के अप्रत्यक्ष स्रोत अथवा शिक्षा साहित्य के लिए निर्देशिका निम्न रूपों में प्राप्त होती है—

- शिक्षा के विश्व ज्ञान कोष।
- शिक्षा सूची पत्र।
- शिक्षा सार।
- पत्रिकाएँ एवं सहायक पुस्तकें।
- मोनोग्राफ, बुलेटिन एवं वार्षिक पुस्तकें।

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

प्रस्तुत शोध कार्य में जागरूकता एवं ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित विभिन्न शोधों का अध्ययन किया गया है, इनका विवरण निम्न प्रकार है—

2.2.1 जागरुकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन

1. **निधि अवस्थी** (2005), ने *ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन*किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर के 400 ग्रामीण तथा 400 नगरीय परिवारों को शामिल किया गया। ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थिनी द्वारा 62 प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली तथा T.S. Sodhi द्वारा निर्मित Attitude Scale Towards small family and population education (ASSFPE) का प्रयोग किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण परिवारों में आयु जागरूकता को प्रभावित कर रही है। ग्रामीण परिवारों में **15-25 आयु वर्ग में अधिक जागरूकता प्राप्त हुई है, परन्तु नगरीय परिवारों की जागरूकता पर आयु का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा** है।

ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या
नियंत्रण के प्रति जागरूकता
का अध्ययन
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
शोध-प्रबन्ध
2005
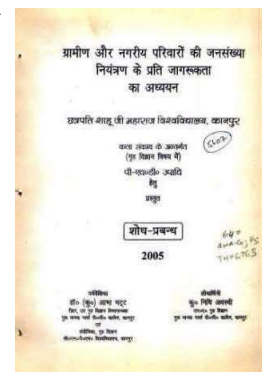
2. **लक्ष्मण सिंह** (2016),ने *'अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन'* किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में उन्होंने अलीगढ़ मण्डल के चार जिलों कासगंज, एटा, हाथरस और अलीगढ़ के 800 शिक्षकों का चयन किया। प्रदत्त संकलन हेतु उन्होंने स्वनिर्मित पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग किया जिसमें 75 प्रश्न रखे गए। शोध के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत महिला एवं पुरुषों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता में अन्तर है। महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षक अधिक जागरूक हैं। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में **शिक्षणरत पुरुषों** के पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता **महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक** है।

2016
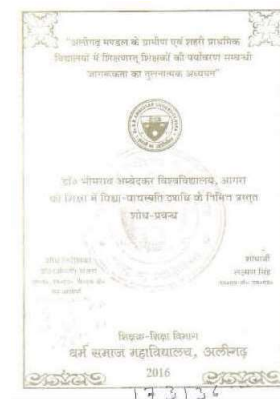
3. **शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी** (2018),ने *'अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन*किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। एड्स जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० मधु अस्थाना द्वारा निर्मित एड्स जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में कुल 52 कथन व प्रश्न हैं, जिनके उत्तर हाँ या नहीं में देना होता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि **अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के छात्रों** की एड्स के प्रति जागरूकता **छात्राओं की अपेक्षाअधिक** है। साथ ही हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा, अंग्रेजी माध्यम की छात्राएँ एड्स के प्रति अधिक जागरूक हैं।

अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर
के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता
एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन
शोध प्रबन्ध
2018
शोध केन्द्र
शिक्षा संकाय
हण्डिया पी०जी० कालेज, हण्डिया, इलाहाबाद

4. विक्रम आनन्द (2019),ने *'माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने वाराणसी जनपद के 80 माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 232 हिन्दी शिक्षकों को एवं 696 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया। माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि CBSE और यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है। यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने यह भी पाया कि **प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक, अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों की तुलना में ICT के प्रति अधिक जागरूक** हैं।

माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पीएचडी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध

शोध–निर्देशक | शोध छात्र

शिक्षा संकाय (कमच्छा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी–221005

सन् : 2019
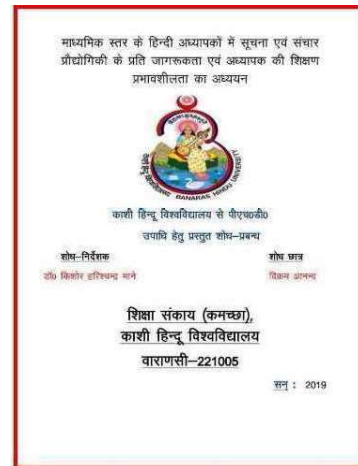
5. पूनम राठौर (2020),ने *'अनुसूचित पिछड़े एवं सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने मेरठ मण्डल के 2 जिलों मेरठ व गाजियाबाद से 720 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि **पिछड़े एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों** में मानवाधिकार जागरूकता स्तर **अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च** है। साथ ही सामान्य जाति की छात्राओं में मानवाधिकार जागरूकता स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक उच्च है।
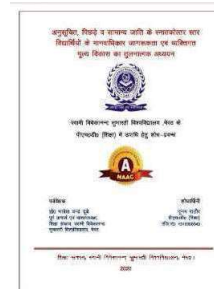
2.2.2 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित शोध अध्ययन

1. सरिता साहू (2016), ने *'क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकता छत्तीसगढ़ के विशेष सन्दर्भ में*अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँची कि छत्तीसगढ़ में **लिखित साहित्य की कमी** के कारण यहाँ के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास के सम्बन्ध में **जानकारियों का अभाव** है। इस अञ्चल में विभिन्न पर्व-त्यौहार, उत्सवों व संस्कारों के निर्वहन के दौरान गीत गाने, नृत्य करने एवं लोक परम्पराओं को निभाने का चलन है।

2. प्रिन्सी चौरसिया (2018) ने*'स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में उन्होंने महोबा नगर के स्नातक स्तर के 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया। अध्ययन के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि छात्राओं की अपेक्षा छात्र महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अधिक जागरूक हैं। इस अध्ययन में उन्होंने निम्न सुझाव दिए—

- विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक किए जायें ताकि लोग ऐतिहासिक स्मारकों के आसपास साफ-सफाई रख सकें।
- ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए।
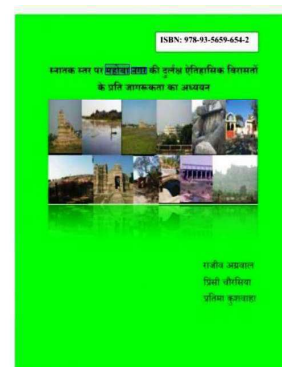
- शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग-संकेत नगर के मुख्य चौराहों पर लगाए जाएँ।
- ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं आसपास की स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए।

3. पूजा चौरसिया (2019) ने *'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के 150 छात्र-छात्राओं का चयन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। इस अध्ययन में उन्होंने निम्न सुझाव प्रस्तुत किए—

- ऐतिहासिक विरासत के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
- कालिंजर क्षेत्र/प्रान्त की ऐतिहासिक विरासत/शौर्य/वीरता /पराक्रम/संस्कृति/पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से अतिरिक्त सहायक पाठ्य पुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है।
- परम्परागत कुटीर उद्योग को विकसित किया जाए।
- यहाँ से जुड़ी हुई संगीत परम्पराओं को विकसित करके समय-समय पर उनका प्रस्तुतीकरण किया जाए।
- महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाए और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जाए।
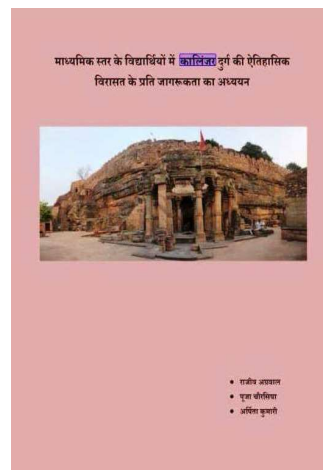
4. बृजलाल पटेल (2021) ने *'बाँदा जनपद के विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में उन्होंने न्यादर्श के रूप में बाँदा जनपद के 90 छात्र-छात्राओं का चयन किया। उन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि भूरागढ़ दुर्ग क्षेत्र में धर्म, संस्कृति तथा विशिष्ट रीति-रिवाजों से युक्त **अनेक ऐतिहासिक स्थल** हैं, जिनके **गौरवमयी अतीत से प्रभावित हुए बिना व्यक्ति नहीं रह सकता**। पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र रमणीय क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पर्यटन की पर्याप्त सम्भाव्यता है। अतः इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएँ, यातायात, आवास, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
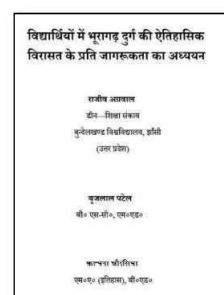
5. दीपक कुमार (2021) ने *'विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने मड़फा दुर्ग की जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तुत किए—

- मड़फा तक जाने वाले मार्ग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर संकेतक लगाए जाएँ।
- यहाँ पर सीढ़ियों पर रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- जल की व्यवस्था होनी चाहिए।
- मड़फा दुर्ग तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाना चाहिए।
- शंकर जी की मूर्ति के पास भंडारा करने के लिए छाया के लिए टीन-शेड लगाना चाहिए।
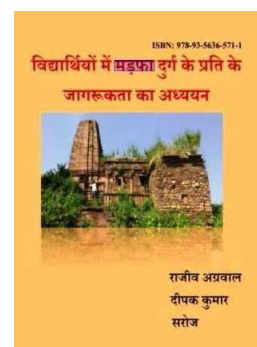
2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के द्वारा शोध प्रबन्ध में उल्लेख किए गए, शोध में अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होने पाती है। सम्बन्धित साहित्य शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में शोधकर्ता के ज्ञान एवं कुशलता को स्पष्ट करता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा दो भागों में की है। प्रथम भाग में जागरूकता से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया कि**जनसंख्या नियन्त्रण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, एड्स के प्रति जागरूकता तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता**से सम्बन्धित अध्ययन पहले किए गए हैं। दूसरे भाग में ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोधों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया गया कि पूर्व में **छत्तीसगढ़ की क्षेत्रीय ऐतिहासिकता, महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों, कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत, भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत तथा मड़फा दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत**से सम्बन्धित अध्ययन किए गए हैं; परन्तु अभी तक कोई भी शोध कार्य रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध में नहीं किया गया है, जिस कारण से शोधकर्ता ने इस विषय को शोध कार्य हेतु चुनने का निश्चय किया।

तृतीय अध्याय

रनगढ़ दुर्ग का ऐतिहासिक परिचय

- रनगढ़ दुर्ग
- झिन्ना बाबा
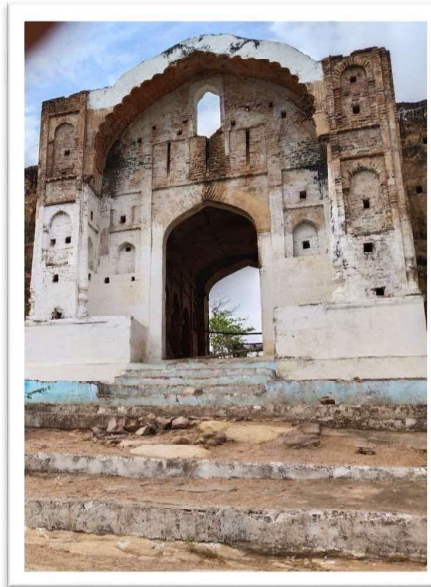
अध्याय तृतीय
रनगढ़ दुर्ग का ऐतिहासिक परिचय

इस अध्याय में रनगढ़ दुर्ग एवं झिन्ना बाबा के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है। इस अध्याय में उसकी स्थापना, स्थापत्य कला, ऐतिहतिक कथानक एवं भौगोलिक स्थिति आदि के विषय में वर्णन किया गया है। अधोलिखित स्थलों पर शोधार्थी द्वारा स्वयं जाकर गहन जानकरी एकत्र की गई, जिसकी चित्रावली परिशिष्ट– III में संलग्न है।

3.1 रनगढ़ दुर्ग

रनगढदुर्ग भी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। यद्यपि किसी भी ऐतिहासिक ग्रंथ में इस दुर्ग के संदर्भ में यह उल्लेख प्राप्त नहीं होता है कि इस दुर्ग का निर्माता कौन था तथा किस शासन काल में इसका निर्माण हुआ? रनगढ़ का किला मऊ, रिसौरा गाँव की तहसील से काफी दूर चलकर केन नदी के मध्य एक ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। इसके चारों ओर केन नदी की धाराएं प्रवाहित होती है। इसलिए दुर्ग की स्थिति एक टापू जैसी है। यह दुर्ग उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश की सीमा भी तय करता है। इस दुर्ग में पहुँचने के लिए कोई निश्चित मार्ग नहीं है। यह बिल्कुल निर्जन स्थान में है। यहाँ चारो ओर घनघोर जंगल है। इस जंगल को पार करने के बाद केन नदी के इस पार उत्तर प्रदेश के गाँव तथा उस पार मध्य प्रदेश के गाँव है। किले का जो स्वरूप दूर से दिखाई देता है, वह अत्यन्त सुन्दर है तथा पर्यावरण की दृष्टि से अत्यन्त मोहक भी है।

3.2 अवस्थिति

अक्षांश– 25°21'58" देशान्तर– 80°41'25"

रनगढ़ दुर्ग नामक स्थान उत्तर प्रदेश के बाँदा मुख्यालय से लगभग 35 किलोमीटर पूर्व दिशा में स्थित है। यह नरैनी से लगभग 9 किलोमीटर तथा अतर्रा तहसील से 26 किलोमीटर दक्षिण में अवस्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए जनपद बाँदा के नरैनी क़स्बा से रिसौरा होकर जाना पड़ता है।

3.3 ऐतिहासिक कथानक

18वीं सदी में जैतपुर (महोबा) के राजा जगराज सिंह बुन्देला ने इसके निर्माण की नींव 1745 में रखी थी, लेकिन 1750 में उनकी मृत्यु के बाद उनके बेटे कीर्ति सिंह बुन्देला ने 1761 में इसका निर्माण पूरा करवाया था। यह दुर्ग **स्योदा रिसौरा रियासत** की महज एक सैनिक सुरक्षा चौकी के रूप में था।

चरखारी रियासत से रानी नाराज होकर रिसौरा रियासत आ गई थीं, और इस किले में काफी दिन गुजारा था, तभी किले का नाम 'रानीगढ़' हुआ और अब रानीगढ़ का अपभ्रंश में रनगढ़ हो गया है।

पन्ना (मध्य प्रदेश) के नरेश महाराजा छत्रसाल के दो बेटे द्वयसाल और जगराज सिंह बुन्देलाथे। बटवारे में द्वयसाल को पन्ना स्टेट और जगराज सिंह को जैतपुर-चरखारी (महोबा) स्टेट मिला था। पहले स्योढ़ा गाँव जैतपुर- चरखारी स्टेट का एक जिला था और अब बाँदा जिले का महज एक गाँव है।

3.4 जलीय दुर्ग

रनगढ़ का किला बाँदा जनपद की नरैनी तहसील से मऊ रिसौरा गाँव की सीमा से आगे चलकर केन नदी के मध्य एक ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। केन नदी की जलधाराओं के बीच एक पहाड़ी पर रनगढ़ दुर्ग बना हुआ है जिसे जलीय दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है। नदी के मध्य धारा में अवस्थित होने के कारण यह वर्तमान में उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश की सीमओं को साझा करता है, ये दुर्ग जलीय मार्ग से आने वाले वाह्य दुश्मनों के आक्रमण से बचने के लिए निर्मित करवाई गयी थी।

केन नदी की जलधाराओं के बीच एक पहाड़ी पर रनगढ़ दुर्ग बना हुआ है, जो देखने में बिल्कुल झाँसी दुर्ग जैसा दिखायी पड़ता है। नदी में कम जल होने के कारण चारों तरफ बालू ही बालू पड़ी दिखाई पड़ती है। यह बिल्कुल निर्जन स्थान में करीब 4 एकड़ क्षेत्रफल में काफी ऊँचाई पर चट्टानों में बना हुआ है। जंगल को पार करने के बाद ही केननदी मिलती है। दुर्ग का जो स्वरूप दूर से दिखाई देता है, वह अत्यन्त सुन्दर है तथा पर्यावरण की दृष्टि सेअत्यन्त मोहक भी है।

3.5 प्रवेश द्वार

दुर्ग में दो प्रवेश द्वार हैं, जिनसे दुर्ग के अन्दर प्रवेश किया जाता है, इसके अतिरिक्त शत्रुओं से सुरक्षा के लिए चार गुप्त दरवाजे भी हैं।

3.5.1 प्रथम द्वार

दुर्ग के अन्दर जाने के लिए उत्तर दिशा में प्रथम द्वार है। प्रथम द्वार पर 46 सीढ़ियाँ हैं, जिन्हें पार करके दुर्ग के अन्दर प्रवेश किया जाता है। दुर्ग के प्रमुख द्वार पर कोई दरवाजा या फाटक नहीं है।

3.5.2 द्वितीय द्वार

दुर्ग के पश्चिम-उत्तर दिशा में द्वितीय द्वार है, इसमें भी दरवाज़ा नहीं लगा है। द्वितीय द्वार से नीचे उतर कर गौरइया दाई मन्दिर जाया जाता है। जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि लगभग 1812 में जब यह दुर्ग अंग्रेजों के अधिकार में आया, उस समय अंग्रेजों ने दुर्ग के फाटक निकालकर उन्हें गिरवां और पनगरा के थाने में लगवा दिया।

3.6 गुप्त द्वार

दुर्ग के अन्दर चार गुप्त द्वार भी हैं, जब कोई सबल आक्रमणकारी आक्रमण करता था और दुर्ग की सेनाएँ कमजोर पड़ जाती थीं, उस समय सैनिक गुप्त द्वार से भागकर अपने प्राणों की रक्षा करते थे। लेकिन अब इन गुप्त द्वारों को बन्द कर दिया गया है।

3.7 रनगढ़ दुर्ग के भग्नावशेष

यह दुर्ग एक पहाड़ी पर निर्मित है, तथा चारों तरफ प्राचीरों से घिरा हुआ है, तथा पहाड़ी के नीचे चारों तरफ केन नदी प्रवाहित होती है। इस दुर्ग में पहुँचने के लिए दो मुख्य द्वार हैं और दुश्मन से सुरक्षा के लिए चार गुप्त दरवाजे भी हैं।

3.8 भगवान शिव की भव्य मूर्ति

दुर्ग के अन्दर थोड़ी ही दूर पर भगवान शिव जी की एक भव्य मूर्ति है, जो देखने में बहुत ही सुन्दर दिखती है, जिसका मुख पूर्व-दक्षिण दिशा की ओर है। मूर्ति का निर्माण दुर्ग के ठीक बीच में 2018-20 के दौरान किया गया। इसका निर्माण स्थानीय निवासियों के सहयोग से हुआ है।

मूर्ति का शुभारम्भ 2020 मकर संक्रांति (14 जनवरी)को कन्या भोज के साथ किया गया था। रनगढ़ किला से अभद्रता को दूर करने के लिए गाँव के दो व्यक्तियों द्वारा इस शिव मूर्ति को बनवाया गया, जिसकी कुल लागत लगभग 5 लाख बताई गई है, जिसे गाँव के सहयोग के द्वारा एकत्रित किया गया था।

शिव मूर्ति का निर्माण नरैनी के मूर्तिकार विनोद कुमार दीक्षित द्वारा किया गया, जिन्होंने एक रुपए भी नहीं लिया।

उन्होंने, शिव मूर्ति को बनाने के लिए गाँवके किसी भी घर में भोजन मात्र करके,इसका का निर्माण किया।इस मूर्ति को बनाने में लगभग 3 साल का समय लगा था। मूर्ति का शिलान्यास 16 दिसंबर,2018 को किया गया । इस मूर्ति को बनाने में विनोद विश्वकर्मा, राघवेंद्र, मनोज विश्वकर्मा, राजेंद्र तथा बाला प्रसाद विश्वकर्मा ने सहायता की। शिव जी की मूर्ति के ठीक सामने एक प्राचीन शिवलिंग है।

3.9 बाढ़ में भी सुरक्षित दुर्ग

यह दुर्ग केन नदी के बीच पत्थरों में इस तरह से बनाया गया है कि बाढ़ में भी जब नदी प्रवाहित होती है तो दुर्ग के चारों ओर जल ही जल होता है। दुर्ग के आसपास घने जंगल है और इसका निर्माण कुछ इस तरह से किया गया है, कि बाढ़ में भी इस दुर्ग का कोई नुकसान नहीं होता है। वर्ष 1992 और 2005 में प्रचंड बाढ़ आई थी, जिसमे आसपास के गाँव भी जलमग्न हो गए थे लेकिन रनगढ़ दुर्ग इस बाढ़ में भी सुरक्षित बना रहा।

3.10 अष्टधातु की तोप

केन नदी की जलधारा में ही कुछ वर्षों पहले अष्टधातु की एक भारी-भरकम तोप बरामद हुई थी। जिस पर यूपी और एमपी सरकार ने अपना-अपना दावा किया था। इसको लेकर कई महीने विवाद चलता रहा, हालांकि बाद में मध्य-प्रदेश शासन के पक्ष में निर्णय गया और तब छतरपुर स्थित गौरिहार थाने की पुलिस ने तोप को अपने अधिकार में लेकर खजुराहो में रखवा दिया, इसी तरह यहाँ एक अष्टधातु की मूर्ति भी प्राप्त हुई, इस पर भी मध्य प्रदेश सरकार ने दावा किया, लेकिन दुर्ग के विकास के लिए मध्य प्रदेश सरकार के द्वारा किसी तरह की पहल नहीं की गई।

3.11 सुरक्षा चौकी

जलीय दुर्ग के समीप एक सुरक्षा चौकी थी, इस सुरक्षा चौकी से सैनिक दूर से आने वाले शत्रुओं को देख लिया करते थे और किलेदार को इसकी सूचना दे देते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन युग में इस क्षेत्र में नावों द्वारा व्यापार होता था। नाव द्वारा ही कर वसूलने का कार्य भी सुरक्षा चौकी के लोग किया करते थे।

3.12 बारदरी अथवा राजा की बैठक

रनगढ़ दुर्ग के समीप एक ऐसा स्थल है जिसमें 12 दरवाजे हैं, ऐसा मालूम होता है कि रनगढ़ दुर्ग का शासक इस महत्वपूर्ण स्थल पर समस्याओं को हल करने के लिए दुर्ग के अन्य अधिकारियों के साथ विचार विमर्श किया करता था। यहाँ समय-समय पर दरबार लगा करता था।

3.13 रंग महल

रनगढ़ दुर्ग के ऊपर रंग महल के अवशेष मिलते हैं। यह रंग महल मध्यकाल का प्रतीत होता है, इस महल में कई आवासीय कक्ष, स्नान, रसोई, श्रंगार, शयन कक्षऔर दीप जलाने के लिए अनेक आले बने हुए हैं।

3.14 कूप

इस क्षेत्र में गोलाकृति कूप है जो जलापूर्ति का प्रमुख साधन था।दुर्ग के अन्दर दक्षिण-पश्चिम दिशा में एक विशाल कूप है, जिसमें बहुत नीचे जल भरा हुआ है, जिसका कोई उपयोग नहीं होता है। कूप में कूड़ा-कचरा भर गया है, जिससे कूप का जल पीने योग्य नहीं है।

3.15 गौरइया दाई मन्दिर

द्वितीय द्वार से नीचे उतर कर, केन नदी को पार करके 3 किलोमीटर आगे जाने पर एकान्त में गौरइया दाई मन्दिर अवस्थित है। दुर्ग में ही एक विशालकाय देवी मन्दिर है। वास्तुशिल्प की दृष्टि से यह मन्दिर अति प्राचीन मालूमहोता है, इस मन्दिर की मूर्ति को चोरों ने गायब कर दी है। यह भी सम्भावना है, कि जब इस क्षेत्र में सुल्तानों एवं मुगलों का शासन स्थापित हुआ होगा, तब मन्दिर की मूर्ति इन्ही मुसलशासकों द्वारा खण्डित कर दी गई होगी। इस दुर्ग में सन् 1727 में मुगल सूबेदार मुहम्मद बगस ने अधिकार कर लिया था, सम्भव है कि यह मूर्ति उसी के द्वारा गायब कर दी गई होगी।

मन्दिर के आस-पास कोई भी घर या गाँव नहीं है। माता सभी की इच्छाओं को पूरा करती हैं। इससे आस- पास के निवासी माता जी पर श्रद्धा रखते हैं। माता जी की मूर्ति छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित है। पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह मूर्ति पहले दुर्ग में स्थापित थी, बहुत पहले इस मन्दिर की मूर्ति को चोरों ने गायब कर दिया।

3.16 झिन्ना बाबा

जल संसाधन जल के प्राकृतिक संसाधन हैं, जो मनुष्यों के लिए सम्भावित रूप से उपयोगी हैं, परन्तु 97% जल खारा जल है और केवल तीन प्रतिशत ताज़ा जल है; इसका दो-तिहाई से थोड़ा अधिक हिस्सा ग्लेशियर और ध्रुवीय बर्फ की चोटियों में जमा हुआ है, शेष बचा हुआ ताज़ा जल मुख्य रूप से भूजल के रूप में पाया जाता है, जिसका केवल एक छोटा सा अंश जमीन के ऊपर या हवा में मौजूद होता है। ताजे जल के प्राकृतिक स्रोतों में सतही जल, नदी प्रवाह के नीचे का जल, भूजल और जमा हुआ जल शामिल है। ताजे जल के कृत्रिम स्रोतों में उपचारित अपशिष्ट जलऔर अलवणीकृत समुद्री जल शामिल हो सकते हैं। जल संसाधनों के मानव उपयोग में कृषि, औद्योगिक, घरेलू, मनोरंजक और पर्यावरणीय गतिविधियाँ शामिल हैं। जल की कमी, जल प्रदूषण, जल संघर्ष और जलवायु परिवर्तन से जल संसाधन खतरे में हैं। ताजा जल एक नवीकरणीय संसाधन है, फिर भी दुनिया में भूजल की आपूर्ति लगातार कम हो रही है, एशिया, दक्षिण अमेरिका और उत्तरी अमेरिका में कमी सबसे प्रमुख रूप से हो रही है, हालांकि यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि प्राकृतिक नवीकरण इस उपयोग को कितना संतुलित करता है, और क्या पारिस्थितिकी तंत्र को खतरा है?

- ## अवस्थिति

अक्षांश-25°23’98”42809742548 **देशान्तर- 80°41’30”5191978907**
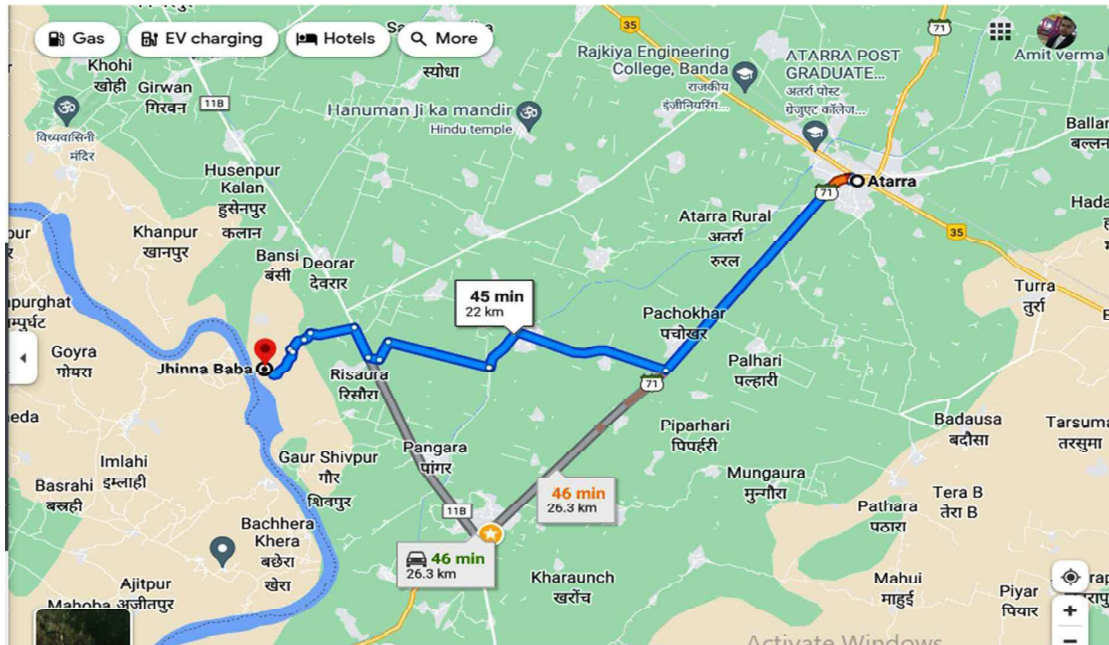
झिन्ना बाबा नामक स्थान उत्तर प्रदेश के बाँदा मुख्यालय से लगभग 32 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित है। यह नरैनी से लगभग 11किलोमीटर तथा अतर्रा रेलवे स्टेशन से 27 किलोमीटर दक्षिण में अवस्थित है।

- ## प्राकृतिक एवं धार्मिक पवित्र स्थल

प्राकृतिक एवं धार्मिक दृश्य से निरूपित ‘झिन्ना बाबा’ नामक पवित्र भूतल स्थल नरैनी तहसील के पाड़ादेव गाँव से 3 किलोमीटर की दूरी
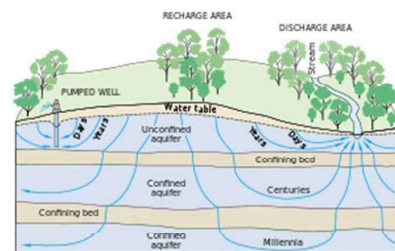
पर कच्चे मार्ग में अवस्थित है, जो अविरल, निर्मल भूजल का उत्तम स्रोत है। इस प्राकृतिक मनोरम स्थल की विशेषता यह है कि यहाँ पर बहती हुई भूजल धारा के समीप ही कच्ची मिट्टी से निर्मित एक शिवलिंग स्थापित किया गया है, जो उस प्राकृतिक दृश्य को धार्मिक वातावरण के रूप में सुशोभित करता है।

भूजल या भूगर्भिक जल धरती की सतह के नीचे चट्टानों के कणों के बीच के अंतरकाश या रन्ध्राकाश में मौजूद जल को कहते हैं। सामान्यतः जब धरातलीय जल से अंतर दिखाने के लिए इस शब्द का प्रयोग सतह से नीचे स्थित जलके रूप में होता है तो इसमें मृदा जल को भी शामिल कर लिया जाता है। हालाँकि, यह मृदा जल से अलग होता है जो केवल सतह से नीचे कुछ ही गहराई में मिट्टी में मौज़ूद जल को कहते हैं। भूजल एक मीठे जल के स्रोत के रूप में एक प्राकृतिक संसाधन है। मानव के लिए जल की प्राप्ति का एक प्रमुख स्रोत भूजल के अंतर्गत आने वाले जलभरे हैं जिनसे कुओं और नलकूपों द्वारा जल निकाला जाता है।जो भूजल पृथ्वी के अन्दर अत्यधिक गहराई तक रिसकर प्रविष्ट हो चुका है और मनुष्य द्वारा वर्तमान तकनीक का सहारा लेकर नहीं निकला जा सकता या आर्थिक रूप से उसमें उपयोगिता से ज्यादा खर्च आएगा, वह जल संसाधन का भाग नहीं है। संसाधन केवल वहीं हैं जिनके दोहन की संभावना प्रबल और आर्थिक रूप से लाभकार हो।अत्यधिक गहराई में स्थित भूजल को जीवाश्म जल या फोसिल वाटर कहते हैं।

चतुर्थ अध्याय

अध्ययन विधि एवं प्रकिया

- प्रस्तावना
- शोध विधि
- अध्ययन समष्टि
- प्रतिदर्श चयन
- लक्षित प्रतिदर्श का चयन
- प्रदत्तों का स्रोत
- प्रदत्तों की प्रकृति
- शोध उपकरण
- परीक्षण का प्रशासन
- परीक्षण का फलांकन
- सांख्यिकीय प्रविधियाँ

चतुर्थ अध्याय
अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

4.1 प्रस्तावना

शिक्षा और मनोविज्ञान में शोध अभिकल्पों का विकास अनुसन्धान के निष्कर्षों को निरर्थक रूप से प्रभावित करने वाले बाह्य कारकों के निष्कासन या नियन्त्रण के लिए हुआ। शोध अभिकल्प, समस्या से सम्बन्धित परिकल्पना के कथन से लेकर आँकड़ों के अन्तिम विश्लेषण तक की उन सभी क्रियाओं की योजना या रूपरेखा है, जो शोध प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए की जाती हैं। इस प्रकार यह एक व्यापक कार्ययोजना है, जिसका अन्तिम उद्देश्य अनुसन्धानकर्ता को शोध प्रश्न (समस्या) का एक ऐसा उत्तर (हल) प्रदान करना है, जो यथासम्भव वैध, वस्तुनिष्ठ, परिशुद्ध और किफायती हो।

क्रिर्क (1968) के अनुसार—"प्रायोगिक अभिकल्प, प्रयोज्यों को विभिन्न प्रायोगिक स्थितियों में निर्दिष्ट किए जाने की विशिष्ट योजना है जिसमें सम्बन्धित सांख्यिकीय विश्लेषण की योजना भी सम्मिलित रहती है।"
"Experimental design is……. a particular type of plan for assigning subject to experimental conditions and the statistical analysis associated with the plan."

—R.E. Kirk: Experimental Design Procedures for Behavioural Science (Brooks), 1968.

डी एन श्रीवास्तव (1994) के अनुसार—"अनुसन्धान अभिकल्प अन्वेषण की विशिष्ट आधारभूत योजना, संरचना और वीर व्यूहनीति है, जिसमें प्रयोज्यों का स्वतन्त्र चर के स्तरों के अनुसार वितरण और स्वतन्त्र चर या चरों की प्रहस्तन प्रक्रियाएँ और सम्बन्धित सांख्यिकीय विश्लेषण की योजना सम्मिलित होती है। इसके द्वारा अनुसन्धान प्रश्नों या परिकल्पनाओं के उत्तर प्राप्त किए जाते हैं और प्रसरण पर नियन्त्रण किया जाता है।"

4.2 शोध विधि

प्रत्येक शोधकर्ता को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों के प्राप्त हेतु कई विधियों का चयन करना होता है। अनुसंधानकर्ता के द्वारा अनुसन्धान के प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान के विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक विधि की अपनी कुछ अवधारणाएँ एवं तौर-तरीके होते हैं। शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरे समूह से सम्बन्धित होती है और इसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपना कर **रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरुकता का अध्ययन** करने का प्रयास किया है।

4.2.1 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण विधि शोध करने की वह अनुपम विधि है जिसके अन्तर्गत वृहद पैमाने पर आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं। सर्वेक्षण विधि में अध्ययनकर्ता जनसंख्या का चयन सुरक्षा पूर्वक करता है। सर्वेक्षण विधि का उद्देश्य किसी इकाई के वर्तमान व्यवस्था एवं तथ्यों का अध्ययन करना होता है।

फेयरचाइल्ड (1944) के अनुसार, "सामान्य शब्दों में एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके किसी एक पक्ष जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरञ्जन के सम्बन्ध में तथ्यों को व्यवस्थित, संकलित और विश्लेषण करने को ही सर्वेक्षण कहते हैं।"

"A term ……. used rather loosely to indicate a more or less orderly and comprehensive gathering and analysis of facts about the total life of a community or some phase of it e.g. health, education, recreation ……..” **—Fairchild, Dictionary of Sociology.**

4.3 अध्ययन समष्टि

अध्ययन जनसंख्या से तात्पर्य अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वाञ्छित निरीक्षण से सम्बन्धित इकाईयों की कुल संख्या से है। वर्तमान अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिनसे वांछित सूचनाएँ संकलित करनी है, वह है— *बाँदा जनपद के महाविद्यालयों में* अध्ययनरत् *विद्यार्थी।*

4.4 प्रतिदर्श चयन

प्रतिदर्श को न्यादर्श भी कहते हैं। प्रतिदर्श जनसंख्या का वह छोटा भाग है, जिसेअनुसन्धानकर्ता के द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है। प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व सूक्ष्म-रूप होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का समान्यीकरण करके जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाया जाता है। प्रतिदर्श के अंग्रेजी पर्याय Sample का उद्भव लैटिन भाषा के Exemplum शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है— उदाहरण। इस शाब्दिक अर्थ से भी संकेत मिलता है कि प्रतिदर्श जनसंख्या की कुछ ऐसी इकाईयों का संकलन होता है, जिन्हें जनसंख्या की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है।

इंग्लिश और इंग्लिश (1980) के अनुसार— "प्रतिदर्श जनसंख्या का एक भाग है जो दिए हुए उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधित्व होता है। इसलिए प्रतिदर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिए वैध होता है।"

"Sample: A part of a population, which for the purpose in hand is taken as representative of the whole population, so that certain conclusions based on the sample will be valid for this whole population."

—*Dictionary of Psychological Terms*, **English & English.**

प्रतिचयन प्रतिदर्श चुनने की विधि है, जिसमें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाईयों का चुनाव किया जाता है। प्रतिदर्श की इकाईयों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया प्रतिदर्श उस सम्पूर्ण जनसंख्या या समष्टि (Universe) का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह प्रतिदर्श चुना गया है।

करलिंगर(1973) के अनुसार— "किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधित्व-स्वरूप एक अंश चुन लेने को प्रतिचयन कहते हैं।"

"Sampling is taking any portion of a population or universe, as representative of that population or universe." **—F. N. Kerlinger.**

4.4.1 प्रतिचयन की विधियाँ

प्रतिदर्श का चयन किसी न किसी प्रतिचयन विधि द्वारा किया जाता है। प्रतिचयन प्रक्रिया के लिए तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रत्येक अध्ययनकर्त्ता प्रतिचयन नहीं कर सकता है। वह प्रतिचयन तभी कर सकता है जब उसे प्रतिचयन पद्धतियों का आवश्यक ज्ञान हों या इस क्षेत्र में उसे प्रशिक्षण प्राप्त हो। प्रतिचयन की विधियों को मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(I) यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—यादृच्छिक प्रतिचयन विधियों में वे सारी विधियाँ आती हैं, जिसमें किसी न किसी प्रकार का यादृच्छिकरण शामिल होता है। ऐसी विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- संयोगिक प्रतिचयन
- वर्गबद्ध प्रतिचयन
- गुच्छ प्रतिचयन
- द्विस्तर प्रतिचयन

(II) गैर यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—गैर यादृच्छिक विधि में प्रतिदर्श के सदस्यों का चुनाव उनकी उपलब्धता और शोधकर्ता की सुविधा पर निर्भर करता है अर्थात् शोधकर्ता प्रतिदर्श में उन्हीं सदस्यों को रखता है जिन्हें वह आसानी से प्राप्त कर सकता है। इससे प्रतिदर्श में अधिक सदस्य लिए जा सकते हैं। इन विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
- अंश प्रतिचयन
- आकस्मिक प्रतिचयन
- **सुविधानुसार प्रतिचयन**
- स्वेच्छानुसार प्रतिचयन

4.4.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन

सुविधानुसार प्रतिचयन का प्रयोग सर्वेक्षणात्मक शोध में किया जाता है, जहाँ शोधकर्ता को तथ्य का सस्ता सन्निकटन प्राप्त करना हो। जैसा कि इस विधि के नाम से पता चलता है, इसमें प्रतिदर्श का चयन इसलिए किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। इसे **अव्यवस्थित या आकस्मिक प्रतिचयन** भी कहा जाता है, क्योंकि यह विधि उन लोगों पर लागू होती है जो टहलते हुए अचानक मिल जायें या उन लोगों पर लागू होती है जिसकी शोध में विशेष रुचि हो स्वयं सेवकों का उपयोग सुविधानुसार प्रतिचयन का एक उदाहरण है। इस विधि का प्रयोग परिणामों का सकल आकलन प्राप्त करने के लिए प्राथमिक अनुसन्धान प्रयासों के दौरान किया जाता है। इस विधि से प्रतिदर्श का चयन करने में कोई खर्च या समय व्यर्थ नहीं जाता।

अतः शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से करने का निश्चय किया गया, इस हेतु महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के what's app ग्रुप में गूगल फॉर्म का लिंक प्रेषित कर तथा मोबाइल रखने वाले कुछ विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क कर विद्यार्थियों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया।

4.5 लक्षित प्रतिदर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया—

4.5.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा बाँदा जनपद के अन्तर्गत बाँदा नगर, बबेरू, अतर्रा, पैलानी तथा नरैनी तहसीलें आती हैं, जिसमें से न्यादर्श के चयन के लिए *नरैनी तथा अतर्रा नगर* का चुनाव किया गया।

बुन्देलखण्ड में बाँदा जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है। इस जिले को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोध कार्य किए जाने की आवश्यकता है, जिसको समझते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु बाँदा जनपद का चुनाव किया। साथ ही शोधकर्ता जन्म से ही नरैनी नगर का निवासी है एवं यहीं रहकर अध्ययन कार्य कर रहा है, जिस कारण शोधकर्ता का इस नगर से

भावनात्मक जुड़ाव भी है। अतः शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन में **सुविधानुसार प्रतिदर्श विधि** को अंगीकृत कर, उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के *नरैनी तथा अतर्रा नगर* को चयनित किया गया है।

4.5.2 संस्थाओं का चयन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध **रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरुकता** के अध्ययन से सम्बन्धित है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता द्वारा बाँदा जनपद के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत 103 विद्यार्थियों का चयन सुविधानुसार प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया **(परिशिष्ट–V)** तथा उन्हें विभिन्न समूहों—छात्र-छात्राएँ, प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित विद्यार्थियों में विभाजित किया गया, जिसका विवरण निम्नवत है—

तालिका संख्या 4.5.2.1

न्यादर्श वितरण तालिका

चर	वर्ग	संख्या	कुल संख्या
लिंग	छात्र	39	103
	छात्राएँ	64	
विद्यार्थी स्तर	प्रशिक्षित	40	103
	अप्रशिक्षित	63	

तालिका संख्या 4.5.2.2

लिंग-वार प्रतिदर्श को प्रदर्शित करती तालिका

क्रमसंख्या	महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएँ
1.	अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा	12	23
2.	सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी	27	21
3.	पार्वती महिला महाविद्यालय, बरुवा स्योधा, नरैनी		20
योग		39	64
		103	

तालिका संख्या 4.5.2.3

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के आधार पर विभाजन को प्रदर्शित करती तालिका

क्रमसंख्या	महाविद्यालय का नाम	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित	
		छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ
1.	अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा	7	3	5	20
2.	सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी	14	16	13	5
3.	पार्वती महिला महाविद्यालय, बरुवा स्योधा, नरैनी				20
योग		21	19	18	45
		40		63	

तालिका संख्या 4.5.2.4

राजकीय एवं निजी विद्यार्थियों के आधार पर विभाजन को प्रदर्शित करती तालिका

क्रमसंख्या	महाविद्यालय का नाम	राजकीय		निजी	
		छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ
1.	अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा	12	23		
2.	सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी			27	21
3.	पार्वती महिला महाविद्यालय, बरुवा स्योधा, नरैनी				20
योग		12	23	27	41
		35		68	

4.6 प्रदत्तों का स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन के लिए प्राथमिक स्रोत का ही प्रयोग किया है।
शोध में प्रदत्तों का स्रोत निम्न है—

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थी।

4.7 प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के रूप में विद्यार्थियों की जागरूकता जानने हेतु "रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन जागरूकता मापनी" का प्रयोग कर अनुक्रियायें प्राप्त की गयी हैं। तत्पश्चात उपकरण से प्राप्त अनुक्रियाओं का अंकन किया गया, अतः प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

4.8 शोध उपकरण

शोध उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग करके अनुसन्धान में डाटा एकत्र किया जाता है। यह अध्ययन के लिए डाटा संग्रह का साधन बन जाता है। यह विश्वसनीय और सटीक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में तथ्यों के संकलन के लिए प्रायोगिक विधि में किसी उपकरण/यन्त्र का उपयोग होता है। इसके साथ-साथ निरीक्षणों का भी सहारा लिया जाता है। लेकिन जब अध्ययन प्रयोगात्मक विधि के अतिरिक्त अन्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा किए जाते हैं तो तथ्यों के संकलन में मुख्यतः निम्न उपकरणों का उपयोग करते हैं—

- प्रेक्षण
- साक्षात्कार
- अनुसूची

- **प्रश्नावली**
- समाजमिति
- वैयक्तिक अध्ययन
- व्यक्तिवृत विधि
- वस्तुपरक मापनियाँ

(i) निर्धारण मापनी

(ii) पदांकन मापनी

(iii) चिह्नांकन सूची

- मनोवैज्ञानिक परीक्षण

(i) बुद्धि परीक्षण

(ii) अभियोग्यता परीक्षण

(iii) अभिरुचि सूची

(iv) व्यक्तित्व परीक्षण

- अभिवृत्ति मापनियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है।

4.8.1 प्रश्नावली

प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो शोध समस्या के सम्बन्ध में बनायी जाती है और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाइयों से तथ्यों का संकलन करके शोध समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

गुड और हॉट (1952) के अनुसार, "सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ, प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है जिसे उत्तर दाता स्वयं भरता है।"

"Ingeneral the word questionnaire refers to a device for securing answers to questions by using a form which the respondent fills in himself."

— Goode and Hatt

लुण्डबर्ग (1957) के अनुसार, "मौलिक रूप से प्रश्नावली उद्दीपकों का वह समूह होता है जिसे शिक्षित लोगों के सामने, इन उद्दीपकों के अन्तर्गत उनके मौखिक व्यवहारों का निरीक्षण करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।"

"Fundamentally, the questionnaire is a set of stimuli to which literate people are exposed in order to observe their verbal behaviour under these stimuli."

—Lundberg

4.8.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्ता के समक्ष महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरुकता का अध्ययन करनेके लिए **कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्व-निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।**इसका

निर्माण अध्ययन के लिए आवश्यक है। इस उपकरण का निर्माण अनुसन्धानकर्ता ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है।

4.8.3 स्वनिर्मित प्रश्नावली निर्माण के सोपान

प्रस्तुत शोध हेतु **रनगढ़ दुर्ग के** प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली निर्माण के सोपान निम्नवत हैं—

(i) प्रथम सोपान: सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अनुसन्धानकर्ता द्वारा प्रश्नावली निर्माण से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया गया।

(ii) द्वितीय सोपान: विषय विशेषज्ञों से परामर्श

शोधकर्ता ने प्रश्नावली निर्माण हेतु विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय ली तथा उनके परामर्श से प्रश्नावली के निर्माण के लिए क्षेत्र निर्धारित किए।

(iii) तृतीय सोपान: प्रश्नों का निर्माण

रनगढ़ दुर्ग से सम्बन्धित जागरूकता के अध्ययन हेतु प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित अधिकतम सम्भव प्रश्नों का निर्माण किया गया। इस प्रकार रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरुकता के 21 प्रश्नों का निर्माण किया गया। **(परिशिष्ट—VI)** समस्या के उद्देश्य एवं न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बन्द प्रश्नावली का चयन किया गया। इनमें कथनों को विकल्पात्मक बनाया गया जिसमें चार विकल्प दिए गए, इन चार में से एक विकल्प को चुनना था।

(iv) चतुर्थ सोपान: विशेषज्ञों की राय

प्रश्नावली निर्माण के पश्चात इसे विशेषज्ञों को दिखाया गया। उनके द्वारा निरर्थक एवं दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया तथा कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गए। अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को क्रमवार रखा गया तथा अन्तिम रूप से कुल 16 प्रश्न बने।

(परिशिष्ट—VII)

4.9 परीक्षण का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन रूप में किया जाना था। इस हेतु सर्वप्रथम शोधकर्ता ने सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी के प्राचार्य डॉ० डी० सी० गुप्ता से मिलकर उन्हें इस जागरूकता प्रश्नावली के विषय में बताया। उन्होंने इसे प्रशासित करने की अनुमति दी तथा प्रश्नावली के लिंक को अपने व्हाट्स एप नम्बर पर भेजने के लिए कहा तथा उन्होंने इस लिंक को अपने महाविद्यालय के विद्यार्थियों के ग्रुप में भेज दिया।

इसी प्रकार शोधकर्ता *पार्वती महिला* महाविद्यालय, बरुवा स्योधा, नरैनी में गया और महाविद्यालय के प्राचार्य राजेश पाण्डेय से मिलकर उन्हें इस जागरूकता प्रश्नावली के विषय में बताया। उनसे प्रश्नावली को प्रशासित करने की अनुमति प्राप्त की। उनकी अनुमति से शोधकर्ता ने स्वयं कक्षाओं में जाकर प्रशिक्षुओं को इस प्रश्नावली के विषय में समझाया तथा अपने समक्ष ही प्रश्नावली को छात्रों के ग्रुप में भेजकर ऑनलाइन भरवाया।

इसी प्रकार शोधकर्ता *अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा* के विभागाध्यक्ष से मिला तथा उनकी सहायता से प्रश्नावली को विद्यार्थियों के व्हाट्स एप ग्रुप में भेजकर प्रश्नावली को भरवाया।

गूगल फॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों के प्रत्युत्तर शोधार्थी को Gmail द्वारा प्राप्त हुए। कुछ विद्यार्थियों ने गूगल फॉर्म को एक से अधिक बार भर दिया। अतः उनके द्वारा भरे गए प्रथम गूगल फॉर्म को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे विद्यार्थियों ने भी गूगल फॉर्म भरा जो शोध हेतु चयनित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् नहीं थे। ऐसे विद्यार्थियों को पहचानकर शोधकर्ता द्वारा उन्हें न्यादर्श में सम्मिलित नहीं किया गया। न्यादर्श में दिनांक 05/09/2023 तक प्राप्त विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार अन्तिम रूप से कुल 103 विद्यार्थियों की न्यादर्श के रूप में अनुक्रियायें प्राप्त हुई।

(चित्रावली परिशिष्ट—VIII)

4.10 परीक्षण का फलांकन

शोधकर्ता ने प्रश्नावली का निर्माण गूगल फॉर्म के माध्यम से क्विज के रूप में किया था जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित था। सही उत्तर के लिए 1 अंक तथा गलत उत्तर देने पर 0 अंक प्रदान किया गया। गूगल फॉर्म में response पर क्लिक करने पर वह स्वतः ही उसका फलांकन करके परिणाम प्रस्तुत कर देता है।

(विस्तृत विवरण परिशिष्ट—X)
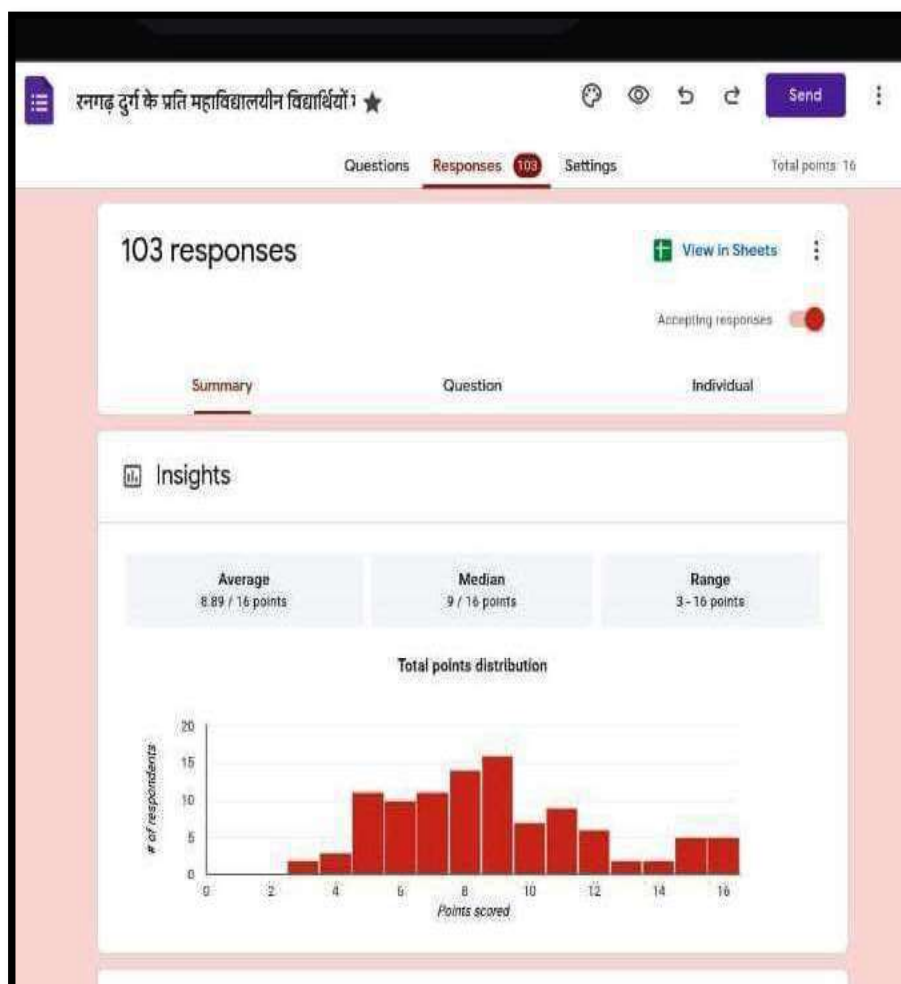
4.12 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकी, गणित की वह शाखा है, जिसमें आँकड़ों का संग्रहण, प्रदर्शन, वर्गीकरण और उसके गुणों का आकलन तथा अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी एक गणितीय विज्ञान है, जिसमें किसी वस्तु/अवयव/तन्त्र/समुदाय से सम्बन्धित आँकड़ों का संग्रह, विश्लेषण, व्याख्या या स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की जाती है।

एम० जी० कैण्डाल के अनुसार— "सांख्यिकी प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने का विज्ञान है।"
"Statistics is the science of collecting, analyzing and interpreting numerical data."

—M.G. Kendall.

स्लिगमैनके अनुसार—"सांख्यिकी वह विज्ञान है जिसमें किसी क्षेत्र विशेष की जानकारी हेतु संख्यात्मक आँकड़ों के संकलन, वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण, तुलना और व्याख्या करने की विधियों का वर्णन होता है।"
"Statistics is the science which deals with the methods of collecting, classifying, presenting, comparing and interpreting numerical data collected to throw some light on any sphere of inquiry."

—Sligman.

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध में प्रश्नावली की सहायता से संग्रहित किए गए आँकड़ों से प्राप्त सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इनको एक निश्चित रूप प्रदान करना था। इसके लिए शोधकर्ता ने सामान्य सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया।

शोध के उद्देश्य तथा आँकड़ों की प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया—

- प्रतिशत
- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- क्रान्तिक अनुपात
- दण्ड आरेख

4.12.1 प्रतिशत (Percentage)

प्रतिशत गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने का एक तरीका है। इसे (%) द्वारा व्यक्त किया जाता है। प्रतिशत को ज्ञात करने का सूत्र निम्नवत है—

प्रतिशत(%) = (प्राप्तांक/ पूर्णांक)×100

4.12.2 मध्यमान (Mean)

मध्यमान को समान्तर माध्य या अंकगणितीय माध्य भी कहा जाता है।

किंग के अनुसार—"समंक माला के पदों के योग में उनकी संख्या से भाग देने पर जो अंक प्राप्त होता है उसी को अंकगणितीय माध्य या मध्यमान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

"The arithmetic average may be defined as the sum of aggregate of a series of items, divided by their number."

—W. I. King

मध्यमान प्राप्तांकों का केन्द्रीय मान होता है जो सभी आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यमान के आधार पर एक समूह की दूसरे समूह से तुलना की जाती है।

मध्यमान की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$\overline{X} = \frac{\sum X}{N}$$

यहाँ—

$\bar{x}$ = मध्यमान

$\sum x$ = प्राप्तांकों का योग

N = विद्यार्थियों की कुल संख्या

मध्यमान की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) किसी भी संख्या समूह का मध्यमान निकालने के लिए एक्सेल के**AVERAGE** Function का प्रयोग करते हैं। एक्सेल स्प्रेडशीट में संख्याओं को प्रविष्ट करके जहाँ पर एवरेज जानना चाहते हैं, वहाँ पर क्लिक करें।
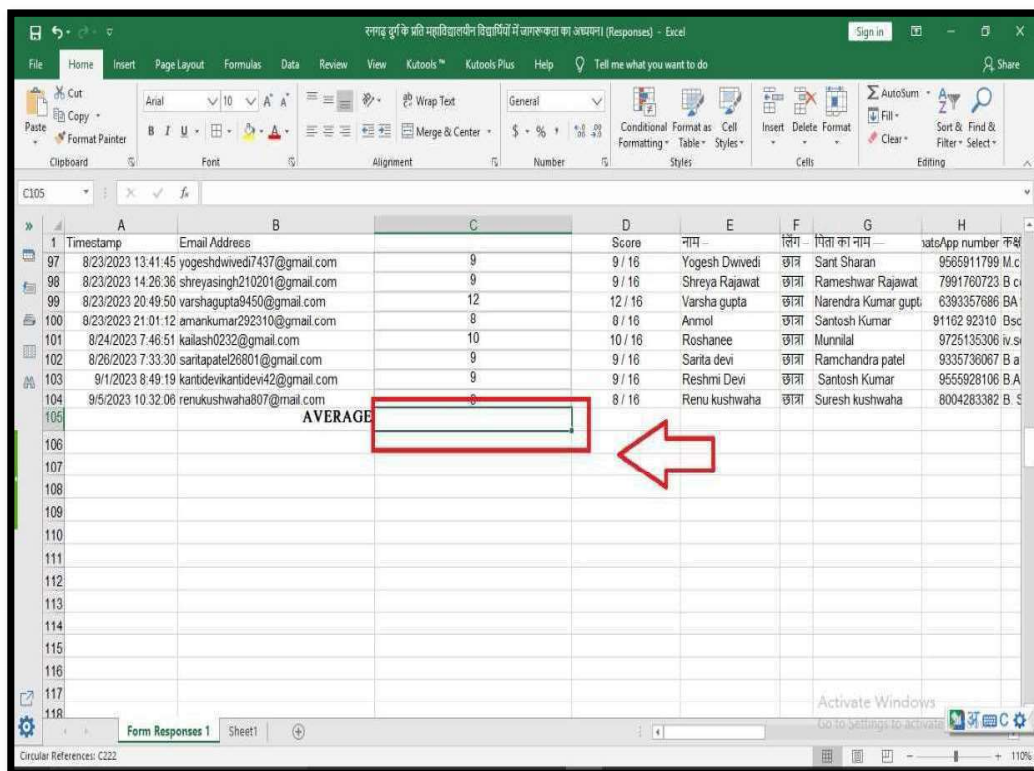
(ii) Formulas में क्लिक करें और 'Insert Function' tab को चुनें।
एक्सेल स्प्रेडशीट की row या column में enter करें।
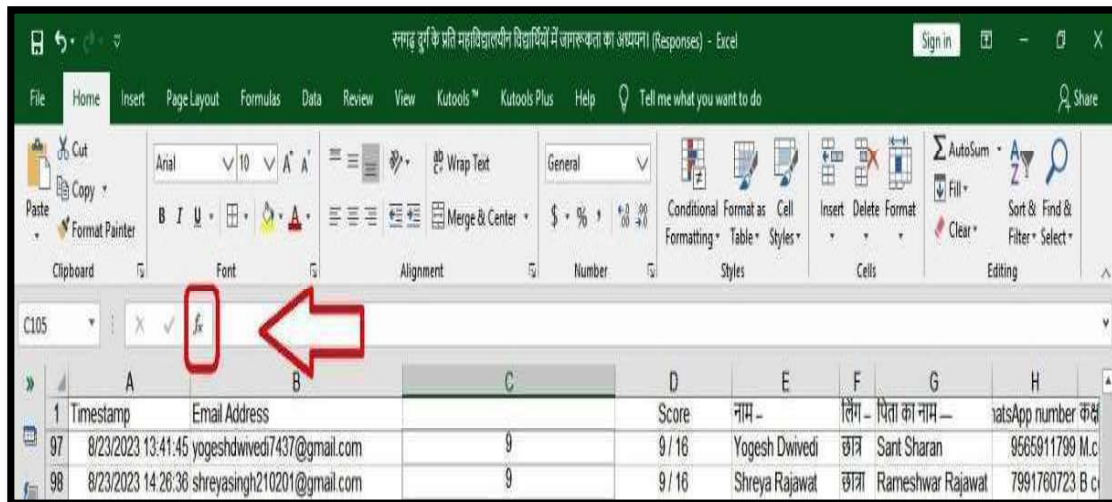
(iii) नीचे स्क्रॉल करें और**AVERAGE** Function चुनें

।
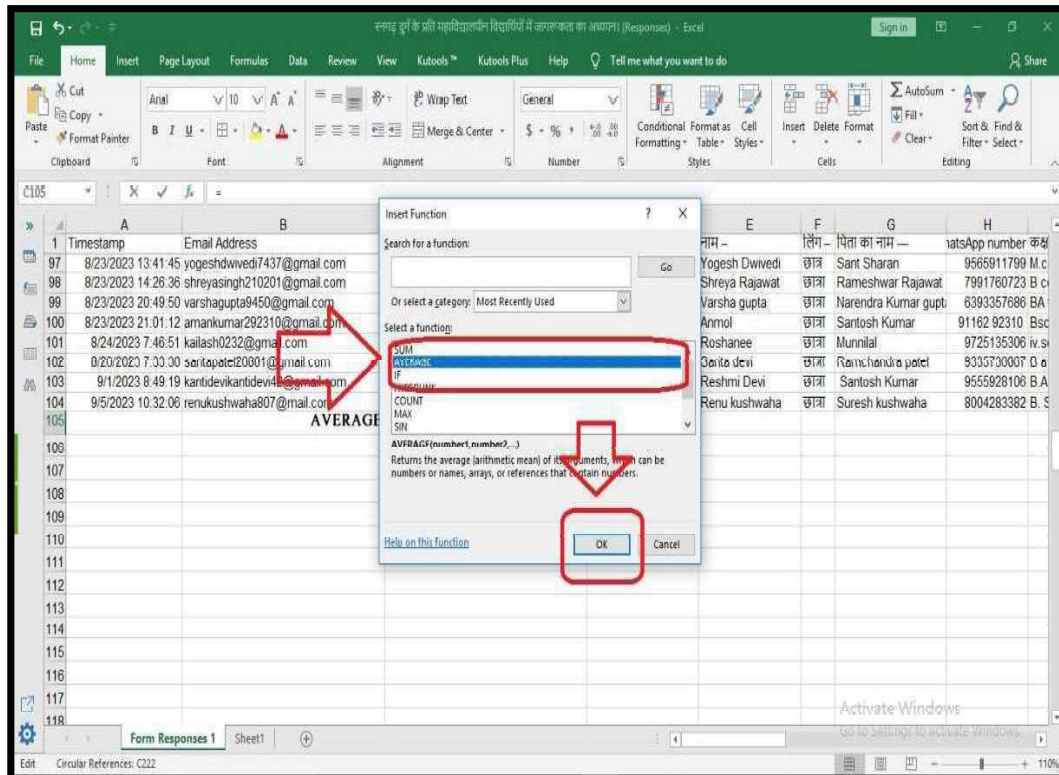
(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए, एक cell range (जैसे—C2:C104) enter करें और ok क्लिक करें।
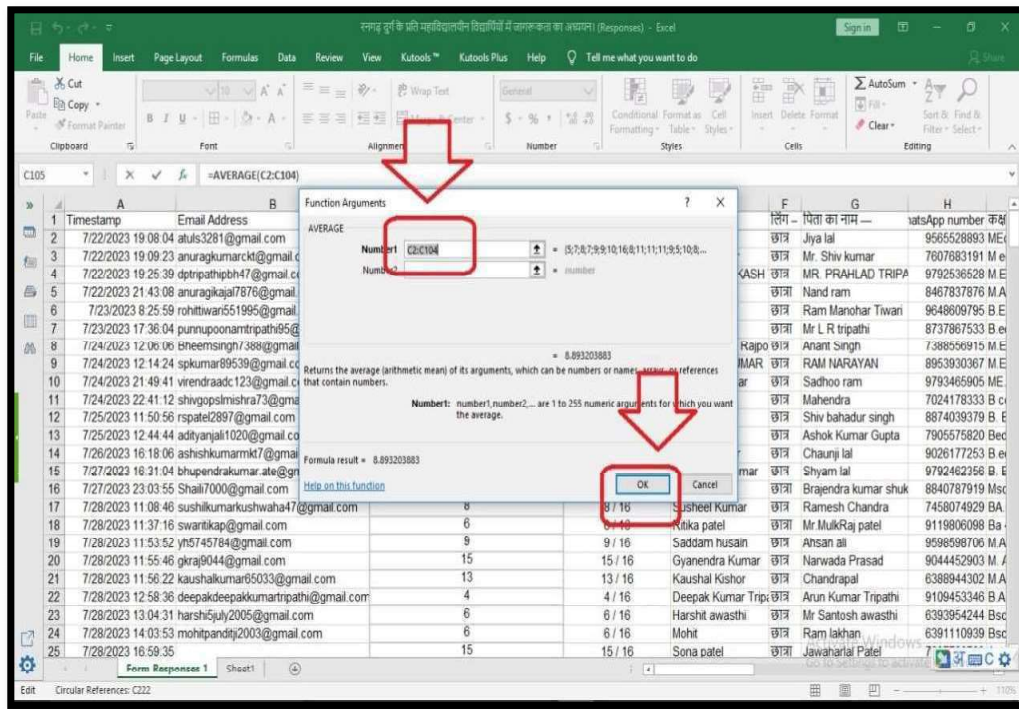
(v). अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का मध्यमान (average) नजर आएगा।
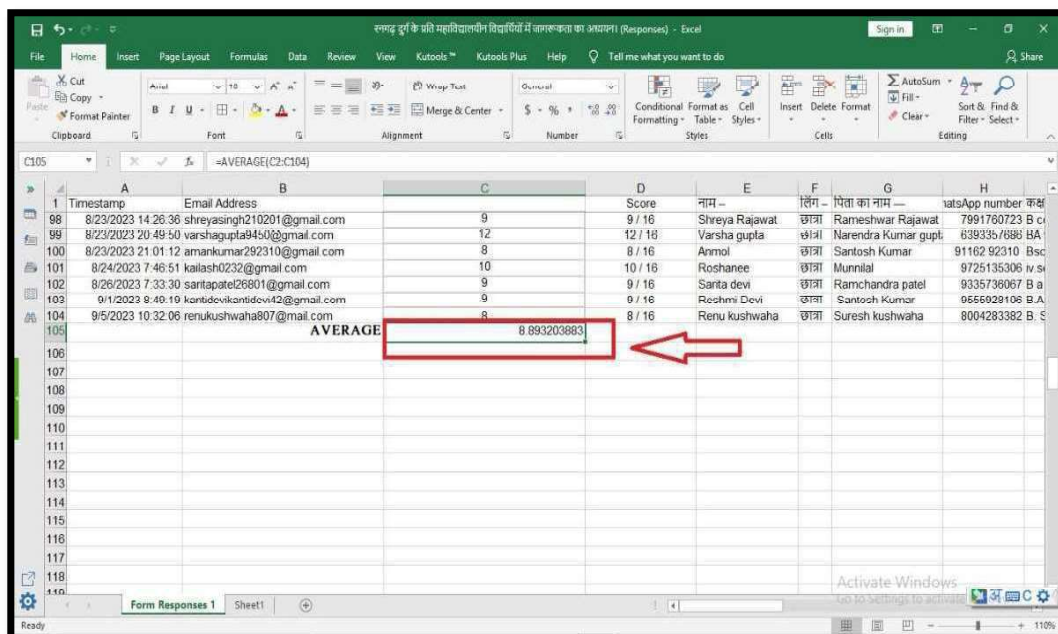
जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जाएगी फिर आप 'Insert Function' feature process का इस्तेमाल करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे इस सूत्र को type कर सकते हैं—

- Mean- "=AVERAGE (cell range)"
  e.g. "AVERAGE (C2:C104)"

4.12.3 प्रमाप विचलन (Standard Deviation)

प्रमाप विचलन समंक माला के विभिन्न पदों के समान्तर माध्य से लिए गए विचलनों के वर्गों के समान्तर माध्य का वर्गमूल होता है।

एलहान्स के अनुसार— "मानक विचलन अंकगणितीय माध्य से मापे गए विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल होता है।" "Standard deviation is the square root of the arithmetic average of the squares of deviations measured from the mean."

—Elhance.

प्रमाप विचलन को मानक विचलन या प्रामाणिक विचलन भी कहा जाता है। इसका संकेताक्षर σ है।
प्रमाप विचलन की गणना करने का सूत्र निम्नलिखित है—

$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum (x - \text{mean})^2}{n}}$$

- x is a set of numbers
- mean is the average of the set of numbers
- n is the size of the set
- σ is the standard deviation

प्रमाप विचलन की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) प्रमाप विचलन की गणना के लिए **STDEVP** Function का प्रयोग करें।
आपके कर्सर को उस जगह पर रखें, आप जहाँ इसे देखना चाहते हैं।
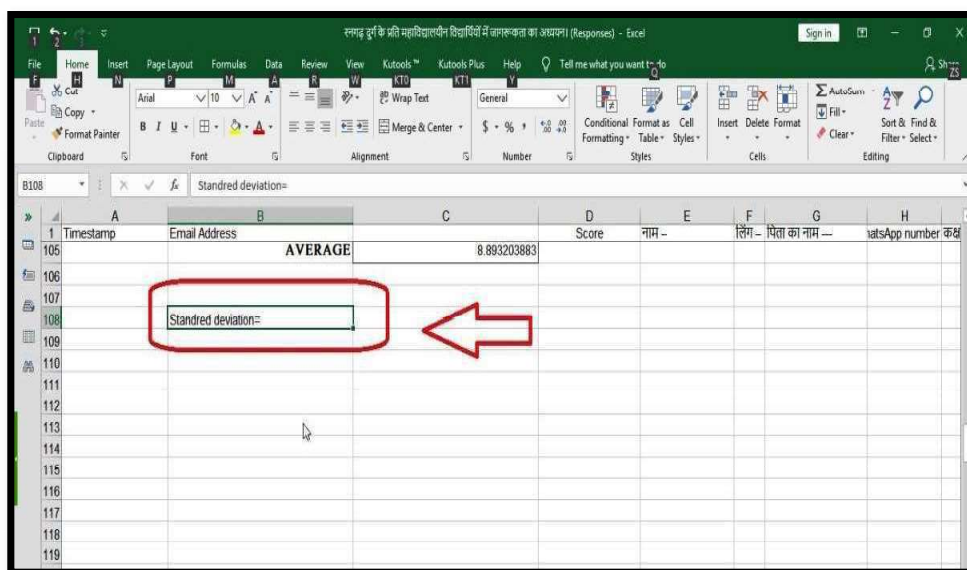
(ii). FORMULAS पर क्लिक करें और एक बार फिर से**Insert Function tab** चुनें।
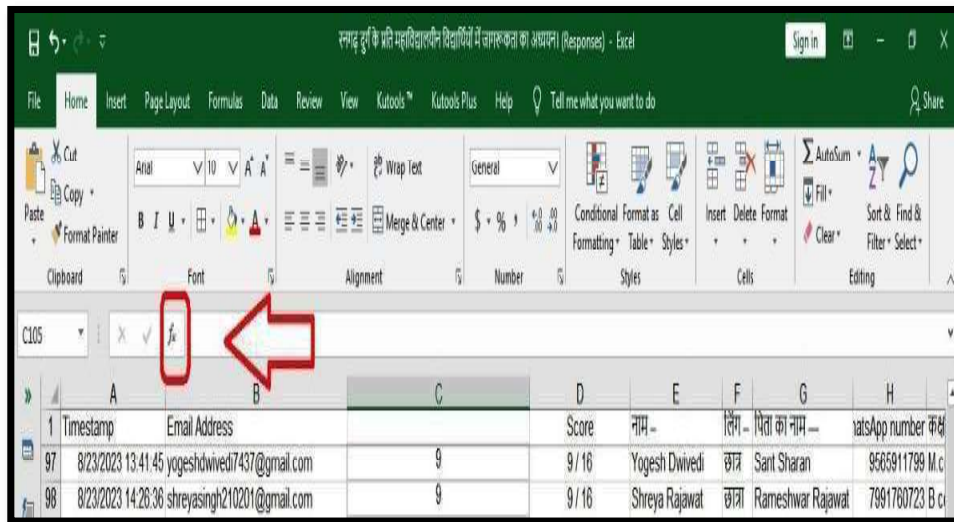
(iii). Dialog box पर scroll down करें और**STDEVP** Function चुनें।
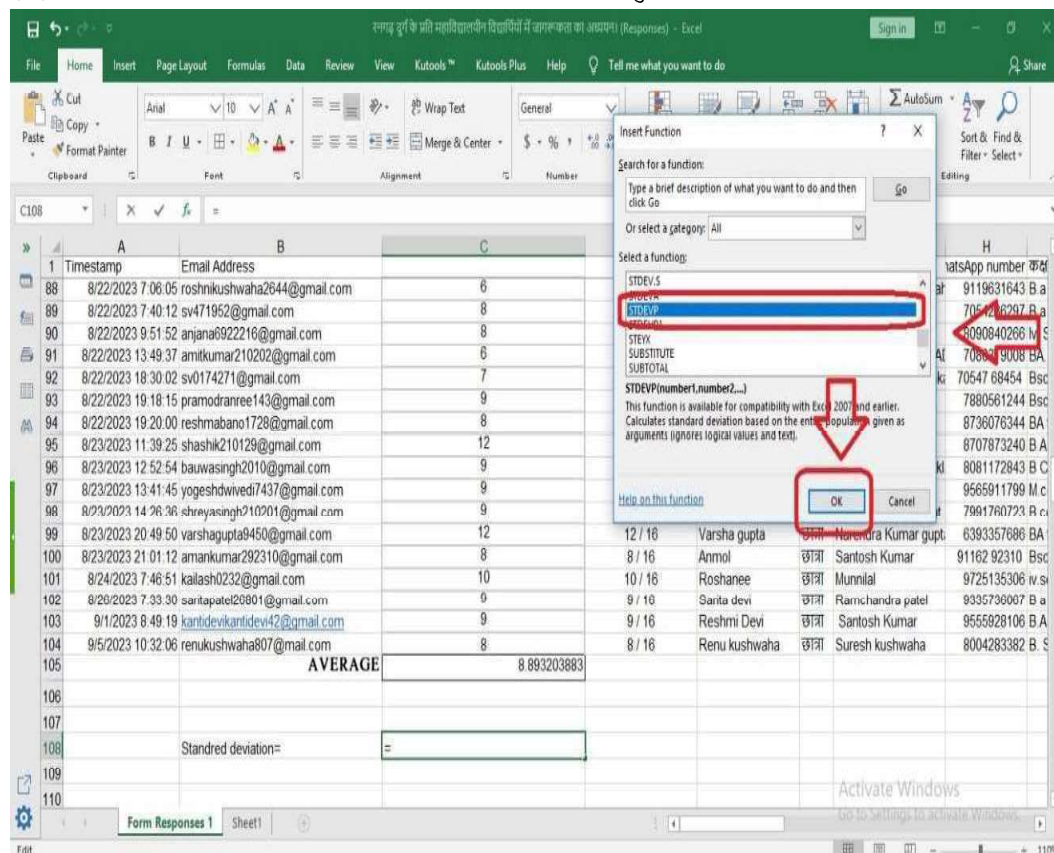
(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए cell range enter करें और ok करें।
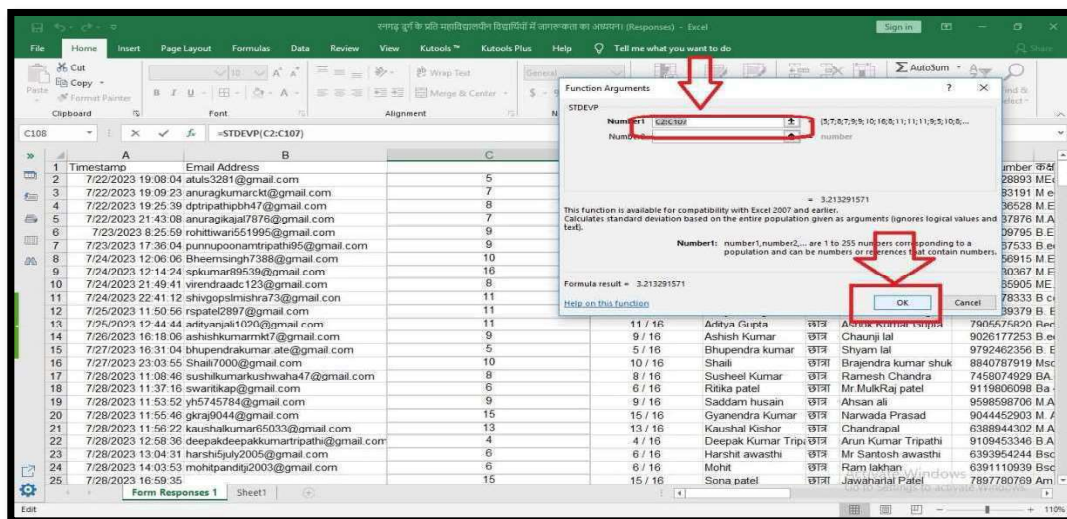
(v) अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का प्रमाप विचलन नजर आएगा।
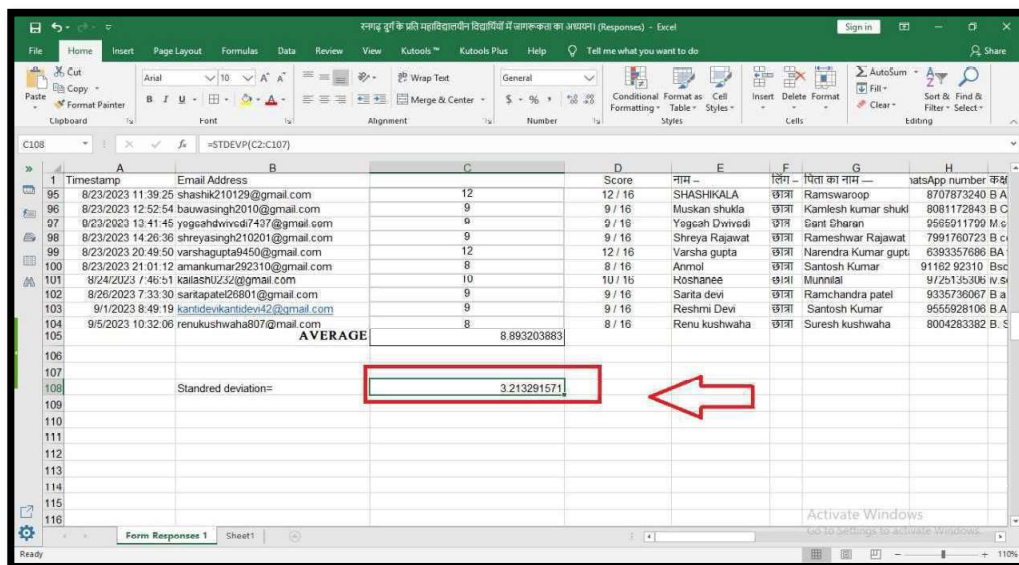
जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जाएगी फिर आप Insert Function feature process का प्रयोग करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे सूत्र को type कर सकते हैं।

- Standard Deviation- "STDEVP (Cell range)

  e.g. "STDEVP (C2:C104)"

4.12.4 वैषम्यतातथा कुकुदता (Skewness and Kurtosis)

वैषम्यता से तात्पर्य सामान्य वक्र में होने वाले अपसरण से है, जो किसी जनसंख्या के माध्य और माध्यिका में होने वाले अंतर से उत्पन्न होता है। सामान्य वक्र में माध्य, माध्यिका तथा बहुलांक वक्र की आधार रेखा के मध्य एक ही बिन्दु पर पड़ते हैं तथा इन तीनों का मान भी संख्यात्मक रूप से भी बराबर होता है। इसके फलस्वरूप सामान्य वक्र का चित्र काफी सन्तुलित दिखाई पड़ता

है क्योंकि इसका दायाँ और बायाँ भाग समान ढाल वाला और एक दूसरे के बराबर होता है। परन्तु जब वितरण सामान्य न होकर विषम होता है तो माध्य तथा माध्यिका एक ही बिन्दु पर न पड़कर अलग-अलग पड़ते हैं और प्राप्तांकों का केन्द्रीकरण वितरण के बायीं या दायीं ओर हो जाता है। सामान्य वक्र में माध्य और माध्यिका दोनों बराबर होते हैं इस लिए विषमता शून्य होती है, परन्तु विषम वितरण में माध्य और माध्यिका में अन्तर होता है, यह अन्तर जितना ज्यादा होता है; विषमता उतनी अधिक होती है।

'विषमता' को इन दो 'सूत्रों' द्वारा ज्ञात किया जा सकता है–

(क) $Sk = \frac{3(\text{माध्य} - \text{मध्यिका})}{\sigma}$

यहाँ – Sk = विषमता, σ = मानक विचलन।

(ख) $Sk = \frac{(P_{99} + P_{10})}{2} - P_{50}$

जहां, SK = विषमता

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{10} = प्रतिशतता 10

P_{50} = प्रतिशतता 50 या मध्यिका

सामान्य वैषम्यता प्रसार

- If skewness is less than -1 or greater than 1, the distribution is highly skewed.
- If skewness is between -1 and -0.5 or between 0.5 and 1, the distribution is moderately skewed.
- If skewness is between -0.5 and 0.5, the distribution is approximately symmetric.

एक 'आवृत्ति वितरण वक्र', प्रसामान्य वक्र की तुलना में कितना **चपटा** अथवा **शिखरीय** है, इसकी जानकारी **कुकुदता** से मिलती है।

'ककुदता या 'कुर्टोसिस' को नीचे दिये गये 'सूत्र' द्वारा निकाला जा सकता है।

$Ku = \frac{Q}{(P_{90} + P_{10})}$ (प्रतिशत के आधार पर वक्रता को निकालना।)

जहां, Ku = ककुदता

Q = चतुर्थक विचलन

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{100} = प्रतिशतता 10

सामान्य कुकुदता प्रसार

A standard normal distribution has kurtosis of 3 and is recognized as mesokurtic. An increased kurtosis (>3) can be visualized as a thin "bell" with a high peak whereas a decreased kurtosis corresponds to a broadening of the peak and "thickening" of the tails.

ऑनलाइन वैषम्यता और कुकुदता ज्ञात करने के चरण—

Step 1: सबसे पहले गूगल क्रोम ब्राउज़र को खोलें।
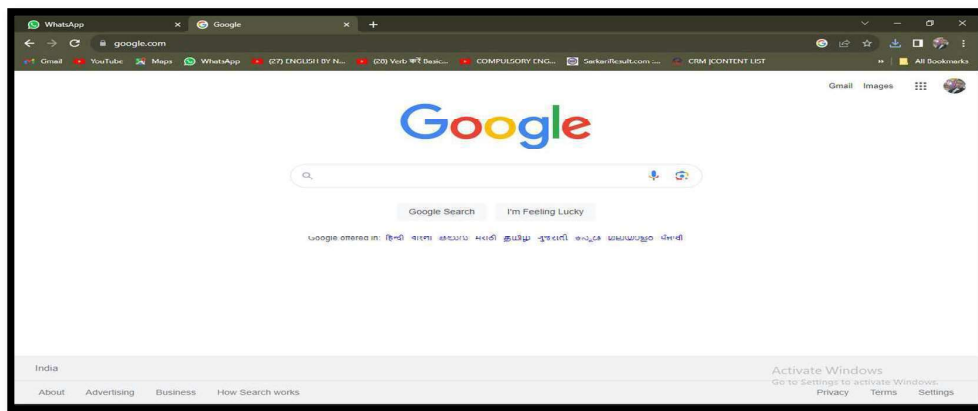
Step 2: Online Skewness and Kurtosis ungrouped data खोजें।
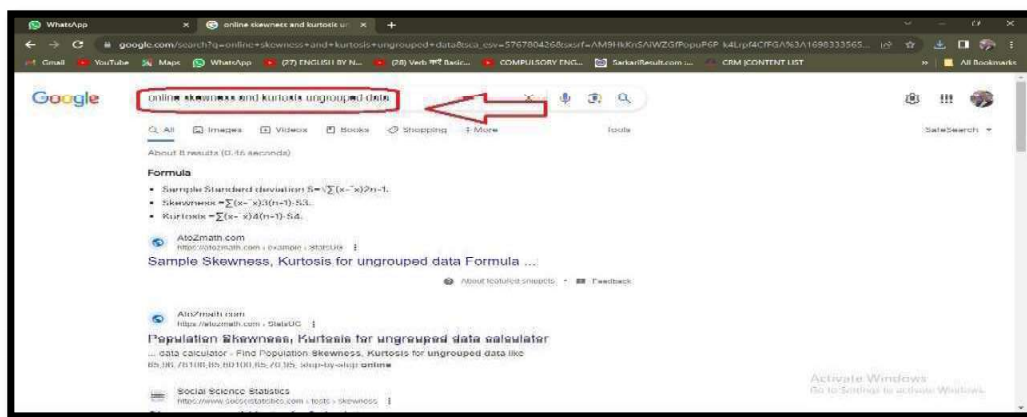
Step 3: पहले सर्च रिजल्ट (A to Z math) को खोलें।
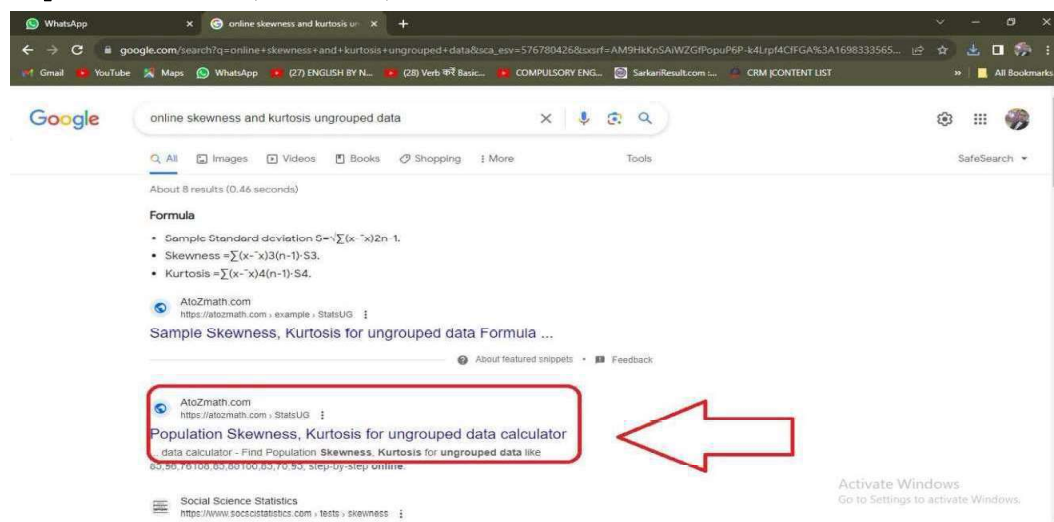
Step 4: Data enter करें।
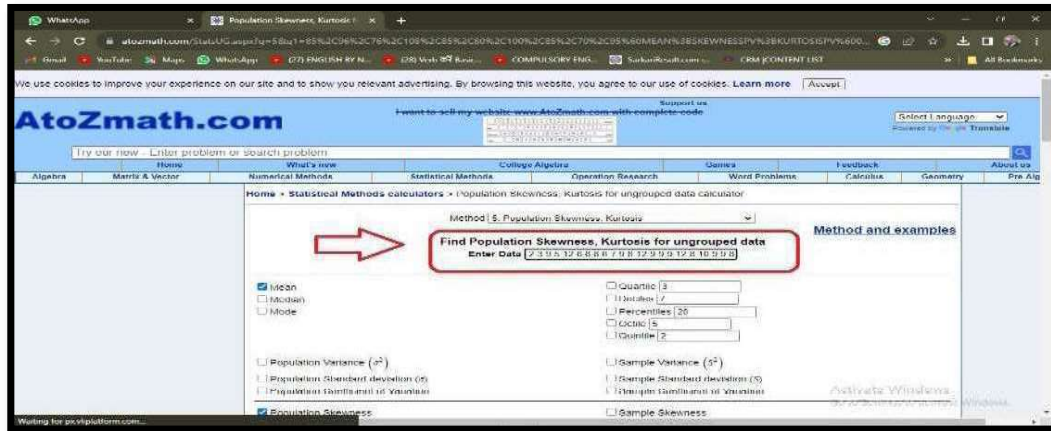
Step 5: Mean, Skewness तथा Kurtosis option को select करें।

Method and examples

Find Population Skewness, Kurtosis for ungrouped data

Enter Data 85,96,76,108,85,80,100,85,70,95

☑ Find Mean ☐ Find Quartile 3
☐ Find Median ☐ Find Deciles 7
☐ Find Mode ☐ Find Percentiles 20

☐ Find Population Variance (σ^2) ☐ Find Sample Variance (S^2)
☐ Find Population Standard deviation (σ) ☐ Find Sample Standard deviation (S)
☐ Find Population Coefficient of Variation ☐ Find Sample Coefficient of Variation

☑ Find Population Skewness ☐ Find Sample Skewness
☑ Find Population Kurtosis ☐ Find Sample Kurtosis

☐ Find Geometric mean ☐ Find Harmonic mean

☐ Find Mean deviation ☐ Find Quartile deviation
☐ Find Decile deviation ☐ Find Percentile deviation

☐ Five number summary ☐ Box and Whisker Plots

Step 6: Find पर click करें।

Step 7: आपका Result आपके सामने Open हो जाएगा।

4.12.5 सामान्य सम्भाव्यता वक्र (Normal Probability Curve)

सामान्य सम्भाव्यता वक्र को सामान्य वक्र भी कहते हैं। इसका विकास 'त्रुटि के नियम' के आधार पर हुआ है। इस वक्र के जन्मदाता **ए० डी०मोरे** कहे जाते हैं। वे एक फ्रेंच गणितज्ञ थे और उन्होंने जुएं के खेल में संयोग की घटना की व्याख्या सामान्य सम्भाव्यता के आधार पर की।खगोलविद **कार्ल फ्रेडरिक गॉस** ने भी भौतिक विज्ञान में निरीक्षण सम्बन्धित त्रुटियों की व्याख्या सामान्यता के आधार पर की तथा त्रुटियों का सामान्य वक्र बनाया।

सामान्य वितरण की विशेषता यह होती है कि वितरण के मध्य में सर्वाधिक प्राप्तांक होते हैं तथा क्रमशः दोनों किनारों पर घटते जाते हैं। इसी सामान्य वितरण के आधार पर जो वक्र बनता है, उसे सामान्य वितरण वक्र या सामान्य सम्भाव्यता वक्र या सामान्य वक्र कहते हैं। यह वक्र सममित होता है तथा इसकी ऊँचाई मध्य में सर्वाधिक होती है। दोनों किनारों की ओर इसकी ऊँचाई घटती जाती है परन्तु आधार रेखा को स्पर्श नहीं करती है।

सामान्य सम्भाव्यता वक्र की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

Step 1: अपने कंप्यूटर में Kutool for Excel डाउनलोड करके इंस्टॉल कर लें।

Step 2: Ms Excel में first cell lowest range से लेकर highest range तक data enter करें, तथा पूरा डाटा सेलेक्ट कर लें।

Step 3: Kutoolsपर click करCharts का चयन करें।
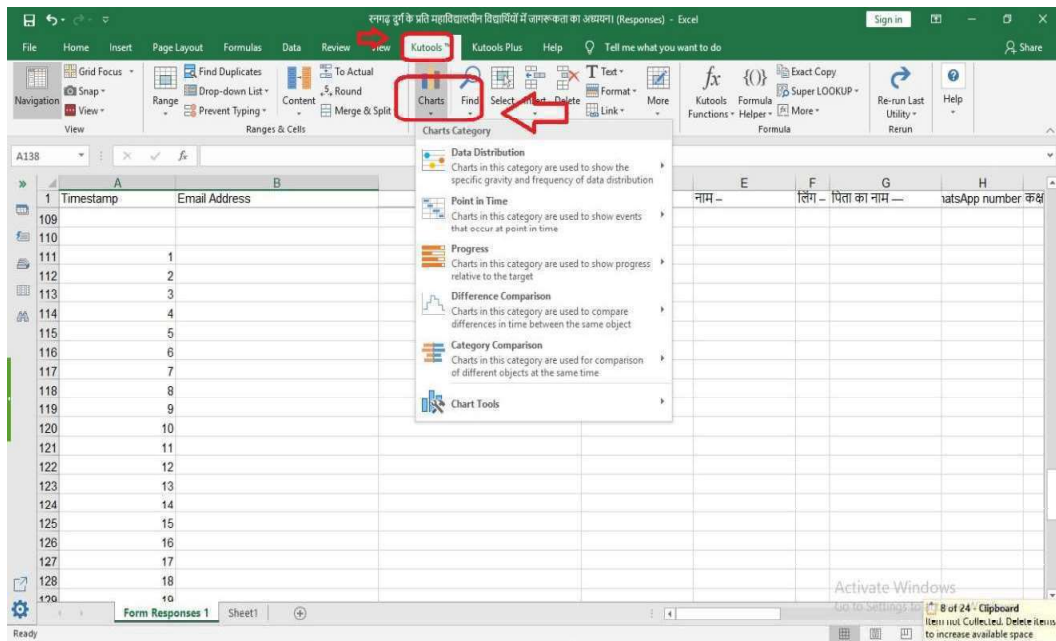
Step 4: Data Distribution पर Click करें तथा Normal Distribution/ Bell Curve को चुनें।
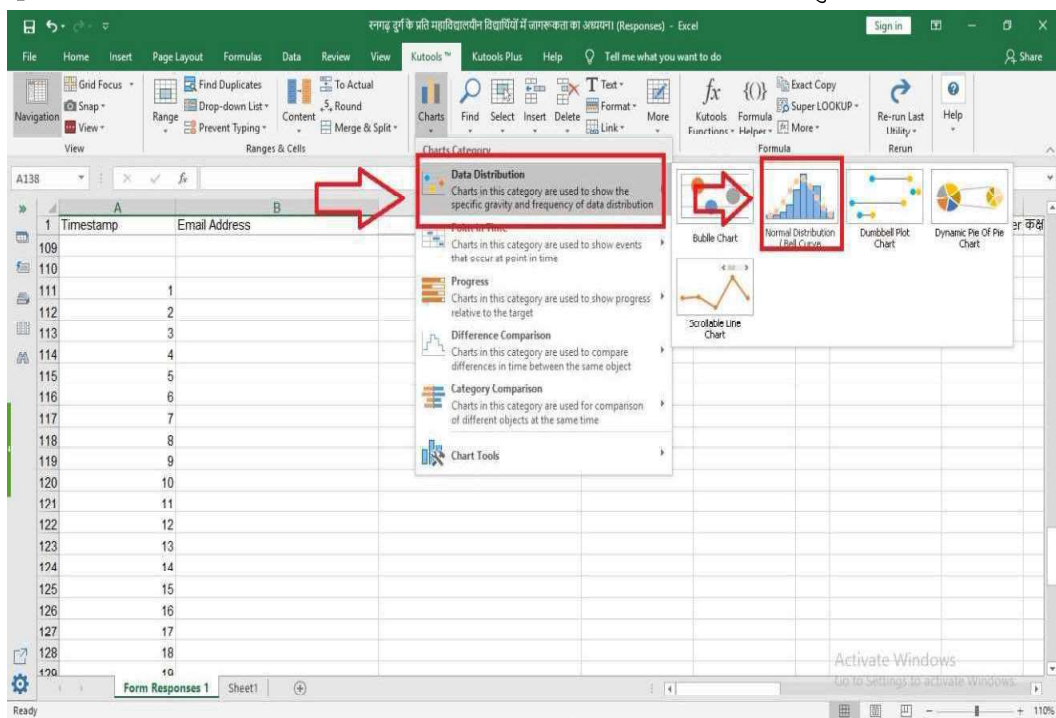
Step 5: Ok पर Click करें।
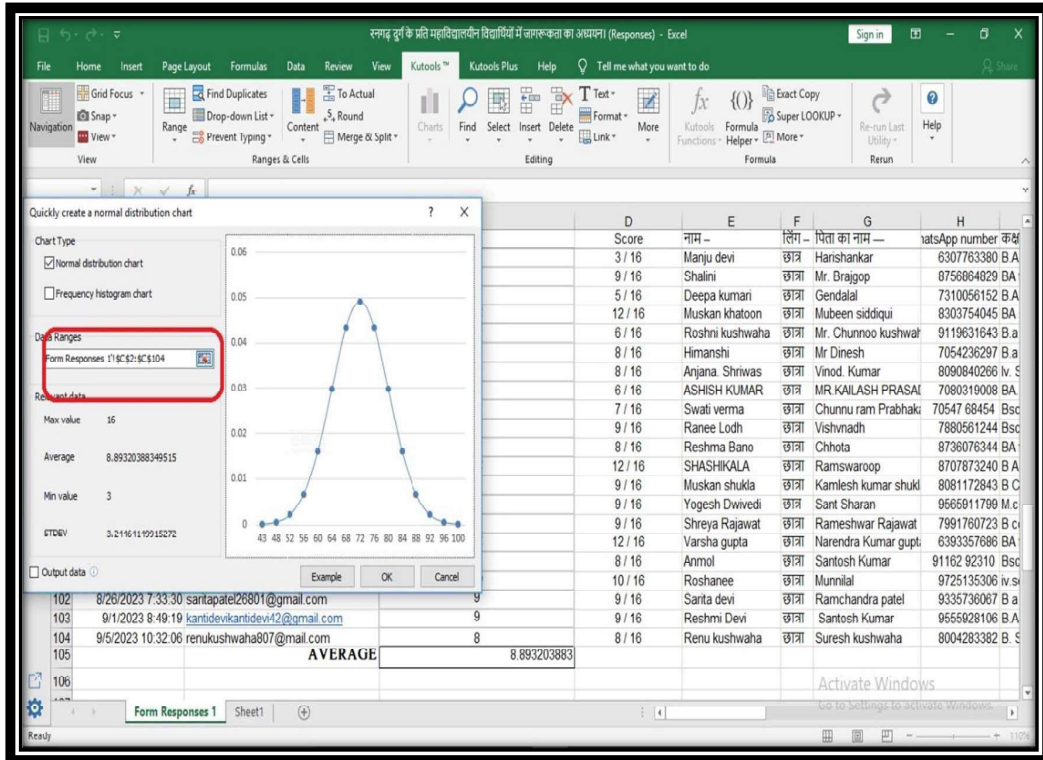
Step 6: अब आपको NPC नजर आएगा।
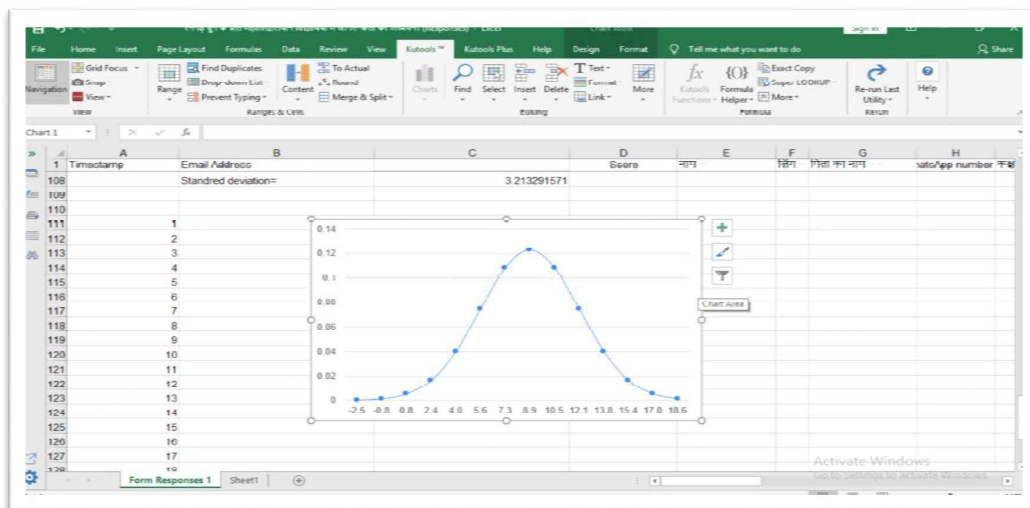
4.12.6 क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio)

दो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब समूह के प्राप्तांकों की संख्या 30 या 30 से अधिक होती है। क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$t = \frac{(X_1 - X_2)}{\sqrt{\frac{(S_1)^2}{n_1} + \frac{(S_2)^2}{n_2}}}$$

जहाँ–

X_1 = पहले समूह का मध्यमान

X_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

n_1 = पहले समूह का आकार

n_2 = दूसरे समूह का आकार

S_1 = पहले समूह का प्रमाप विचलन

S_2 = दूसरे समूह का प्रमाप विचलन

स्वतन्त्रता की कोटि (df) को सूत्र– $df = (N_1+N_2) - 2$ द्वारा ज्ञात किया गया है। क्रान्तिक अनुपात गणना मान की सार्थकता टी-तालिका में .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान से तुलना करके ज्ञात किया जाता है।

क्रान्तिक अनुपात की online गणना के चरण—

Online माध्यम से क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित चरणों में करते हैं—

Step 1: सर्वप्रथम Google chrome browser को open करते हैं।
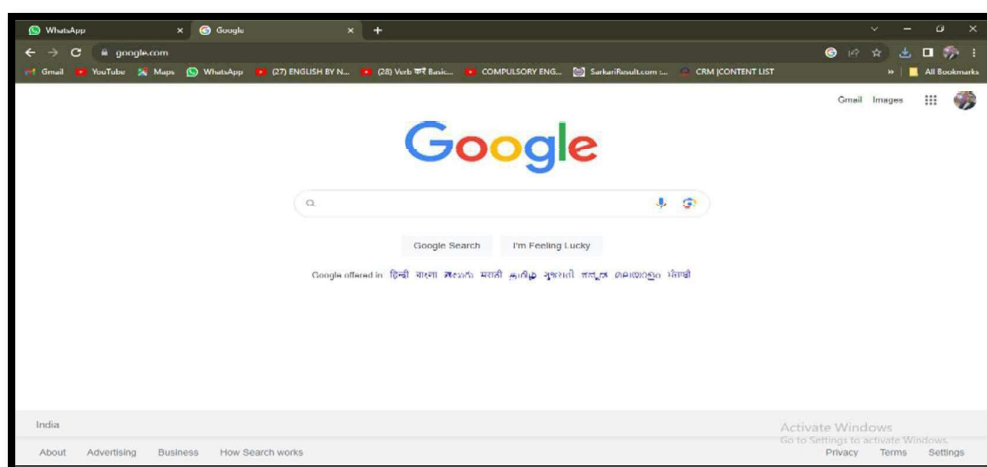
Step 2: Chrome में online t-test calculator search करते हैं।
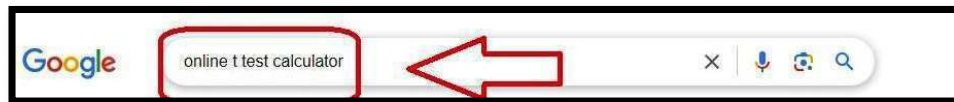
Step 3: विभिन्न search results में से प्रथम calculator (graph pad) को open करते हैं।
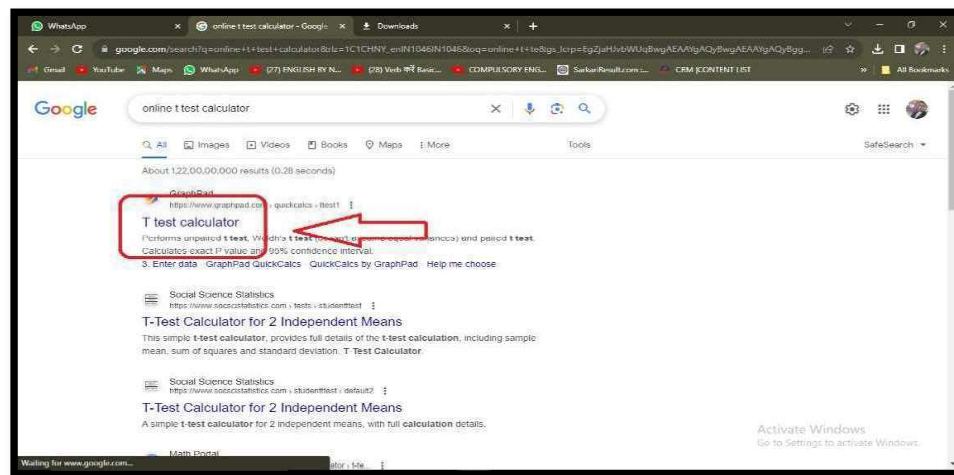
Step 4: Mean, S.D. तथा N Data fill करने वाले option पर क्लिक करते हैं।
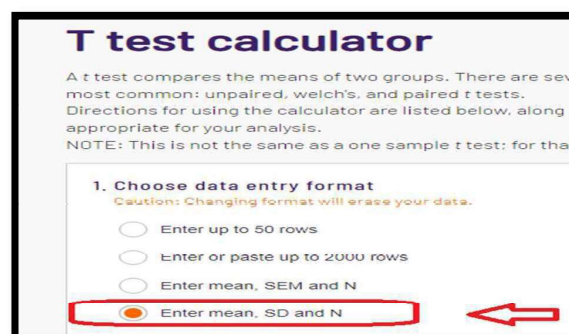
Step 5: Welch's unpaired t-test को चुनते हैं।
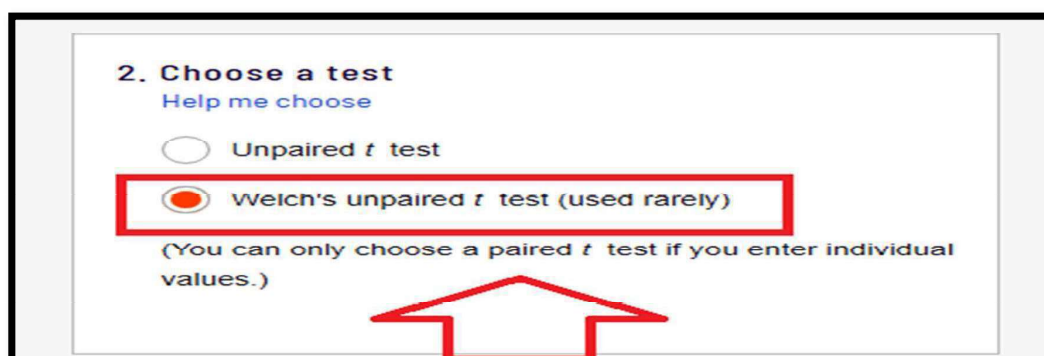
Step 6—आपके सामने data enter करने वाला option आएगा। यहाँ पर प्रश्न में उपलब्ध data enter करते हैं। Group one में पहले समूह का data तथा Group two में दूसरे समूह का data enter करते हैं।

Step 7— परिणाम देखने के लिए calculate now पर क्लिक करते हैं।

आपका परिणाम निम्न प्रकार दिखायी देगा—

Welch *t* test results

P value and statistical significance:
The two-tailed P value equals 0.8127
By conventional criteria, this difference is considered to be not statistically significant.

Confidence interval:
The mean of bogs minus girls equals -0.15825320500
95% confidence interval of this difference: From -1.48417456063 to 1.16766815063

Intermediate values used in calculations:
t = 0.2377
df = 76
standard error of difference = 0.666

Review your data:

Group	bogs	girls
Mean	8.79487179500	8.95312500000
SD	3.35260700100	3.14955198900
SEM	0.53684676950	0.39369399863
N	39	64
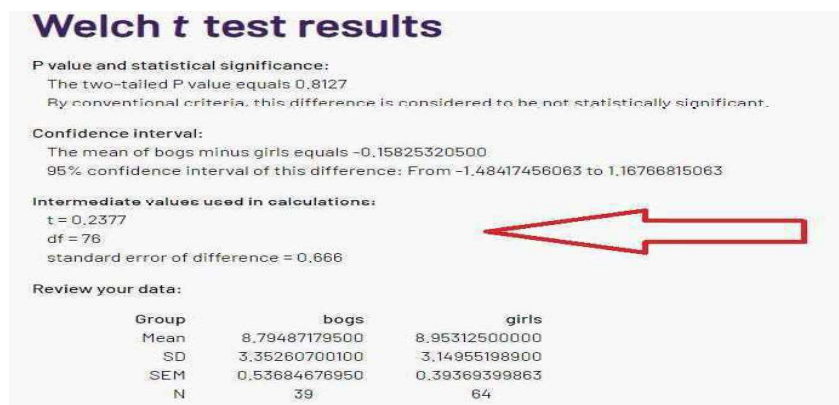
4.12.7 दण्ड आरेख (Bar Graph)

जब प्राप्त आँकड़ों को ग्राफ पेपर पर खड़े स्तम्भों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है तो उसे दण्ड आरेख या स्तम्भ आरेख कहते हैं। इसका प्रयोग सामान्यतः स्कूलों में छात्रों और शिक्षकों की संख्या और साक्षर-निरक्षरों की संख्या आदि स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। दण्ड आरेख के द्वारा दो या दो से अधिक समूहों की मध्यमान योग्यता को भी स्पष्ट किया जा सकता है। दण्ड आरेख लम्बवत या क्षैतिज किसी भी दिशा में बनाए जा सकते हैं परन्तु सामान्यतः इन्हें लम्बवत ही बनाया जाता है।

पंचम अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

- ❖ रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन
- ❖ रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन
- ❖ रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण
- ❖ रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन छात्र छात्राओं की जागरूकता परीक्षण
- ❖ रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन राजकीय एवं निजी विद्यार्थियों कीजागरूकता परीक्षण

अध्याय पञ्चम
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध-विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचन करना है। प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकी गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

5.1 रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

तालिका संख्या 5.1.1

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
छात्र	39	8.794871795	8	3.352607001	0.5907	2.6688
छात्राएँ	64	8.953125	9	3.149551989	0.5113	2.668
कुल विद्यार्थी	103	8.893203883	9	3.213291571	0.5408	2.6703
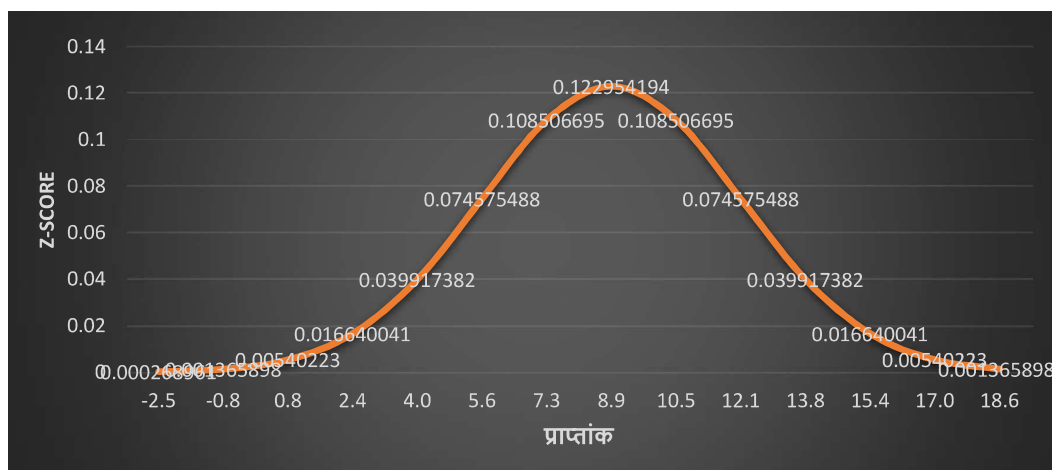
चित्र संख्या 5.1.1

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण— छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंको के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.54 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.6703 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य वितरण के लगभग अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।
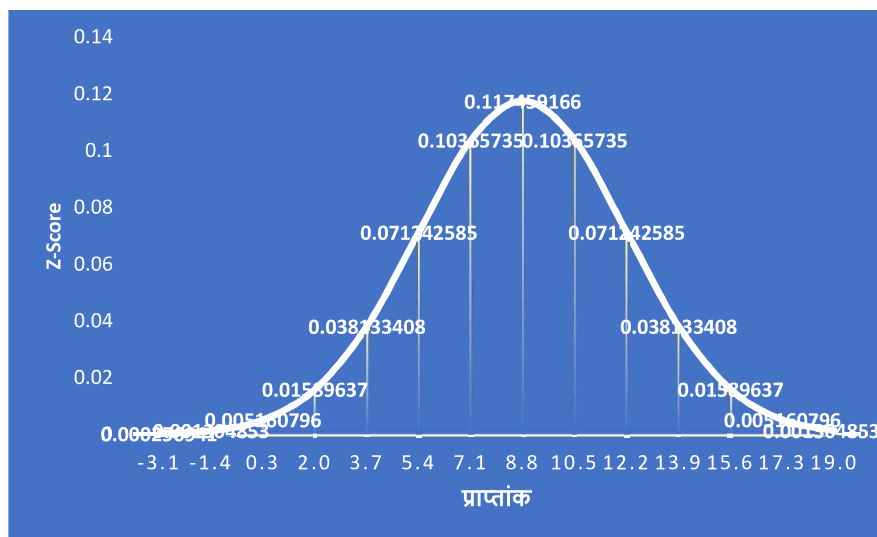
चित्र संख्या 5.1.2

छात्रों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्रों का मध्यमान 8.794871795 तथा प्रमाप विचलन 3.352607001 है। छात्रों के लिए वैषम्यता का मान 0.5907 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 से 0.5के मध्य होता है, तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.6688 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में छात्रों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है।अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।
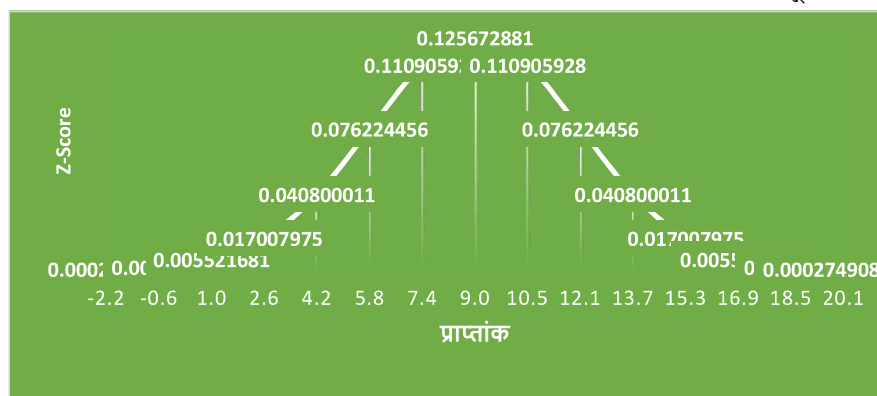
चित्र संख्या 5.1.3

छात्राओं की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्राओं का मध्यमान 8.953125 तथा प्रमाप विचलन 3.149551989 है। छात्राओं के लिए वैषम्यता का मान 0.5113 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.668 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में छात्राओं की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/ सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

5.2 रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

तालिका संख्या 5.2

रनगढ़ दुर्ग के प्रति राजकीय और निजी विद्यार्थियों की जागरूकता विश्लेषण तालिका

महाविद्यालय स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
राजकीय विद्यार्थी	35	7.4	7	2.416609195	0.997	5.5533
निजी विद्यार्थी	68	9.602941176	9	3.317244187	0.3088	2.2772
कुल विद्यार्थी	103	8.893203883	9	3.213291571	0.5408	2.6703
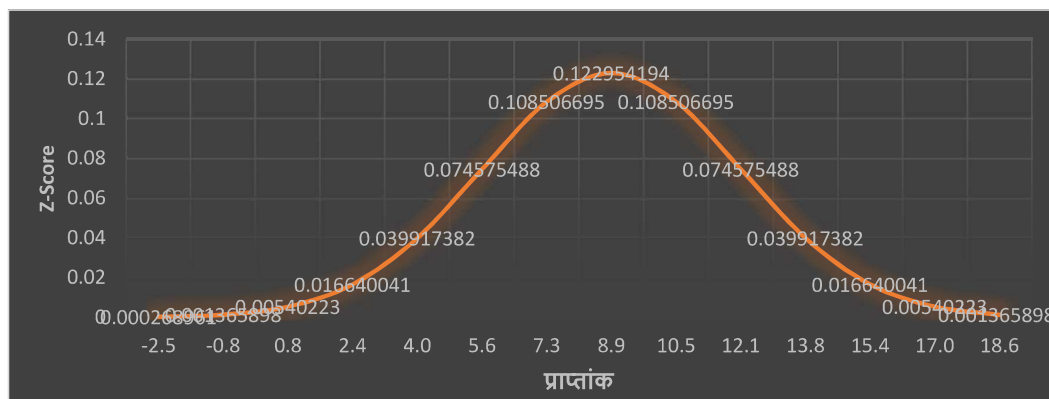
चित्र संख्या 5.2.1

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—राजकीय एवं निजी विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंको के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.5404 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.6703 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/ सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.2.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।
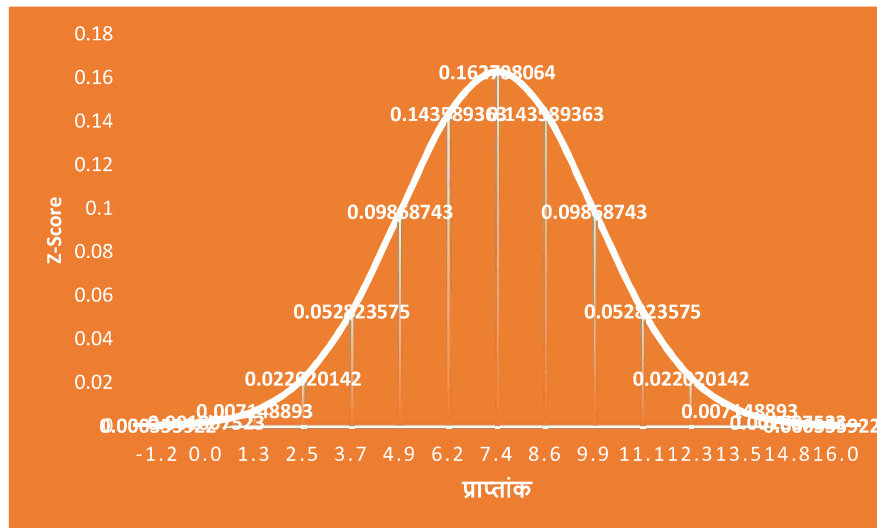
चित्र संख्या 5.2.2

राजकीय विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि राजकीय विद्यार्थियों का मध्यमान 7.4 तथा प्रमाप विचलन 2.416609195 है। प्रशिक्षित विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता 0.997 है, जब वैषम्यता का मान-0.5 से 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 5.5533 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में प्रशिक्षित विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, उनकी वैषम्यता तथा कुकुदताका स्तर सामान्य से थोड़ा सा अधिक है। इस कारण से सामान्य सम्भावना वक्र में थोड़ा सा झुकाव है, जो चित्र संख्या 5.2.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। परन्तु यह अन्तर बहुत ही मामूली-सा है,अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।
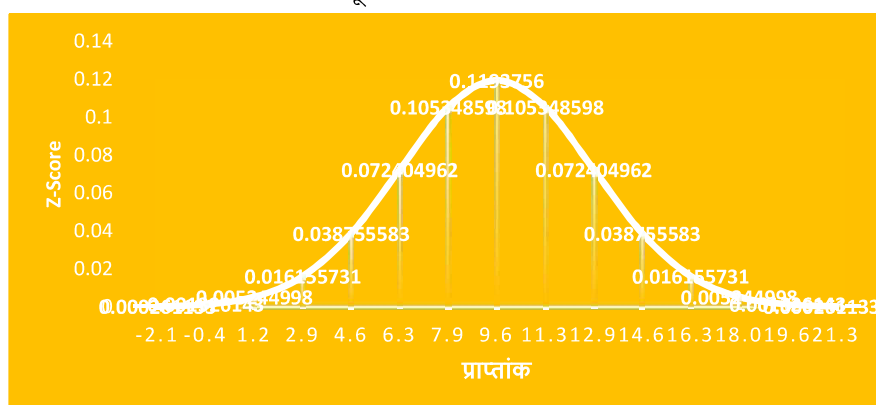
चित्र संख्या5.2.3

निजी विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि निजी विद्यार्थियों का मध्यमान 9.602941176 तथा प्रमाप विचलन 3.317244187 है। निजी विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.3088 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.2772 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में अप्रशिक्षितविद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.2.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

5.3 रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

प्रश्न 1. 1. नीचे दिए गए चित्रों में कौन सा रनगढ़ दुर्ग है–

सही उत्तर- A

तालिका संख्या 5.3.1

प्रश्न 1 के सम्बंध में विद्यार्थियों की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	31	79.49%
छात्राएँ	64	45	70.31%
कुलविद्यार्थी	103	76	73.79%

चित्र संख्या - 5.3.1

प्रश्न संख्या 1 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.1 एवं चित्र संख्या 5.3.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "दिए गए चित्रों में कौन सा (A) रनगढ़ दुर्ग है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत79.49% पाया गया,छात्राओं का प्रतिशत 70.31% पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 73.79% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "दिए गए चित्रों में कौन सा(A) रनगढ़ दुर्ग है" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 2. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण किसके शासन काल में पूर्ण हुआ–

सही उत्तर - कीर्ति सिंह

तालिका संख्या 5.3.2

प्रश्न 2 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	13	33.33%
छात्राएँ	64	18	28.13%
कुल विद्यार्थी	103	31	30.10%
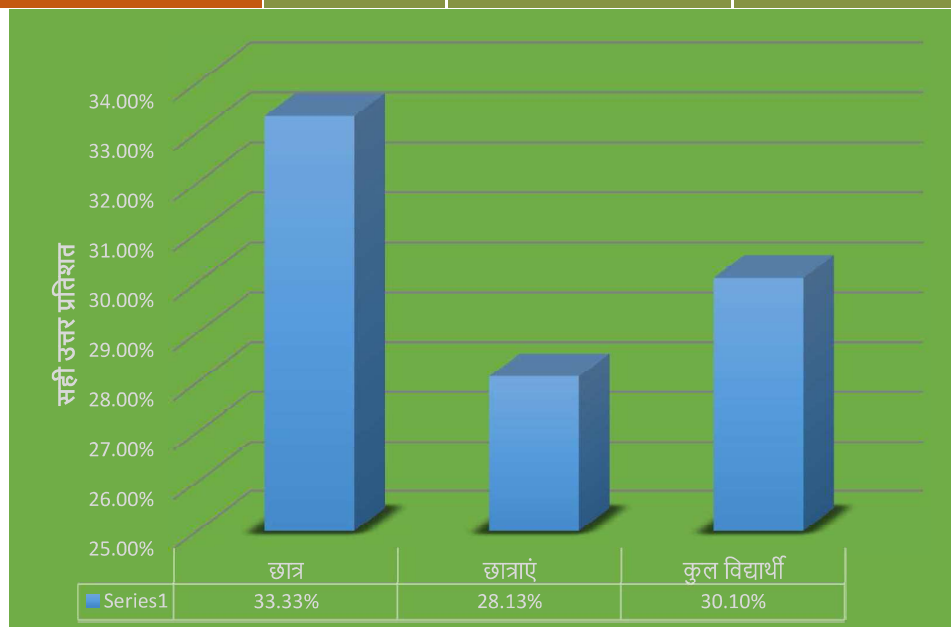
चित्रसंख्या – 5.3.2

प्रश्न संख्या 2 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालि का संख्या 5.3.2 एवं चित्र संख्या 5.3.2 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग का निर्माण किसके (कीर्ति सिंह) के शासन काल में पूर्ण हुआ" का सही उत्त रदेने वाले छात्रों का प्रतिशत 33.33%, छात्राओं का प्रतिशत 28.13% तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 30.10% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई से कुछ कम विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग का निर्माण कीर्ति सिंह के शासन काल में पूर्ण हुआ" से परिचित हैं। एक तिहाई से कुछ अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं,जब कि छात्राएँ एक तिहाई से कुछ कम परिचित हैं।

प्रश्न 3. रनगढ़ दुर्ग के निर्माण का श्रेय किस शासन वंश को है–
सही उत्तर- बुन्देल

तालिका संख्या 5.3.3
प्रश्न 3 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	सही उत्तर		
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	19	48.72%
छात्राएँ	64	20	31.25%
कुल विद्यार्थी	103	39	37.86%

चित्रसंख्या - 5.3.3
प्रश्न संख्या 3 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.3 एवं चित्र संख्या 5.3.3 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "रनगढ़ दुर्ग के निर्माण का श्रेय किस वंश (बुन्देल शासन) को है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 48.72% पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 31.25% पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 37.86% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई से कुछ अधिक विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग के निर्माण का श्रेय बुन्देल शासन वंश को है" से परिचित हैं। आधे से कम छात्र इस तथ्य से परिचित हैं,जब कि छात्राएँ एक तिहाई से कुछ कम परिचित हैं।

प्रश्न 4. रनगढ़ दुर्ग अन्य किस नाम के लिए प्रसिद्ध है–
सहीउत्तर – जलीय दुर्ग

तालिका संख्या 5.3.4
प्रश्न 4 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	29	74.36%
छात्राएँ	64	46	71.88%
कुल विद्यार्थी	103	75	72.82%
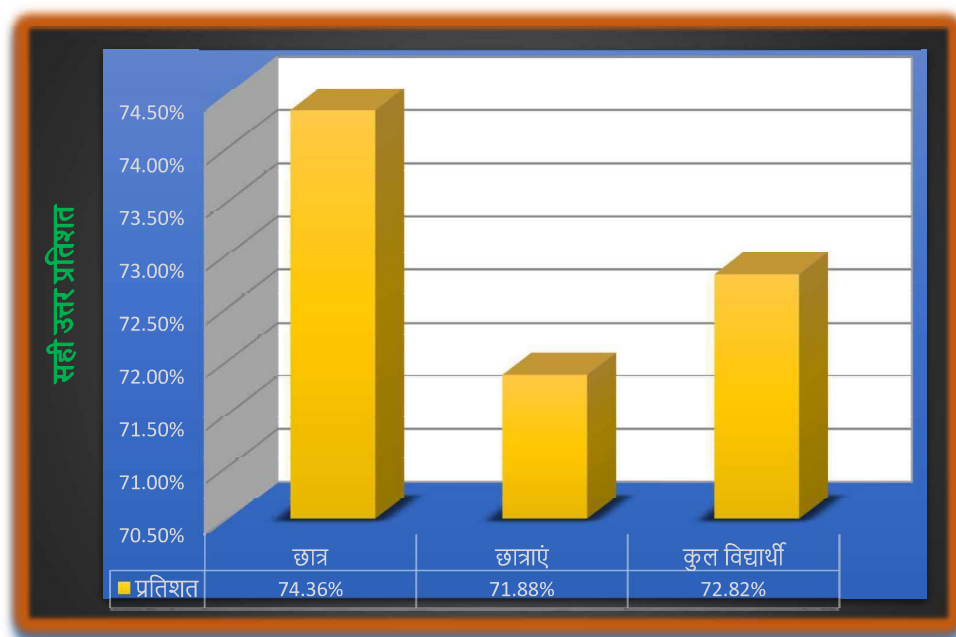
चित्र संख्या - 5.3.4
प्रश्न संख्या 4 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.4 एवं चित्र संख्या 5.3.4 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग अन्य किस नाम (जलीय दुर्ग) के लिए प्रसिद्ध है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 74.36% पाया गया,छात्राओं का प्रतिशत 71.88% पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 72.82% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से कुछ कम विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग जलीय दुर्ग के लिए भी प्रसिद्ध है" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 5. रनगढ़ दुर्ग की निर्माण शैली किस दुर्ग से मिलती है–
सही उत्तर– झाँसी दुर्ग

तालिका संख्या 5.3.5
प्रश्न 5 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	11	28.21%
छात्राएँ	64	13	20.31%
कुल विद्यार्थी	103	24	23.30%

चित्र संख्या – 5.3.5
प्रश्न संख्या 5 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.5 एवं चित्र संख्या 5.3.5 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग की निर्माण शैली किस दुर्ग (झाँसी दुर्ग) से मिलती है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 28.21% पाया गया, छात्राओं का प्रतिशत 20.31% पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 23.30% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक चौथाई से कुछ कम विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग की निर्माण शैली झाँसी दुर्ग से मिलती है" परिचित हैं, एक चौथाई से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं,जब कि छात्राएँ एक चौथाई से कम परिचित हैं।

प्रश्न 6. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण कब आरम्भ हुआ–
सही उत्तर– 1745

तालिका संख्या 5.3.6
प्रश्न 6 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	13	33.33%
छात्राएँ	64	23	35.94%
कुल विद्यार्थी	103	36	34.95%
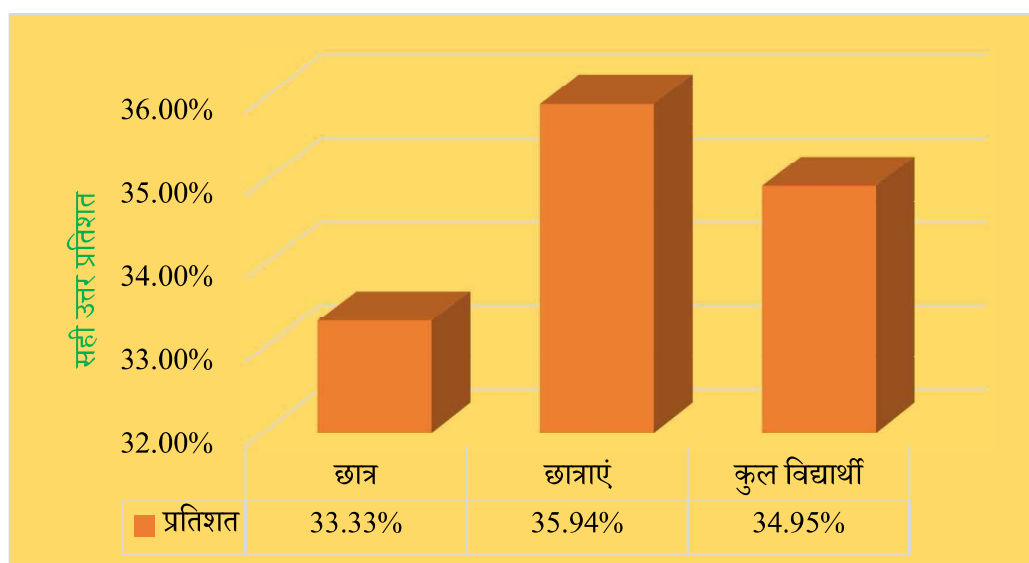
चित्रसंख्या - 5.3.6
प्रश्न संख्या 6 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.6 एवं चित्र संख्या 5.3.6 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग का निर्माण किस वर्ष (1745) में आरम्भ हुआ" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 33.33% पाया गया, छात्राओं का प्रतिशत 35.94% पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 34.94% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई से अधिक विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग का निर्माण वर्ष 1745 में आरम्भ हुआ" एक तिहाई से अधिक छात्राएँ इस तथ्य से परिचित हैं, जब कि एक तिहाई छात्र इस तथ्य से परिचित हैं।

प्रश्न 7. रनगढ़ दुर्ग अंग्रेजों के अधिकार क्षेत्र में कब आया–
सही उत्तर– 1812

तालिका संख्या 5.3.7
प्रश्न 7 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	14	35.90%
छात्राएँ	64	25	39.06%
कुल विद्यार्थी	103	39	37.86%
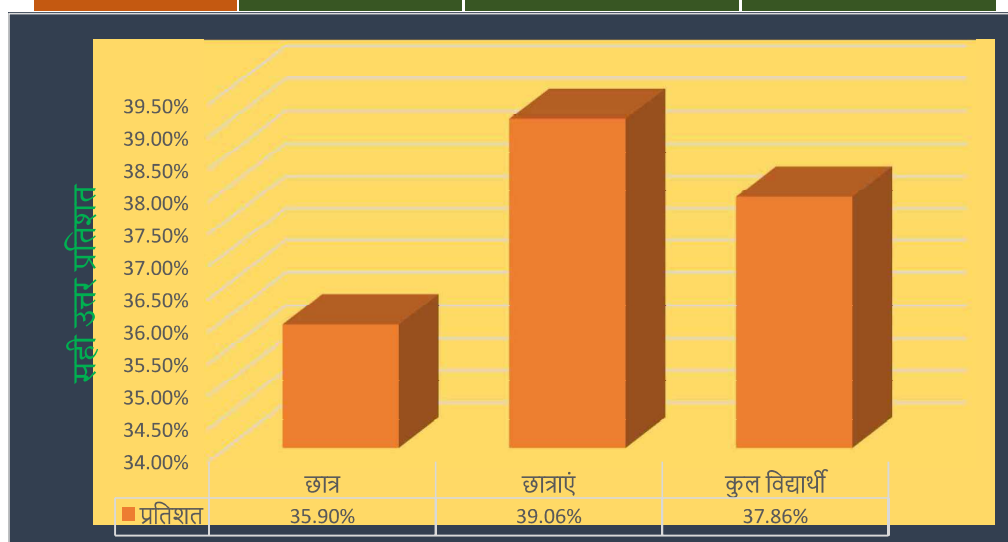
चित्र संख्या – 5.3.7
प्रश्न संख्या 7 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.7 एवं चित्र संख्या 5.3.7 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग अंग्रेजों के अधिकार क्षेत्र में किस वर्ष (1812) में आया" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 35.90% पाया गया, छात्राओं का प्रतिशत 39.06% पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 37.86% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई कुछ अधिक विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग अंग्रेजों के अधिकार क्षेत्र में वर्ष 1812 में आया" से परिचित हैं।

प्रश्न 8. रनगढ़ दुर्ग किस राज्य में स्थित है–
सही उत्तर– (I) एवं (II) दोनों (उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश)

तालिकासंख्या 5.3.8
प्रश्न 8 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	22	56.41%
छात्राएँ	64	35	54.69%
कुल विद्यार्थी	103	57	55.34%
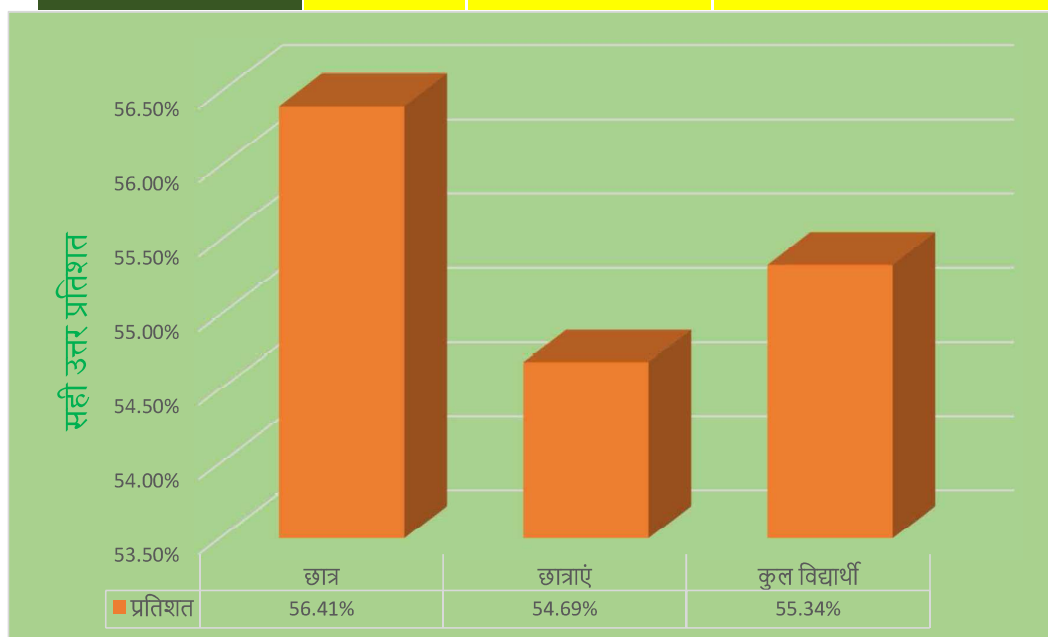
चित्र संख्या – 5.3.8
प्रश्न संख्या 8 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.8 एवं चित्र संख्या 5.3.8 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग किस राज्य उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में स्थित है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 56.41% पाया गया, छात्राओं का प्रतिशत 54.69% पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 55.34% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से अधिक विद्यार्थी ही “रनगढ़ दुर्ग उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्य में स्थित है” होने से परिचित हैं।

प्रश्न 9. रनगढ़ दुर्ग में मेला कब लगता है–
सही उत्तर– (I) एवं (II) दोनों (महाशिवरात्रि और मकर संक्रान्ति)

तालिका संख्या 5.3.9
प्रश्न संख्या 9 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	17	43.59%
छात्राएँ	64	35	54.69%
कुल विद्यार्थी	103	52	50.49%
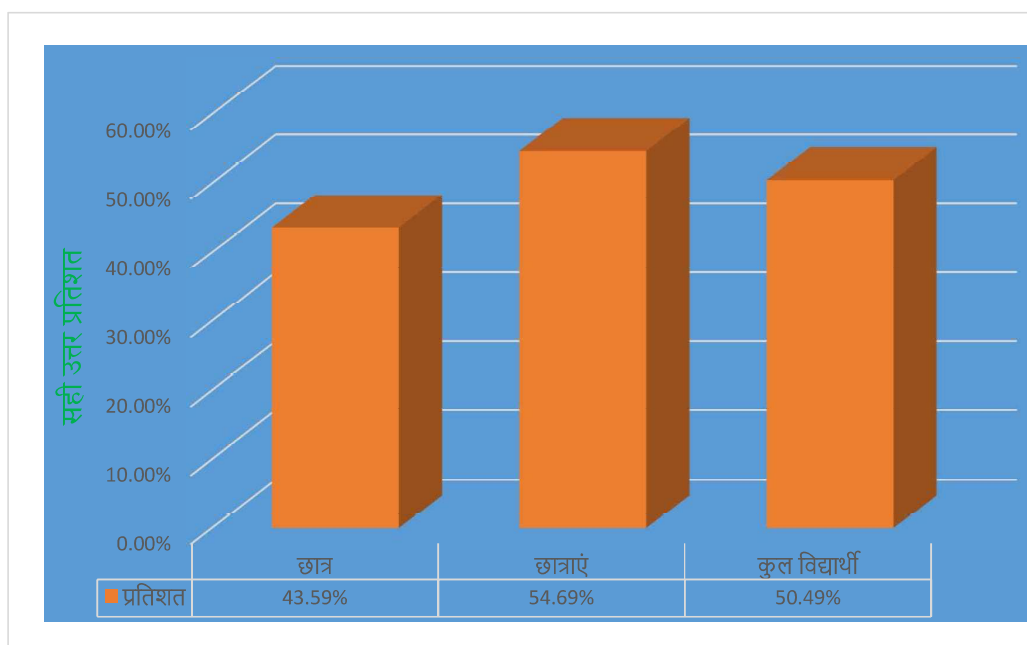
चित्र संख्या - 5.3.9
प्रश्न संख्या 9 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.9 एवं चित्र संख्या 5.3.9 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग में मेला कब (महाशिवरात्रि और मकर संक्रान्ति) लगता है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 43.59% पाया गया, छात्राओं का प्रतिशत 54.68% पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 50.49% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग में मेला महाशिवरात्रि औ रमकर संक्रान्ति में लगता है" होने से परिचित हैं,आधे से कम छात्र इस तथ्य से परिचितहैं और आधे से अधिक छात्राएँ इस तथ्य से परिचित हैं।

प्रश्न 10. रनगढ़ दुर्ग किस नदी में स्थित है?
सहीउ त्तर– केन

तालिका संख्या 5.3.10
प्रश्न 10 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	33	84.62%
छात्राएँ	64	55	85.94%
कुल विद्यार्थी	103	88	85.44%
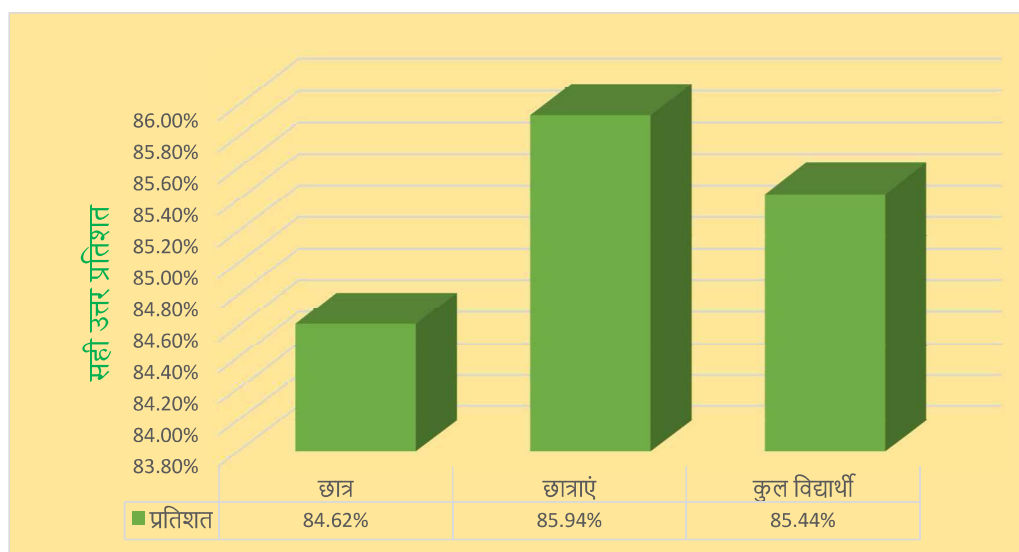
चित्रसंख्या – 5.3.10
प्रश्न संख्या 10 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.10 एवं चित्र संख्या 5.3.10 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "रनगढ़ दुर्ग किस नदी में (केन) स्थित है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 84.62% पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 85.94% पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 85.4% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थी " रनगढ़ दुर्ग केन नदी में स्थित है" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 11. रनगढ़ दुर्ग का सबसे निकटतम ग्राम है–

सही उत्तर– गौर-शिवपुर

तालिकासंख्या 5.3.11

प्रश्न 11 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	20	51.28%
छात्राएँ	64	35	54.69%
कुलविद्यार्थी	103	55	53.40%
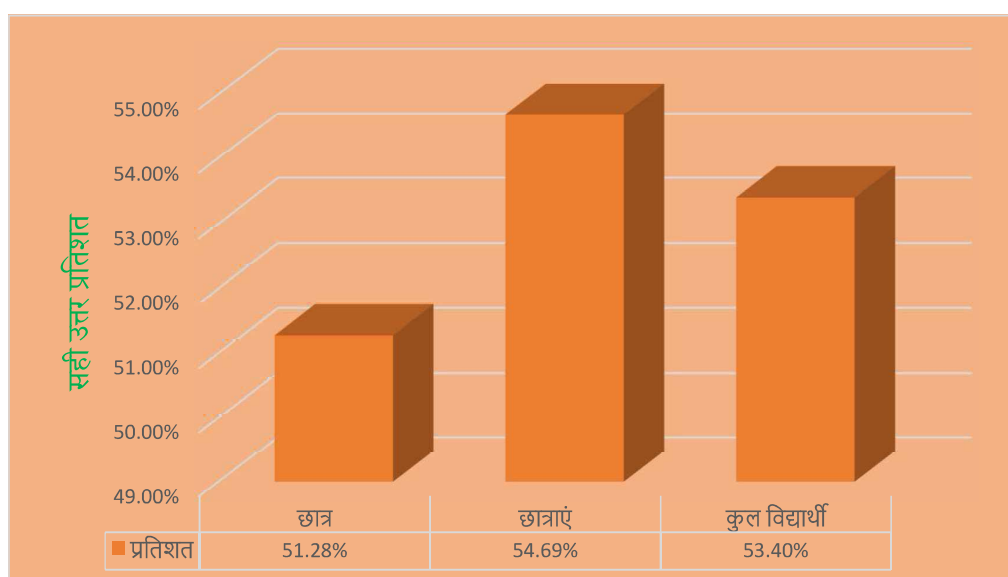
चित्रसंख्या - 5.3.11

प्रश्न संख्या 11 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.11 एवं चित्र संख्या 5.3.11 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग का सबसे निकटतम ग्राम (गौर-शिवपुर) है।" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 51.28% पाया गया,छात्राओं का प्रतिशत 54.69% पाया गया,तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 53.40% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे कुछ अधिक विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग का सबसे निकटतम ग्राम गौर-शिवपुर है।" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 12. रनगढ़ दुर्ग में कुल कितने प्रवेश व्दार की संख्या–

सही उत्तर– 2

तालिका संख्या 5.3.12

प्रश्न 12 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	19	48.72%
छात्राएँ	64	39	60.94%
कुल विद्यार्थी	103	58	56.31%
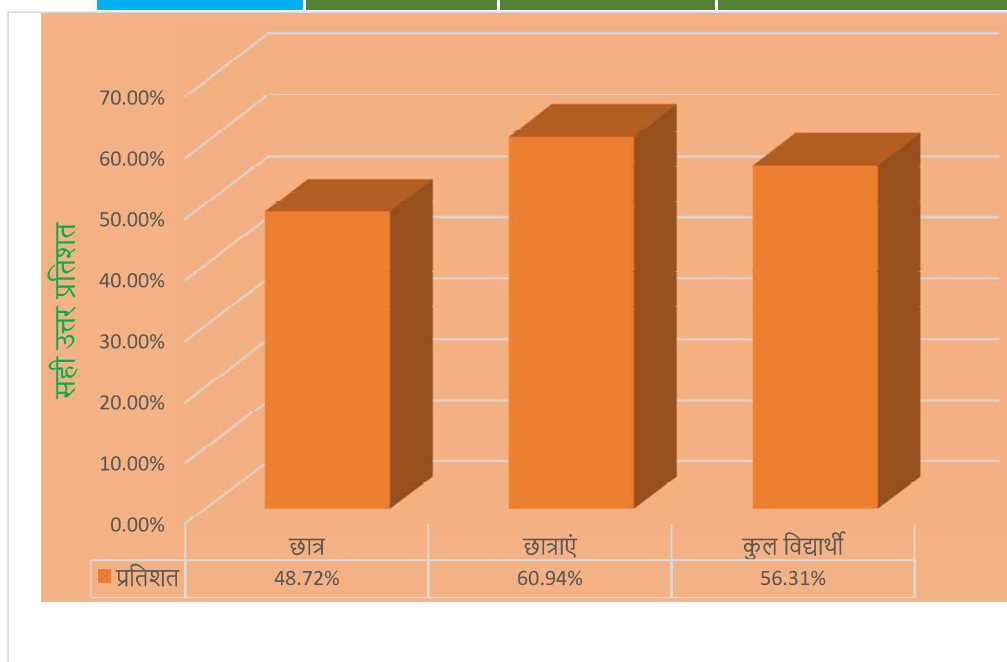
चित्र संख्या - 5.3.12

प्रश्न संख्या 12 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.12 एवं चित्र संख्या 5.3.12 को देखने से यहस्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग में कुल कितने प्रवेश (2) व्दार हैं।" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 48.72% पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 60.94% पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 56.31% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे कुछ अधिक विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग में कुल 2 प्रवेश व्दार हैं।" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 13. उत्तरी द्वार से प्रवेश हेतु रनगढ़ दुर्ग में कितनी सीढियाँ हैं–

सही उत्तर– लगभग 50

तालिका संख्या 5.3.13

प्रश्न 13 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	11	28.21%
छात्राएँ	64	30	46.88%
कुल विद्यार्थी	103	41	39.81%
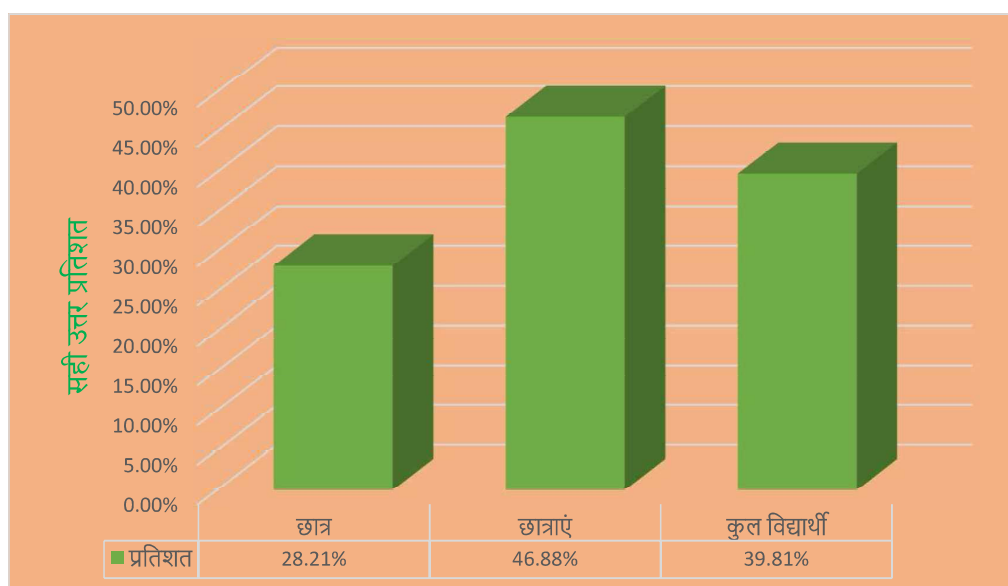
चित्र संख्या - 5.3.13

प्रश्न संख्या 13 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.13 एवं चित्र संख्या 5.3.13 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "उत्तरी द्वार से प्रवेश हेतु रनगढ़ दुर्ग में किनती सीढियाँ (लगभग 50) हैं।" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 28.21% पाया गया, छात्राओं का प्रतिशत 46.88% पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 39.81% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई कुछ अधिक विद्यार्थी "उत्तरी द्वार से प्रवेश हेतु रनगढ़ दुर्ग में लगभग 50 सीडियाँ हैं।" इस तथ्य से परिचित हैं। एक तिहाई से कुछ कम छात्र इस तथ्य से परिचित हैं और छात्राएँ एक तिहाई सेअधिक परिचित हैं।

प्रश्न 14. रनगढ़ दुर्ग में किसकी मूर्ति स्थापित है–

सही उत्तर– शिव

तालिका संख्या 5.3.14

प्रश्न 14 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	33	84
छात्राएँ	64	47	73
कुल विद्यार्थी	103	80	77
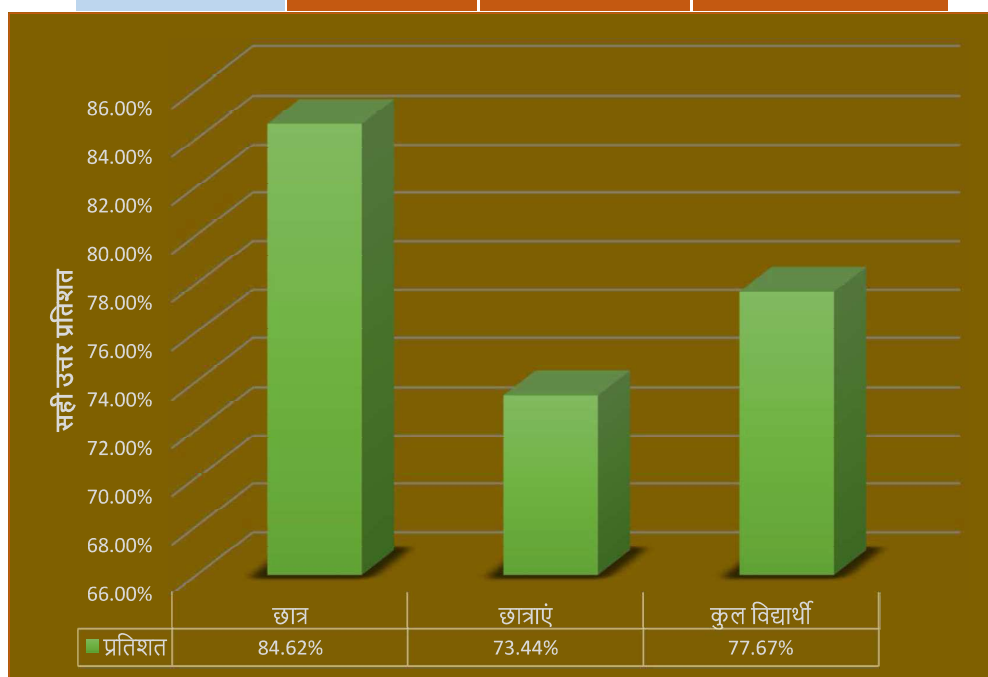
चित्र संख्या - 5.3.14

प्रश्न संख्या 14 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.14 एवं चित्र संख्या 5.3.14 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग में किसकी (शिव) मूर्ति स्थापित है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 84.62% पाया गया, छात्राओं का प्रतिशत 73.44% पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 77.67% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग में शिव की मूर्ति स्थापित है" इस तथ्य से परिचित हैं। तीन चौथाई से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, तीन चौथाई से कुछ कम छात्राएँ इस तथ्य से परिचित हैं।

प्रश्न 15. रनगढ़ दुर्ग से निकटतम तहसील मुख्यालय है–
सही उत्तर– नरैनी

तालिका संख्या 5.3.15
प्रश्न 15 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	32	82.05%
छात्राएँ	64	50	78.13%
कुल विद्यार्थी	103	82	79.61%
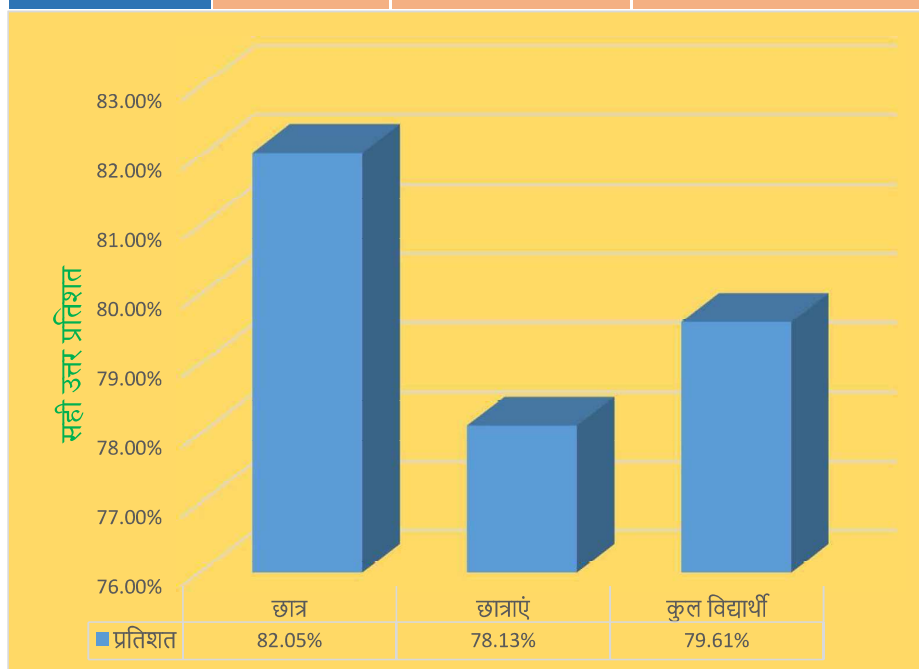
चित्रसंख्या – 5.3.15
प्रश्न संख्या 15 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.15 एवं चित्र संख्या 5.3.15 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग से निकटतम तहसील मुख्यालय कहाँ (नरैनी) है" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 82.05% पाया गया,छात्राओं का प्रतिशत 78.13% पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 79.61% पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग से निकटतम तहसील मुख्यालय नरैनी है" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 16.रनगढ़ दुर्ग का निकटतम रेलवे स्टेशन है–

सही उत्तर– अतर्रा

तालिका संख्या 5.3.16

प्रश्न 16 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	39	25	64.10%
छात्राएँ	64	38	59.38%
कुल विद्यार्थी	103	63	61.17%
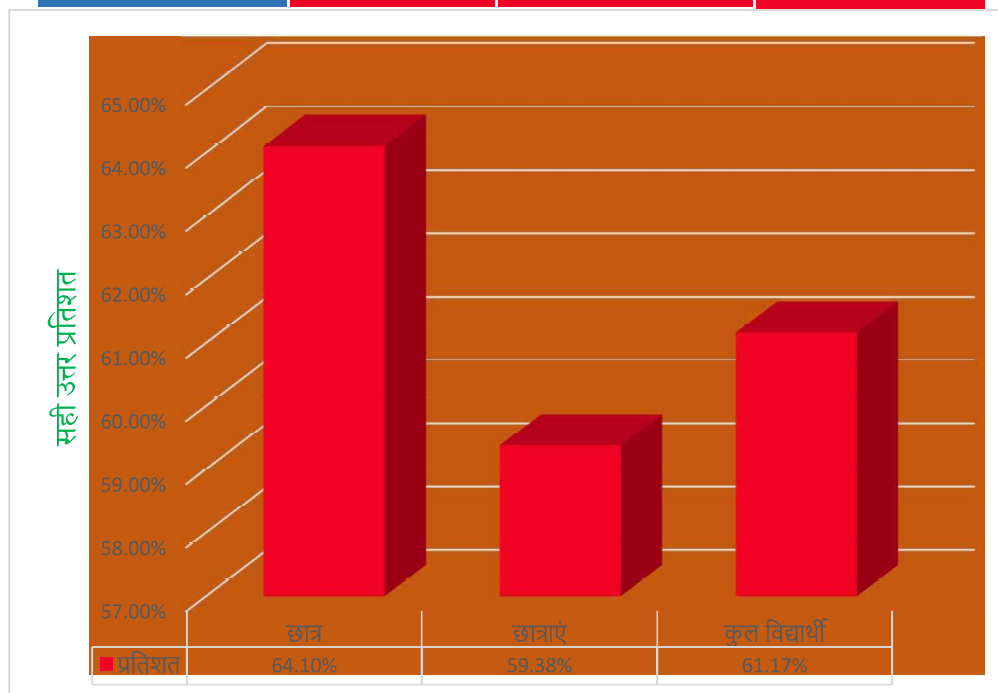
चित्र संख्या - 5.3.16

प्रश्न संख्या 16 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.16 एवं चित्र संख्या 5.3.16 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्न "रनगढ़ दुर्ग का निकटतम रेलवे स्टेशन कहाँ अतर्रा है।" इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 64.10% पाया गया, छात्राओं का प्रतिशत 59.38% पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत61.17%पाया गया।

विवेचना:-उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से अधिक विद्यार्थी "रनगढ़ दुर्ग का निकटतम रेलवे स्टेशन अतर्रा है।" इस तथ्य से परिचित हैं।

5.4 रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता परीक्षण

- महाविद्यालायीन विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रतिछात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 5.4

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता परीक्षण तालिका

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	t-तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	39	8.794871795	3.352607001	0.2377	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
छात्राएँ	64	8.953125	3.149551989				

df=101

चित्र संख्या 5.4

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं का मध्यमान एवं प्रमाप विचलनरेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 से स्पष्ट है कि **महाविद्यालयीन छात्रों का मध्यमान 8.794871795**तथा **महाविद्यालयीन छात्राओं का मध्यमान 8.95312 5**है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान **0.2377** है जो कि स्वतन्त्रांश 101के लिए, 0.05 सार्थकता स्तर पर t-तालिका मान 1.962 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "महाविद्यालायीन विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि महाविद्यालायीन विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रतिछात्र-छात्राओं में जागरूकता का स्तर समान है।

5.5 रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन राजकीय एवं निजी विद्यार्थियों कीजागरूकता परीक्षण

- **महाविद्यालायीन विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रति राजकीय एवं निजी विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

तालिका संख्या 5.5

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता परीक्षण तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	t-तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
राजकीय विद्यार्थी	35	7.4	2.416609195	3.8425	1.962	0.05	सार्थक अन्तर है
निजी विद्यार्थी	68	9.602941176	3.317244187				

df=101
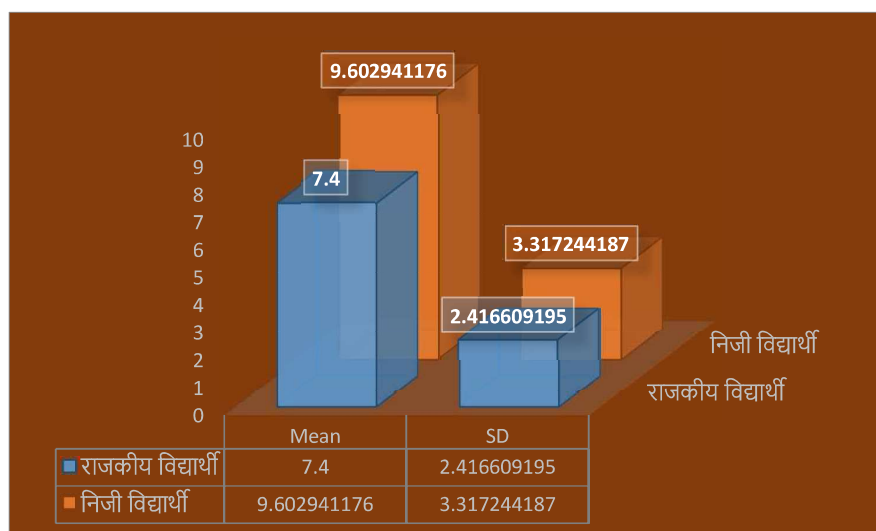
चित्र संख्या 5.5

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीनराजकीय एवं निजी विद्यार्थियों का मध्यमान एवं प्रमाप विचलनरेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन राजकीय विद्यार्थियों का मध्यमान 7.4 एवं मानक विचलन 2.416609195 है, तथा महाविद्यालयीन निजी विद्यार्थियों कामध्यमान 9.602941176एवं मानक विचलन 3.317244187 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 3.8425 है, जो कि स्वतन्त्रांश 101के लिए , 0.05 सार्थकता स्तर पर t-तालिका मान 1.962 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना "महाविद्यालायीन विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रति राजकीय एवं निजी विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", **0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना** "महाविद्यालायीन विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रति राजकीय विद्यार्थियों की जागरूकता निजी विद्यार्थियों से अधिक है।" **स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि महाविद्यालायीन विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रति राजकीय एवं निजी विद्यार्थियों की **जागरूकता का स्तर समान** नहीं है**, राजकीय विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर निजी विद्यार्थियों की जागरूकता से कम है।** इसका कारण यह हो सकता है कि निजी विद्यार्थी ऐतिहासिक विरासतों में अधिक रूचि लेते हैं।

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

- ❖ अध्ययन के निष्कर्ष
- ❖ अध्ययन के सुझाव
- ❖ शैक्षिक उपादेयता
- ❖ अध्ययन की सीमाएँ
- ❖ भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय षष्ठ
निष्कर्ष एवं सुझाव

कोई भी शोध अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसके द्वारा किसी निष्कर्ष में न पहुँचा जाए। अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसन्धान का अन्तिम चरण माना गया है। एक उत्तम शोध प्रबन्ध की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित प्रदत्त पर आधारित हों, उन पर शोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किञ्चित मात्र भी प्रभाव न पड़े। इस अध्याय को निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है–

- अध्ययन के निष्कर्ष
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता
- अध्ययन के सुझाव
- अध्ययन की सीमाएं
- भावी शोध हेतु सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

उद्देश्य 1: रनगढ़ दुर्ग के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना

रनगढ़ दुर्ग के ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित न्यादर्शों की वैषम्यता तथा कुकुदता के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि इनका स्तर सामान्य है/ सामान्य वितरण के अनुरूप है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।

उद्देश्य 2: रनगढ़ दुर्ग के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना

शोधकर्ता द्वारा रनगढ़ दुर्ग के के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें 16 बहुविकल्पीय (4 विकल्प) प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इस जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म की सहायता से किया गया है।

उद्देश्य 3: रनगढ़ दुर्ग के प्रति महा विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं शैक्षणिक संस्थान के अनुसार अध्ययन करना

चयनित रनगढ़ दुर्ग के प्रति महविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन छः परिकल्पनाओं के अन्तर्गत किया गया है, जिनका निष्कर्ष निम्न प्रकार है–

I. **रनगढ़ दुर्ग के प्रति महविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना**

   रनगढ़ दुर्ग के प्रति महविद्यालयके छात्र-छात्राओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। **छात्रों की जागरूकता, छात्राओं की अपेक्षा कम पाई गयी**। महविद्यालय केछात्रों का मध्यमान 8.794871795 पाया गया, जो कि छात्राओं के मध्यमान 8.953125 से कम है। **छात्र रनगढ़ दुर्ग के प्रति लगभग 50% ही जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

II. **रनगढ़ दुर्ग के प्रति महविद्यालय के राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना**

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महविद्यालयीन राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तरके विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर पाया गया। अतः रनगढ़ दुर्ग के प्रति **राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर समान नहीं है।** निजी महाविद्यालय के विद्यार्थी राजकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक जागरूक हैं।

उद्देश्य 4: रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालय के विद्यार्थी पर्याप्त जागरूक नहीं हैं।

प्रस्तुत उद्देश्य के संदर्भ में पाया गया कि रनगढ़ दुर्ग के प्रति महविद्यालय के विद्यार्थी पूर्णतः जागरूक नहीं हैं। अतः जागरूकता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

i. विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं भ्रमण कराए जायें।
ii. लोगों की जागरूकता के लिए संगोष्ठियाँ एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
iii. ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएं।
iv. रनगढ़ दुर्ग के ऐतिहासिक स्थलों को देश की ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया जाए।
v. रनगढ़ दुर्ग की जर्जर इमारतों का पुनर्निर्माण तीव्र गति से किया जाए।

उद्देश्य 5: रनगढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का ई-ब्रोशर (E-brochure) तैयार करना

रनगढ़ दुर्गकी ऐतिहासिक विरासत का ई-ब्रोशर (E-brochure) (परिशिष्ट X) में संलग्न है।

6.2 अध्ययन के सुझाव

- विद्यालयों में समय-समय परस्थानीय संस्कृति से सम्बंधित कार्यक्रम किए जायें।
- विद्यार्थियों की जागरूकता के लिए स्थानीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहरों से सम्बंधित संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
- ऐतिहासिक धरोहरों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
- बाँदा, अतर्रा, नरैनी बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में इन विरासतों से सम्बन्धित बोर्ड लगाए जाने चाहिए।
- शिक्षण संस्थानों द्वारा विद्यार्थियों को स्थानीय मेलों के अवसर पर भारतीय स्काउट गाइड, एन.सी.सी, राष्ट्रीय सेवा योजना, रेड क्रॉस सोसाइटी इत्यादि संस्थाओं के माध्यम से ट्रैफिक कंट्रोल, प्याऊ अन्य सेवा कार्य हेतु ले जाया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी स्थानीय संस्कृति के महत्व से परिचित होंगे तथा अपना महत्वपूर्ण योगदान भी कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों को विद्यार्थियों को सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण धरोहरों की गहराई सूक्ष्मता से निरीक्षण हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा अपने मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को इसका अभ्यास कराया जाना चाहिए।
- यहां पर गाइड की व्यवस्था की जानी चाहिए जो आने वाले पर्यटकों को रनगढ़ दुर्ग की विशिष्टताओं से अवगत करा सकें। शुरुआत में विभिन्न पर्वों के अवसर पर गाइड की व्यवस्था प्रारम्भ की जा सकती है।
- रनगढ़ दुर्ग में समीपवर्ती ऐतिहासिक स्थलों की दूरी भी दर्शाई जानी चाहिए ताकि पर्यटक उससे परिचित होकर वहाँ का भी भ्रमण कर सकें।

- घर-परिवार द्वारा स्थानीय परंपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी अक्षुण्ण बनाए रखने का यत्न पूर्वक प्रयास किया जाना चाहिए। वैसे पंच कोसी परिक्रमा की परंपरा स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत श्रेयस्कर है।
- गज-ग्राह जैसे विभिन्न पौराणिक आख्यान को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी भारतीय संस्कृति से परिचित हो सकें।
- एकल परिवार के स्थान पर संयुक्त परिवार को पूरा स्थापित करना होगा ताकि दादी-नानी की छत्र-छाया में बच्चे पौराणिक कथा कहानियों को सुनकर बड़े हों तथा भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर सकें।
- रनगढ़ दुर्ग के मुख्य मंदिर में विग्रह की पुनर्स्थापना कर पूजा अर्चना प्रारम्भ की जानी चाहिए।
- रनगढ़ दुर्ग का पुनरुद्धार कर विश्व विरासत में दर्ज कराने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- रनगढ़ दुर्ग में प्रवेश पर टिकट की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे शहर के एक सुदूर कोने में स्थित होने के कारण यह स्थल असामाजिक तत्वों का अड्डा होने से बचे।
- रनगढ़ दुर्ग की बाउंड्री वॉल की मरम्मत की जानी चाहिए ताकि इसे अन्ना जानवरों एवं असामाजिक तत्वों के अनधिकृत प्रवेश से बचाया जा सके।
- विद्यालयों द्वारा शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाना चाहिए।
- रनगढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का विकीपीडिया पेज बनाया जाना चाहिए।
- रनगढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर व्यापक प्रचार-प्रसार जाना चाहिए।
- बाँदा जिले की Official website (https://banda.nic.in/hi/) के Menu Bar में Download का option होना चाहिए जिसके अन्तर्गत बाँदा का पर्यटन मानचित्र तथा पर्यटन स्थलों के ई-ब्रोशर डाउनलोड हेतु उपलब्ध होने चाहिए।
- उत्तर प्रदेश राज्य की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट में 'Destination Column' के अन्तर्गत एक कॉलम जिले-वार पर्यटक स्थलों की सूची का होना चाहिए जिसमें जिले की ऐतिहासिक विरासतों का वर्णन किया जाना चाहिए।
- देश की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट में 'Destination Column' के अन्तर्गत सभी राज्यों की एक सूची होनी चाहिए जिसमें राज्य की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट का लिंक हाइपरलिंक होना चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों एवं समाज के लोगों के दृष्टिकोण को विकसित करने एवं ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में सहायक होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय ऐतिहासिक विरासत पर विस्तृत चर्चा की गयी है, साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही स्थानों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित चर्चा की गयी है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति विद्यार्थियों की अल्प जानकारी को भी प्रकाश में लाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं, प्रशासकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों इत्यादि के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

- विद्यार्थी रनगढ़ दुर्ग के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी रनगढ़ दुर्ग के प्रति रुचि विकसित कर सकेंगे।

❖ विद्यार्थी रनगढ़ दुर्ग के प्रति आकर्षित होकर खाली समय पर भ्रमण हेतु जा सकेंगे।

6.3.2 शिक्षकोंके लिए

- ❖ शिक्षक क्षेत्रीय धरोहरके महत्व को समझकर विद्यार्थियों को बता सकते हैं।
- ❖ विद्यार्थियों के मन में रनगढ़ दुर्ग के प्रति रुचि जागृति उत्पन्न कर सकते हैं।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को रनगढ़ दुर्ग शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जा सकते हैं।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियो को रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरुक कर सकते हैं।
- ❖ शिक्षक अभिभावकों को शैक्षिक भ्रमण के महत्व का ज्ञान करा सकते हैं।

6.3.3 पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए

- ❖ ऐतिहासिक विरासतों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु नीति बनाने की आवश्यकता है।
- ❖ शैक्षिक भ्रमण को उच्चतर माध्यमिकशिक्षा के पाठ्यक्रम में विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।
- ❖ इतिहास विषय के उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में रनगढ़ दुर्ग को पूरक पाठ्य पुस्तक के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है।

6.3.4 प्रशासकों के लिए

- ❖ जिले के प्रशासक रनगढ़ दुर्ग पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करा सकते हैं।
- ❖ महाविद्यालय के विद्यार्थियों कोरनगढ़ दुर्ग के शैक्षिक भ्रमण हेतु दिशा निर्देश जारी कर सकते हैं।
- ❖ नरैनी क़स्बा के प्रशासक नरैनी बस स्टैण्ड एवं अतर्रा रेलवे स्टेशन में रनगढ़ दुर्ग से सम्बन्धित बोर्ड लगवा सकतेहैं।
- ❖ नरैनी क़स्बा के मुख्य चौराहों पर रनगढ़ दुर्ग से सम्बन्धित बोर्ड लगवाए जा सकते हैं।
- ❖ प्रस्तुत शोध में दिए गए सुझावों के आधार पर देश तथा प्रदेश की पर्यटक वेबसाइट्स मेंरनगढ़ दुर्गका उल्लेख किया जा सकता है।

6.3.5 इतिहासकारों के लिए

- ❖ इतिहासकार रनगढ़ दुर्ग से जुड़े इतिहासके विषय में गहन जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।
- ❖ इतिहासकार रनगढ़ दुर्ग के गुप्त द्वार से जुड़े रहस्यके विषय में पता लगा सकते हैं।

6.3.6 पुरातत्वविदों के लिए

- ❖ पुरातत्वविदरनगढ़ दुर्ग केगौरैया दाई मन्दिर के विषय में खोज कर सकते हैं।
- ❖ रनगढ़ दुर्ग के मन्दिर के गुम्बद में प्रदर्शित मूर्तियों के विषय में खोजबीन कर सकते हैं।

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

- ▪ शोध में प्रयुक्त स्वनिर्मित उपकरण का समय व धन के अभाव के कारण मानकीकरण सम्भव नहीं हो पाया है।

- प्रयुक्त शोध में आँकड़े एकत्रित करने के लिए विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में दिनांक 23/08/2023 तक गूगल फार्म से प्राप्त प्रतिक्रिया (103) को सम्मिलित किया गया है।

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी शोधकार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है। कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किए जा सकते हैं ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके। शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययनों का किया जाना आवश्यक होता है। शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए सम्भव नहीं होता, जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता। एक शोध समस्या पर किया गया शोधकार्य, दूसरे शोधार्थी द्वारा किए गए शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन एवं सुझाव का कार्य करता है। इस शोधकार्य के आधार पर भावी अध्ययनों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं–

- ✓ वर्तमान शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के रनगढ़ दुर्ग तक सीमित है, भावी शोध अध्ययन में अन्य जनपदों/राज्यों की अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- ✓ प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जनपद की ऐतिहासिक विरासतरनगढ़ दुर्ग तक ही सीमित है, भावी अध्ययन में बाँदा जनपद की अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- ✓ प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित है, भावी अध्ययन में प्राथमिक, माध्यमिक, तथा उच्च स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- ✓ प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन असम्भाव्य विधि से किया गया है, भावी अनुसन्धान में सम्भाव्य विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची
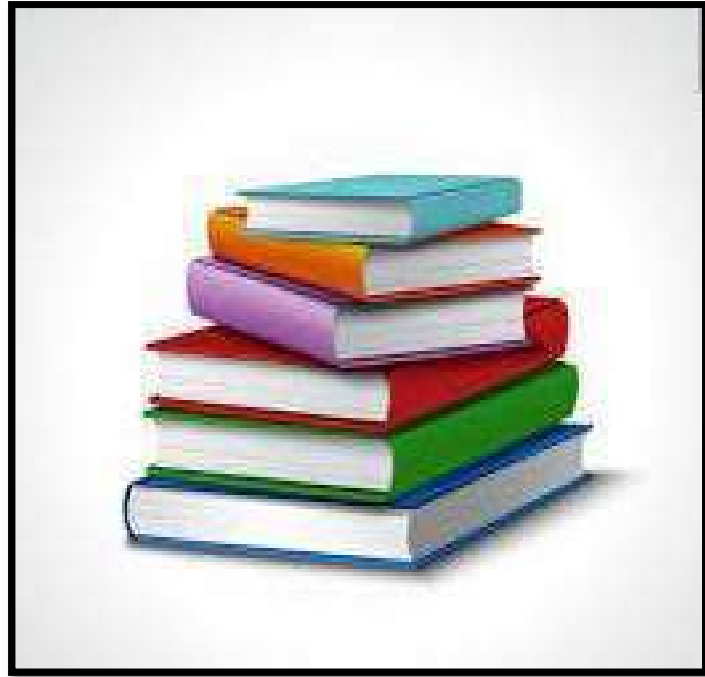
सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

अवस्थी, निधि (2005)। *ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियन्त्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/270538

आनन्द, विक्रम (2019)। *माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस। https://shorturl.at/TVY89

आर्य, मोहन लाल (2018)। *शिक्षा के ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य।* मेरठ: आर० लाल बुक डिपो।

बाँदा नगर। विकिपीडिया। https://bit.ly/3pFJ300

कतरन। https://yogaguru1.blogspot.com/2019/

कुमार, दीपक (2021)। *विद्यार्थियों मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

चित्रकूट जिला। विकिपीडिया। https://bit.ly/3cjqlZ9

चौरसिया, प्रिन्सी (2018)। *स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

चौरसिया, पूजा (2019)। *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिन्जर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* एम० एड० लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। https://archive.org/details/ilovepdf-merged-4-1/mode/2up?view=theater

जागरूकता। (2018, दिसम्बर 04)। विकीपीडिया। https://shorturl.at/zAKNU

धर, अभिलाषा (2019)। *उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में योग जागरूकता का अध्ययन: बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ मे।* लघु-शोध प्रबन्ध–शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। https://archive.org/details/20200304_20200304_1435/mode/2up

पटेल, ब्रजलाल (2021)। *बाँदा जनपद के विद्यार्थियों भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

पाठक, पी० डी० (2017)। *शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य।* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

पाठक, योगेश(2011)। *पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रांति परंपरागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर। https://shorturl.at/bvCVZ

प्रतिचयन विधियाँ और प्रतिदर्श आकार का आकलन। E-gyankosh. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/30591/1/Unit-15.pdf

प्रसामान्य वितरण: प्रसम्भाव्यता का सम्प्रत्तय, प्रसामान्य सम्भाव्य वक्र की विशेषताएँ, विषमता एवं ककुदता, प्रसामान्य सम्भाव्यता वक्र के अनुप्रयोग। उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय। https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/BAPY-201.pdf

प्राथमिक शिक्षा। (2020, अक्टूबर 21)। Scotbuzz. https://www.scotbuzz.org/2020/10/prathamik-shiksha-ka-arth.html?m=1

भारत में शिक्षा के प्रकार और स्तर। (2021, फरवरी 08)। Scotbuzz. http://surl.li/cpgvf

महाविद्यालयीन विद्यार्थी। (2018, जून 09)। शब्दकोश। http://surl.li/cphbh

मिश्रा, मधुरिमा (2009)। *महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (कानपुर नगर के संदर्भ में)।* पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर। https://shorturl.at/aemAN

राठौर, पूनम (2020)। *अनुसूचित पिछड़े व सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ।लघु शोध-प्रबन्ध प्रकाशित https://shorturl.at/afhFR

लाल, रमन बिहारी (2014)। *शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन।* मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

लाल, रमन बिहारी (2018)। *शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।* मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

लॉर्ड मैकाले का वह स्मरण पत्र जिसने बदल दी भारत की शिक्षा नीति। (2022, फरवरी 04)। नवभारत टाइम्स। http://surl.li/cpgxy

सक्सेना, अर्चना (2010)। *पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जनमानस की जागरूकता एवं सहभागिता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/230163

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता एवं स्रोत। (2019, जुलाई 20)। Scotbuzz. https://www.scotbuzz.org/2019/07/sambandhit-sahity.html?m=1>

सर्वेक्षण विधि का अर्थ। (2020, मार्च 17)। टीचर दीदी, यू-ट्यूब। https://youtu.be/J3Bazwt9pRs>

साहू, सरिता (2016)। *क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकता: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में।* पी-एच०डी० थीसिस, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/245803

सांख्यिकी। Unionpedia. http://surl.li/cphml

सिंह, लक्ष्मण (2016)। *अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा। https://shorturl.at/avxI1

शोधगंगा। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/

शोध उपकरण। (2020, नवम्बर 13)। Testbook.

https://testbook.com/question-answer/hn/in-choosing-a-research-tool-which-of-the-following--5ffbd7a2264e78f75c414c29

श्रीवास्तव, डी० एन० (1993)। *अनुसन्धान विधियाँ।* आगरा: साहित्य प्रकाशन।

श्रीराम निवास मन्दिर का अयोध्या से गहरा नाता। (2020, अगस्त 02)। अमर उजाला। https://bit.ly/3A3B7dP

त्रिपाठी, शैलेंद्र कुमार (2018)। *अंग्रेजी एवं हिंदी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रतिजागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/303516

Find population skewness, kurtosis for ungrouped data. AtoZmath.com http://surl.li/cphpn

Guidelines for Preparation of the Thesis/Dissertations (2018). Nainital: Kumaun University. https://www.kunainital.ac.in/images/document/KUDScDLittPhDMScDissertationThesisPreparationandSubmissionGuidelines2018.pdf

How to Add Page Numbers in APA स्टाइल. (2020, February 25). Editarians. https://www.editarians.com/page-numbers-in-apa-style/

How to Cite a website in APA Style: Format & Examples. (2022, May 10). Scribbr. https://www.scribbr.com/apa-examples/website/

How to Create a Bell Curve Chart in Excel. https://www.extendoffice.com/documents/excel/2404-excel-template-bell-curve-chart.html

Margins. (n.d.) APA Style. Retrieved (2022, June 10). https://apastyle.apa.org/style-grammar-guidelines/paper-format/margins

Normal Skewness Range.
https://community.gooddata.com/metrics-and-maql-kb-articles-43/normality-testing-skewness-and-kurtosis-241

Normal Kurtosis Range.
https://www.sciencedirect.com/topics/neuroscience/kurtosis

Paragraph Style. https://libguides.usc.edu/APA7th/formatting

t-test calculator. Graphpad. https://www.graphpad.com/quickcalcs/ttest1.cfm
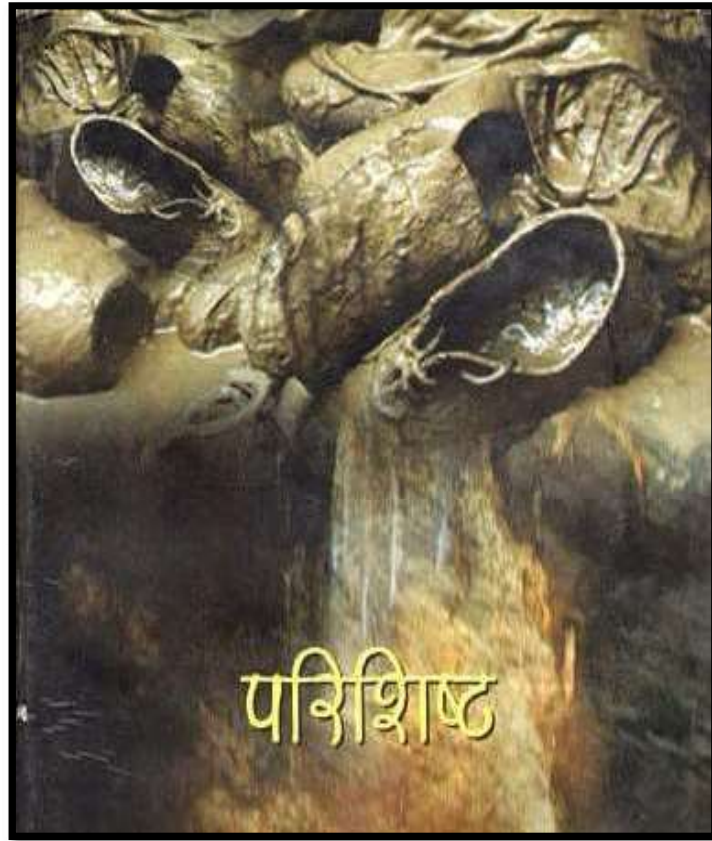
परिशिष्ट

परिशिष्ट I

बाँदा जनपद का मानचित्र

परिशिष्ट II

ऐतिहासिक विरासत भ्रमण चित्रावली
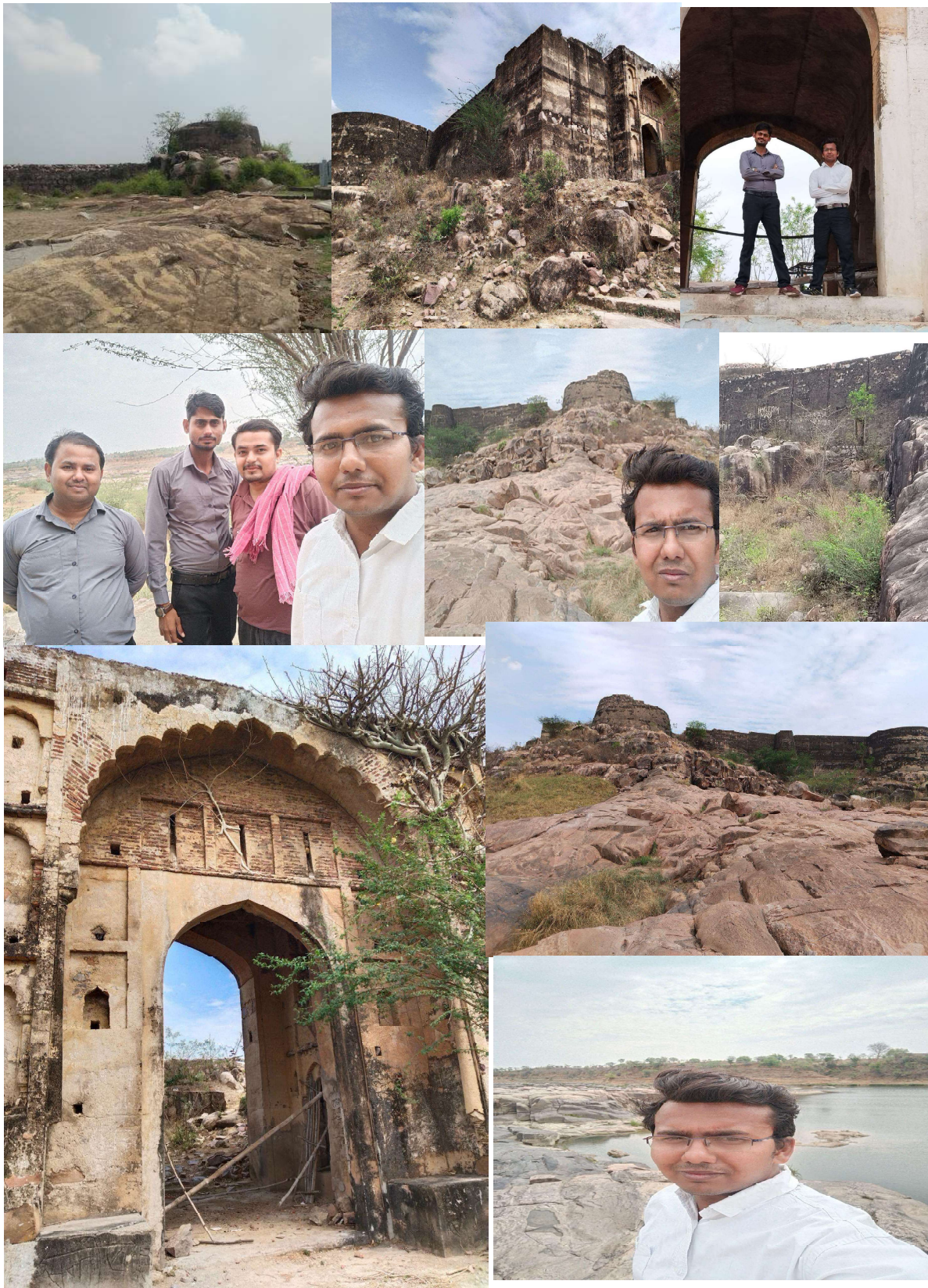
परिशिष्ट—III

झिन्ना बाबा चित्रावली

परिशिष्ट—IV

लघु शोध-प्रबन्ध प्रारूप

- **Website Citations as per APA 7th Edition**

Webpage
1 author
Full date

Reference entry

Slat, B. (2019, April 10). *Whales likely impacted by Great Pacific garbage patch*. The Ocean Cleanup. https://www.theoceancleanup.com/updates/whales-likely-impacted-by-great-pacific-garbage-patch/

In-text citation

Parenthetical: (Slat, 2019)

Narrative: Slat (2019)

Webpage
1 author
Full date

Reference entry

Author's Last Name, Initial(s). (Year, Month Day of publication). *Title of work*. Website. https://URL

In-text citation

Parenthetical: (Author's Last Name, Year of publication)

Narrative: Author's Last Name (Year of publication)

- **Margins**

Use 1-inch margins on every side of the page for an APA Style paper.

However, if you are writing a dissertation or thesis, your advisor or institution may specify different margins (e.g., a 1.5-inch left margin to accommodate binding).

- **Line Spacing**

2.1.3 Type -Setting, Text Processing and Printing

The text shall be printed employing laserjet or Inkjet printer, the text having been processed using a standard text processor. The standard font shall be Times New Roman or Arial of 12 pts with 1.5 line spacing. हिंदी के लिए Arial Unicode MS फांट का आकार 14 तथा शीर्षकों के लिए फांट का आकार 16 स्वीकार्य होगा।

- **Page Numbering**

  - The first page is numbered page 1.
  - Each page is numbered sequentially thereafter.
  - Numbers are positioned in the header at the top right of each page.

परिशिष्ट – V

बाँदा जनपद स्थित महाविद्यालय

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम
1.	अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज अतर्रा, बाँदा
2.	सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी
3.	पार्वती महिला महाविद्यालय, बरुवा स्योधा, नरैनी
4.	पंडित जवाहर लाल नेहरु पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, सिविल लाइन, बाँदा
5.	राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा
6.	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बाँदा
7.	बामदेव संस्कृत महाविद्यालय, बाँदा
8.	डॉ० भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, बाँदा
9.	एकलव्य महाविद्यालय, दुरेड़ी, बाँदा

परिशिष्ट—VI

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली–प्रथम प्रारूप

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालय विद्यार्थियों में
जागरूकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक **शोधार्थी**

डॉ0 राजीव अग्रवाल **तेज प्रताप**

निम्न सूचनाएं भरिए :

नाम... ....

पिता का नाम...

लिंग...

कक्षा...

विद्यालय का नाम... ....

दिनांक...

WhatsApp...

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य है। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

प्रश्न 1. नीचे दिए गए चित्रों में कौन सा रनगढ़ दुर्ग है–

क

ख

ग

घ

प्रश्न 2. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण किसके शासन काल में पूर्ण हुआ–

क- बीर सिंह जुदेव | ख- रुद्र प्रताप सिंह
ग- कीर्ति सिंह | घ- परिमादित्य देव

प्रश्न 3. रनगढ़ दुर्ग के निर्माण का श्रेय किस शासन वंश को है–

क- चौहान | ख- चन्देल
ग- बुन्देल | घ- मराठा

प्रश्न 4. रनगढ़ दुर्ग अन्य किस नाम के लिए प्रसिद्ध है–

क- गिरि दुर्ग | ख- जलीय दुर्ग
ग- मही दुर्ग | घ- धनु दुर्ग

प्रश्न 5. रनगढ़ दुर्ग की निर्माण शैली किस दुर्ग से मिलती है–

क- भूरागढ़ दुर्ग | ख-झाँसी दुर्ग
ग- कालिंजर दुर्ग | घ- मड़फा दुर्ग

प्रश्न 6. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण कब आरम्भ हुआ–

क- 1745 | ख- 1537
ग- 1805 | घ- 1901

प्रश्न 7. रनगढ़ दुर्ग अंग्रेजों के अधिकार क्षेत्र में कब आया–

क- 1812 ख- 1854

ग- 1857 घ- 1757

प्रश्न 8. रनगढ़ दुर्ग किस राज्य में स्थित है–

क- मध्य प्रदेश ख- उत्तर प्रदेश

ग- (क) एवं (ख) दोनों घ इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 9. रनगढ़ दुर्ग में मेला कब लगता है–

क- मकर संक्रान्ति ख-महाशिवरात्रि

ग- (क) एवं (ख) दोनों घ- इनमें से कोई नही

प्रश्न 10. रनगढ़ दुर्ग किस नदी में स्थित है?

क- मन्दाकिनी ख- केन

ग- यमुना घ- बाघिन

प्रश्न 11. रनगढ़ दुर्ग का सबसे निकटतम ग्राम है–

क- पनगरा ख- गौर-शिवपुर

ग- रिसौरा घ- बाड़ादेव

प्रश्न 12. रनगढ़ दुर्ग में कुल कितने प्रवेश की संख्या

क- 1 ख- 2

ग- 3 घ- 4

प्रश्न 13. उत्तरी द्वार से प्रवेश हेतु रनगढ़ दुर्ग में कितनी सीडियां हैं–

क- लगभग 50 ख- लगभग 500

ग- लगभग 250 घ- लगभग 100

प्रश्न 14. रनगढ़ दुर्ग में किसकी मूर्ति स्थापित है–

क- विष्णु ख- हनुमान

ग- शिव घ- गणेश

प्रश्न .15. रनगढ़ दुर्ग से निकटतम तहसील मुख्यालय है–

क- अतर्रा

ख- नरैनी

ग- बाँदा

घ- बबेरू

प्रश्न 16. रनगढ़ दुर्ग का निकटतम रेलवे स्टेशन है–

क- बदौसा

ख- अतर्रा

ग- बाँदा

घ- खुरहण्ड

प्रश्न 17. महाराज छत्रसाल ने राज्य का विभाजन कर रनगढ़ दुर्ग का क्षेत्र किसे मिला–

क- जगतराज

ख- हृदय शाह

ग- सभा सिंह

घ- रानी विजई कुँवारी

प्रश्न 18. पन्ना नरेश के द्वारा विभाजन के बाद रनगढ़ क्षेत्र किस राज्य के अंतर्गत आया–

क- छतरपुर

ख- अजयगढ़

ग- बीजापुर

घ- जैतपुर-चरखारी

प्रश्न 19. बुंदेल वंश किसके उपासक थे?

क- विष्णु

ख- हनुमान

ग- शिव

घ- गणेश

प्रश्न 20. राजा की बैठिका में कुल कितने दरवाजे थे?

क- 11

ख- 9

ग- 12

घ- 10

प्रश्न 21. रनगढ़ दुर्ग के समीप प्राप्त अष्टधातु की तोप किसके अधीन है–

क- मध्य प्रदेश सरकार

ख- उत्तर प्रदेश सरकार

ग- (क) एवं (ख) दोनों

घ इनमें से कोई नहीं

परिशिष्ट—VII

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली–अंतिम प्रारूप

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालय विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक

डॉ0 राजीव अग्रवाल

शोधार्थी

तेज प्रताप

निम्न सूचनाएं भरिए :

नाम………………………………………………………………………… …………

पिता का नाम……………………………………………………………………...................

लिंग………………………………………………………………………....................

कक्षा………………………………………………………………………………

विद्यालय का नाम…………………………………………………………….. …………

दिनांक……………………………………………………………………………..

WhatsApp…………………………………………………………………………

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य है। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

प्रश्न 1. नीचे दिए गए चित्रों में कौन सा रनगढ़ दुर्ग है–

क ख

ग घ

प्रश्न 2. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण किसके शासन काल में पूर्ण हुआ–

क- बीर सिंह जुदेव | ख- रुद्र प्रताप सिंह
ग- कीर्ति सिंह | घ- परिमादित्य देव

प्रश्न 3. रनगढ़ दुर्ग के निर्माण का श्रेय किस शासन वंश को है–

क- चौहान | ख- चन्देल
ग- बुन्देल | घ- मराठा

प्रश्न 4. रनगढ़ दुर्ग अन्य किस नाम के लिए प्रसिद्ध है–

क- गिरि दुर्ग | ख- जलीय दुर्ग
ग- मही दुर्ग | घ- धनु दुर्ग

प्रश्न 5. रनगढ़ दुर्ग की निर्माण शैली किस दुर्ग से मिलती है–

क- भूरागढ़ दुर्ग | ख-झाँसी दुर्ग
ग- कालिंजर दुर्ग | घ- मड़फा दुर्ग

प्रश्न 6. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण कब आरम्भ हुआ–

क- 1745 ख- 1537

ग- 1805 घ- 1901

प्रश्न 7. रनगढ़ दुर्ग अग्रेजों के अधिकार क्षेत्र में कब आया–

क- 1812 ख- 1854

ग- 1857 घ- 1757

प्रश्न 8. रनगढ़ दुर्ग किस राज्य में स्थित है–

क- मध्य प्रदेश ख- उत्तर प्रदेश

ग- (क) एवं (ख) दोनों घ इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 9. रनगढ़ दुर्ग में मेला कब लगता है–

क- मकर संक्रान्ति ख-महाशिवरात्रि

ग- (क) एवं (ख) दोनों घ- इनमें से कोई नही

प्रश्न 10. रनगढ़ दुर्ग किस नदी में स्थित है?

क- मन्दाकिनी ख- केन

ग- यमुना घ- बाघिन

प्रश्न 11. रनगढ़ दुर्ग का सबसे निकटतम ग्राम है–

क- पनगरा ख- गौर-शिवपुर

ग- रिसौरा घ- बाड़ादेव

प्रश्न 12. रनगढ़ दुर्ग में कुल कितने प्रवेश की संख्या

क- 1 ख- 2

ग- 3 घ- 4

प्रश्न 13. उत्तरी द्वार से प्रवेश हेतु रनगढ़ दुर्ग में कितनी सीडियां हैं–

क- लगभग 50 ख- लगभग 500

ग- लगभग 250 घ- लगभग 100

प्रश्न 14. रनगढ़ दुर्ग में किसकी मूर्ति स्थापित है–

क- विष्णु	ख- हनुमान
ग- शिव	घ- गणेश

प्रश्न .15. रनगढ़ दुर्ग से निकटतम तहसील मुख्यालय है–

क- अतर्रा	ख- नरैनी
ग- बाँदा	घ- बबेरू

प्रश्न 16. रनगढ़ दुर्ग का निकटतम रेलवे स्टेशन है–

क- बदौसा	ख- अतर्रा
ग- बाँदा	घ- खुरहण्ड

परिशिष्ट–VIII

उत्तर माला

प्रश्न 1. नीचे दिए गए चित्रों में कौन सा रनगढ़ दुर्ग है–

प्रश्न 2. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण किसके शासन काल में पूर्ण हुआ–	(कीर्ति सिंह)
प्रश्न 3. रनगढ़ दुर्ग के निर्माण का श्रेय किस शासन वंश को है–	(बुन्देल)
प्रश्न 4. रनगढ़ दुर्ग अन्य किस नाम के लिए प्रसिद्ध है–	(जलीय दुर्ग)
प्रश्न 5. रनगढ़ दुर्ग की निर्माण शैली किस दुर्ग से मिलती है–	(झाँसी दुर्ग)
प्रश्न 6. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण कब आरम्भ हुआ–	(1745)
प्रश्न 7. रनगढ़ दुर्ग अग्रेजों के अधिकार क्षेत्र में कब आया–	(1812)
प्रश्न 8. रनगढ़ दुर्ग किस राज्य में स्थित है–	((क) एवं (ख) दोनों)
प्रश्न 9. रनगढ़ दुर्ग में मेला कब लगता है–	((क) एवं (ख) दोनों)
प्रश्न 10. प्रश्न 10. रनगढ़ दुर्ग किस नदी में स्थित है?	(केन)
प्रश्न 11. रनगढ़ दुर्ग का सबसे निकटतम ग्राम है–	(गौर-शिवपुर)
प्रश्न 12. रनगढ़ दुर्ग में कुल कितने प्रवेश की संख्या–	(2)
प्रश्न 13. उत्तरी द्वार से प्रवेश हेतु रनगढ़ दुर्ग में कितनी सीडियां हैं–	(लगभग 50)
प्रश्न 14. रनगढ़ दुर्ग में किसकी मूर्ति स्थापित है–	(शिव)
प्रश्न .15. रनगढ़ दुर्ग से निकटतम तहसील मुख्यालय है–	(नरैनी)
प्रश्न 16. रनगढ़ दुर्ग का निकटतम रेलवे स्टेशन है–	(अतर्रा)

परिशिष्ट IX

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन।

- प्रस्तुत प्रश्नावली रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन से सम्बन्धित है। रनगढ़ दुर्ग के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित प्रश्न/ कथन दिए गए हैं। दिए गए विकल्पों में से सही (✓) विकल्प का चुनाव कीजिए।
- **आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोधकार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।**

* Indicates required question

1. Email *

2. नाम – *

3. लिंग – *

Mark only one oval.

◯ छात्र

◯ छात्रा

4. पिता का नाम – *

5. Contact number / WhatsApp number *

6. कक्षा– *

7. आयु– *

8. विद्यालय (कॉलेज) का नाम– *

9. 1. नीचे दिए गए चित्रों में कौन सा रनगढ़ दुर्ग है– *

Mark only one oval.

A

B

C

D

10. 2. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण किसके शासन काल में पूर्ण हुआ– *

Mark only one oval.

- बीर सिंह जुदेव
- रुद्र प्रताप सिंह
- कीर्ति सिंह
- परिमादित्य देव

11. 3. रनगढ़ दुर्ग के निर्माण का श्रेय किस शासन वंश को है – *

Mark only one oval.

- चौहान
- चन्देल
- बुन्देल
- मराठा

12. 4. रनगढ़ दुर्ग अन्य किस नाम के लिए प्रसिद्ध है– *

Mark only one oval.

- गिरि दुर्ग
- जलीय दुर्ग
- मही दुर्ग
- धनु दुर्ग

13. 5. रनगढ़ दुर्ग की निर्माण शैली किस दुर्ग से मिलती है– *

Mark only one oval.

- भूरागढ़ दुर्ग
- झाँसी दुर्ग
- कालिंजर दुर्ग
- मड़फा दुर्ग

14. 6. रनगढ़ दुर्ग का निर्माण कब आरम्भ हुआ– *

Mark only one oval.

- 1745
- 1537
- 1805
- 1901

15. 7. रनगढ़ दुर्ग अग्रेजों के अधिकार क्षेत्र में कब आया– *

Mark only one oval.

- 1812
- 1854
- 1858
- 1757

16. 8. रनगढ़ दुर्ग किस राज्य में स्थित है– *

Mark only one oval.

- (I) मध्य प्रदेश
- (II) उत्तर प्रदेश
- (III) (I) एवं (II) दोनों
- (IV) इनमें से कोई नहीं

17. 9. रनगढ़ दुर्ग में मेला कब लगता है – *

Mark only one oval.

- (I) मकर संक्रान्ति
- (II) महाशिवरात्रि
- (III) (I) एवं (II) दोनों
- (IV) इनमें से कोई नहीं

18. 10. रनगढ़ दुर्ग किस नदी में स्थित है? *

Mark only one oval.

- मन्दाकिनी
- केन
- यमुना
- बाघिन

19. 11. रनगढ़ दुर्ग का सबसे निकटतम ग्राम है– *

Mark only one oval.

- पनगरा
- गौर- शिवपुर
- रिसौरा
- बाड़ादेव

20. 12. रनगढ़ दुर्ग में कुल कितने प्रवेश की संख्या *

Mark only one oval.

- 1
- 2
- 3
- 4

21. 13. उत्तरी द्वार से प्रवेश हेतु रनगढ़ दुर्ग में कितनी सीडियां हैं – *

Mark only one oval.

- लगभग 50
- लगभग 500
- लगभग 100
- लगभग 250

22. 14. रनगढ़ दुर्ग में किसकी मूर्ति स्थापित है– *

Mark only one oval.

- विष्णु
- हनुमान
- शिव
- गणेश

23. 15. रनगढ़ दुर्ग से निकटतम तहसील मुख्यालय है – *

Mark only one oval.

- अतर्रा
- नरैनी
- बाँदा
- बबेरू

24. 16. रनगढ़ दुर्ग का निकटतम रेलवे स्टेशन है– *

Mark only one oval.

- बदौसा
- अतर्रा
- बाँदा
- खुरहण्ड

परिशिष्ट–X ई-ब्रोशर

रनगढ दुर्ग

रनगढदुर्ग भी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। यद्यपि किसी भी ऐतिहासिक ग्रंथ में इस दुर्ग के संदर्भ में यह उल्लेख प्राप्त नहीं होता है कि इस दुर्ग का निर्माता कौन था तथा किस शासन काल में इसका निर्माण हुआ? रनगढ़ का किला मऊ, रिसौरा गाँव की तहसील से काफी दूर चलकर केन नदी के मध्य एक ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। इसके चारों ओर केन नदी की धाराएं प्रवाहित होती है। इसलिए दुर्ग की स्थिति एक टापू जैसी है। यह दुर्ग उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश की सीमा भी तय करता है। इस दुर्ग में पहुँचने के लिए कोई निश्चित मार्ग नहीं है। यह बिल्कुल निर्जन स्थान में है। यहाँ चारो ओर घनघोर जंगल है। इस जंगल को पार करने के बाद केन नदी के इस पार उत्तर प्रदेश के गाँव तथा उस पार मध्य प्रदेश के गाँव है। किले का जो स्वरूप दूर से दिखाई देता है, वह अत्यन्त सुन्दर है तथा पर्यावरण की दृष्टि से अत्यन्त मोहक भी है।

रनगढ़ दुर्ग नामक स्थान उत्तर प्रदेश के बाँदा मुख्यालय से लगभग 35 किलोमीटर पूर्व दिशा में स्थित है। यह नरैनी से लगभग 9 किलोमीटर तथा अतर्रा तहसील से 26 किलोमीटर दक्षिण में अवस्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए जनपद बाँदा के नरैनी क़स्बा से रिसौरा होकर जाना पड़ता है।

3.3 ऐतिहासिक कथानक

18वीं सदी में जैतपुर (महोबा) के राजा जगराज सिंह बुन्देला ने इसके निर्माण की नींव 1745 में रखी थी, लेकिन 1750 में उनकी मृत्यु के बाद उनके बेटे कीर्ति सिंह बुन्देला ने 1761 में इसका निर्माण पूरा करवाया था। यह दुर्ग **स्योदा रिसौरा रियासत** की महज एक सैनिक सुरक्षा चौकी के रूप में था।

चरखारी रियासत से रानी नाराज होकर रिसौरा रियासत आ गई थीं, और इस किले में काफी दिन गुजारा था, तभी किले का नाम 'रानीगढ़' हुआ और अब रानीगढ़ का अपभ्रंश में रनगढ़ हो गया है।

पन्ना (मध्य प्रदेश) के नरेश महाराजा छत्रसाल के दो बेटे द्वयसाल और जगराज सिंह बुन्देलाथे। बटवारे में द्वयसाल को पन्ना स्टेट और जगराज सिंह को जैतपुर-चरखारी (महोबा) स्टेट मिला था। पहले स्योढ़ा गाँव जैतपुर- चरखारी स्टेट का एक जिला था और अब बाँदा जिले का महज एक गाँव है।

3.4 जलीय दुर्ग

रनगढ़ का किला बाँदा जनपद की नरैनी तहसील से मऊ रिसौरा गाँव की सीमा से आगे चलकर केन नदी के मध्य एक ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। केन नदी की जलधाराओं के बीच एक पहाड़ी पर रनगढ़ दुर्ग बना हुआ है जिसे जलीय दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है। नदी के मध्य धारा में अवस्थित होने के कारण यह वर्तमान में उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश की सीमओं को साझा करता है, ये दुर्ग जलीय मार्ग से आने वाले वाह्य दुश्मनों के आक्रमण से बचने के लिए निर्मित करवाई गयी थी।

केन नदी की जलधाराओं के बीच एक पहाड़ी पर रनगढ़ दुर्ग बना हुआ है, जो देखने में बिल्कुल झाँसी दुर्ग जैसा दिखायी पड़ता है। नदी में कम जल होने के कारण चारों तरफ बालू ही बालू पड़ी दिखाई पड़ती है। यह बिल्कुल निर्जन स्थान में करीब 4

एकड़ क्षेत्रफल में काफी ऊँचाई पर चट्टानों में बना हुआ है। जंगल को पार करने के बाद ही केननदी मिलती है। दुर्ग का जो स्वरूप दूर से दिखाई देता है, वह अत्यन्त सुन्दर है तथा पर्यावरण की दृष्टि सेअत्यन्त मोहक भी है।

3.5 प्रवेश द्वार

दुर्ग में दो प्रवेश द्वार हैं, जिनसे दुर्ग के अन्दर प्रवेश किया जाता है, इसके अतिरिक्त शत्रुओं से सुरक्षा के लिए चार गुप्त दरवाजे भी हैं।

3.5.1 प्रथम द्वार

दुर्ग के अन्दर जाने के लिए उत्तर दिशा में प्रथम द्वार है। प्रथम द्वार पर 46 सीढ़ियाँ हैं, जिन्हें पार करके दुर्ग के अन्दर प्रवेश किया जाता है। दुर्ग के प्रमुख द्वार पर कोई दरवाजा या फाटक नहीं है।

3.5.2 द्वितीय द्वार

दुर्ग के पश्चिम-उत्तर दिशा में द्वितीय द्वार है, इसमें भी दरवाज़ा नहीं लगा है। द्वितीय द्वार से नीचे उतर कर गौरइया दाई मन्दिर जाया जाता है। जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि लगभग 1812 में जब यह दुर्ग अंग्रेजों के अधिकार में आया, उस समय अंग्रेजों ने दुर्ग के फाटक निकालकर उन्हें गिरवां और पनगरा के थाने में लगवा दिया।

3.6 गुप्त द्वार

दुर्ग के अन्दर चार गुप्त द्वार भी हैं, जब कोई सबल आक्रमणकारी आक्रमण करता था और दुर्ग की सेनाएँ कमजोर पड़ जाती थीं, उस समय सैनिक गुप्त द्वार से भागकर अपने प्राणों की रक्षा करते थे। लेकिन अब इन गुप्त द्वारों को बन्द कर दिया गया है।

3.7 रनगढ़ दुर्ग के भग्नावशेष

यह दुर्ग एक पहाड़ी पर निर्मित है, तथा चारों तरफ प्राचीरों से घिरा हुआ है, तथा पहाड़ी के नीचे चारों तरफ केन नदी प्रवाहित होती है। इस दुर्ग में पहुँचने के लिए दो मुख्य द्वार हैं और दुश्मन से सुरक्षा के लिए चार गुप्त दरवाजे भी हैं।

3.8 भगवान शिव की भव्य मूर्ति

दुर्ग के अन्दर थोड़ी ही दूर पर भगवान शिव जी की एक भव्य मूर्ति है, जो देखने में बहुत ही सुन्दर दिखती है, जिसका मुख पूर्व-दक्षिण दिशा की ओर है। मूर्ति का निर्माण दुर्ग के ठीक बीच में 2018-20 के दौरान किया गया। इसका निर्माण स्थानीय निवासियों के सहयोग से हुआ है।

मूर्ति का शुभारम्भ 2020 मकर संक्रांति (14 जनवरी)को कन्या भोज के साथ किया गया था। रनगढ़ किला से अभद्रता को दूर करने के लिए गाँव के दो व्यक्तियों द्वारा इस शिव मूर्ति को बनवाया गया, जिसकी कुल लागत लगभग 5 लाख बताई गई है, जिसे गाँव के सहयोग के द्वारा एकात्रित किया गया था।

शिव मूर्ति का निर्माण नरैनी के मूर्तिकार विनोद कुमार दीक्षित द्वारा किया गया, जिन्होंने एक रुपए

भी नहीं लिया। उन्होंने, शिव मूर्ति को बनाने के लिए गाँवके किसी भी घर में भोजन मात्र करके,इसका का निर्माण किया।इस मूर्ति को बनाने में लगभग 3 साल का समय लगा था। मूर्ति का शिलान्यास 16 दिसंबर,2018 को किया गया। इस मूर्ति को बनाने में विनोद विश्वकर्मा, राघवेंद्र, मनोज विश्वकर्मा, राजेंद्र तथा बाला प्रसाद विश्वकर्मा ने सहायता की। शिव जी की मूर्ति के ठीक सामने एक प्राचीन शिवलिंग है।

3.9 बाढ़ में भी सुरक्षित दुर्ग

यह दुर्ग केन नदी के बीच पत्थरों में इस तरह से बनाया गया है कि बाढ़ में भी जब नदी प्रवाहित होती है तो दुर्ग के चारों ओर जल ही जल होता है। दुर्ग के आसपास घने जंगल है और इसका निर्माण कुछ इस तरह से किया गया है, कि बाढ़ में भी इस दुर्ग का कोई नुकसान नहीं होता है। वर्ष 1992 और 2005 में प्रचंड बाढ़ आई थी, जिसमे आसपास के गाँव भी जलमग्न हो गए थे लेकिन रनगढ़ दुर्ग इस बाढ़ में भी सुरक्षित बना रहा।

3.10 अष्टधातु की तोप

केन नदी की जलधारा में ही कुछ वर्षों पहले अष्टधातु की एक भारी-भरकम तोप बरामद हुई थी। जिस पर यूपी और एमपी सरकार ने अपना-अपना दावा किया था। इसको लेकर कई महीने विवाद चलता रहा, हालांकि बाद में मध्य-प्रदेश शासन के पक्ष में निर्णय गया और तब छतरपुर स्थित गौरिहार थाने की पुलिस ने तोप को अपने अधिकार में लेकर खजुराहो में रखवा दिया, इसी तरह यहाँ एक अष्टधातु की मूर्ति भी प्राप्त हुई, इस पर भी मध्य प्रदेश सरकार ने दावा किया, लेकिन दुर्ग के विकास के लिए मध्य प्रदेश सरकार के द्वारा किसी तरह की पहल नहीं की गई।

3.11 सुरक्षा चौकी

जलीय दुर्ग के समीप एक सुरक्षा चौकी थी, इस सुरक्षा चौकी से सैनिक दूर से आने वाले शत्रुओं को देख लिया करते थे और किलेदार को इसकी सूचना दे देते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन युग में इस क्षेत्र में नावों द्वारा व्यापार होता था। नाव द्वारा ही कर वसूलने का कार्य भी सुरक्षा चौकी के लोग किया करते थे।

3.12 बारदरी अथवा राजा की बैठक

रनगढ़ दुर्ग के समीप एक ऐसा स्थल है जिसमें 12 दरवाजे हैं, ऐसा मालूम होता है कि रनगढ़ दुर्ग का शासक इस महत्वपूर्ण स्थल पर समस्याओं को हल करने के लिए दुर्ग के अन्य अधिकारियों के साथ विचार विमर्श किया करता था। यहाँ समय-समय पर दरबार लगा करता था।

3.13 रंग महल

रनगढ़ दुर्ग के ऊपर रंग महल के अवशेष मिलते हैं। यह रंग महल मध्यकाल का प्रतीत होता है, इस महल में कई आवासीय कक्ष, स्नान, रसोई, श्रंगार, शयन कक्षऔर दीप जलाने के लिए अनेक आले बने हुए हैं।

3.14 कूप

इस क्षेत्र में गोलाकृति कूप है जो जलापूर्ति का प्रमुख साधन था।दुर्ग के अन्दर दक्षिण-पश्चिम दिशा में एक विशाल कूप है, जिसमें बहुत नीचे जल भरा हुआ है, जिसका कोई उपयोग नहीं होता है। कूप में कूड़ा-कचरा भर गया है, जिससे कूप का जल पीने योग्य नहीं है।

3.15 गौरइया दाई मन्दिर

द्वितीय द्वार से नीचे उतर कर, केन नदी को पार करके 3 किलोमीटर आगे जाने पर एकान्त में गौरइया दाई मन्दिर अवस्थित है। दुर्ग में ही एक विशालकाय देवी मन्दिर है। वास्तुशिल्प की दृष्टि से यह मन्दिर अति प्राचीन मालूमहोता है, इस मन्दिर की मूर्ति को चोरों ने गायब कर दी है। यह भी सम्भावना है, कि जब इस क्षेत्र में सुल्तानों एवं मुगलों का शासन स्थापित हुआ होगा, तब मन्दिर की मूर्ति इन्ही मुसलशासकों द्वारा खण्डित कर दी गई होगी। इस दुर्ग में सन् 1727 में मुगल सूबेदार मुहम्मद बगस ने अधिकार कर लिया था, सम्भव है कि यह मूर्ति उसी के द्वारा गायब कर दी गई होगी।

मन्दिर के आस-पास कोई भी घर या गाँव नहीं है। माता सभी की इच्छाओं को पूरा करती हैं। इससे आस- पास के निवासी माता जी पर श्रद्धा रखते हैं। माता जी की मूर्ति छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित है। पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह मूर्ति पहले दुर्ग में स्थापित थी, बहुत पहले इस मन्दिर की मूर्ति को चोरों ने गायब कर दिया।

3.2 अवस्थिति

अक्षांश– 25°21'58" **देशान्तर– 80°41'25"**

सुझाव

- इस स्थान को बाँदा जनपद के पर्यटन स्थलों की सूची में शामिल किया जाना चाहिए।
- इस स्थान तक पहुँचने के लिए समुचित यातायात के साधनों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- दुर्ग के अन्दर पेयजल की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- दुर्ग में विद्युत (Light) की स्थायी व्यवस्था की जानी चाहिए।
- दुर्ग के दोनों द्वार में फाटक लगाये जाने चाहिए।
- दुर्ग स्थित मन्दिर में दान पेटिका स्थापित की जानी चाहिए।
- दुर्ग में लेजर शो तथा ध्वनि एवं प्रकाश (Light and sound program) कार्यक्रम के आयोजन की योजना बनायी जानी चाहिए।
- दुर्ग के गुप्त द्वारों को पुनः खोला जाना चाहिए।
- दुर्ग के अन्दर स्थित कूप की सफाई करा कर पेयजल के रूप प्रयुक्त किया जाना चाहिए।
- नदी के जलस्तर के बढ़ने पर इस स्थान तक पहुँचने के लिए नाव, स्टीमर तथा ट्रॉली आदि की व्यवस्था होनी चाहिए।
- दुर्ग तक पहुँचने के लिए रैम्प तथा विकलांगों के लिए व्हीलचेयर की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- इस स्थान को नरैनी तहसील मुख्यालय के पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।
- नरैनी बस स्टैण्ड एवं अतर्रा रेलवे स्टेशन पर इस स्थान से सम्बन्धित बोर्ड लगाया जाना चाहिए।

- रनगढ़ दुर्ग में जिपलाइन शुरू की जानी चाहिए।
- इस स्थान का सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।
- इस स्थान का संकेतक बोर्ड MDR 11B बाँदा मार्ग पर स्थित पनगरा मोड़ के पास लगाया जाना चाहिए।
- दुर्ग के विकास हेतु एक समिति बनायी जानी चाहिए।
- दुर्ग का पुरातत्व विभाग के संरक्षण में जीर्णोद्धार किया जाना चाहिए।
- रनगढ़ स्थित केन नदी के तट पर एडवेंचर वाटर स्पोर्ट्स की शुरुआत करनी चाहिए।
- रनगढ़ दुर्ग को प्रेरणादायी समुदायिक गतिविधियों के विकास के केंद्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

रनगढ़ दुर्ग के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों मैं जागरूकता का अध्ययन